वर्ष-10, अंक-8, मई-2025

मूल्य: ₹20

वेलकम इंडिया

RNI No. UPHIN/2015/61611

राष्ट्रीय मासिक हिन्दी पत्रिका

ऑपरेशन सिंदूर

छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं

खुशहाल किसान यूपी की पहचान

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत 2.86 करोड़+ किसानों को ₹80,000+ करोड़ हस्तांतरित

- गन्ना किसानों को रिकॉर्ड ₹2.80 लाख करोड़+ गन्ना मूल्य का भुगतान
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 58.07 लाख किसानों को ₹47,535.09 करोड़ की क्षतिपूर्ति
- कृषि विकास दर वर्ष 2016-17 में 8.6 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 13.7 प्रतिशत हुई
- पीएम कुसुम योजना में किसानों को 76,189 से अधिक सोलर पम्पों का आवंटन
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना लागू
- पीएम किसान मानधन योजना में 2.52 लाख किसानों को लाभार्थी कार्ड
- 49 जनपदों के 85,710 हेक्टेयर भूमि में प्राकृतिक खेती
- मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना में 63 हजार से अधिक किसान लाभान्वित
- वर्ष 2016-2017 में खाद्यान्न उत्पादन लगभग 5.57 करोड़ मीट्रिक टन था, जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर लगभग 6.69 करोड़ मीट्रिक टन हो गया
- कृषि विकास दर वर्ष 2016-17 में 8.6 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 13.7 प्रतिशत हुई
- रबी विपणन वर्ष 2017-18 से 2024-25 तक 233.99 लाख मी. टन गेहूं की खरीद कर ₹43,424 करोड़ से अधिक का किसानों को भुगतान
- खरीफ विपणन वर्ष 2017-18 से 2023-24 तक 456.86 लाख मीट्रिक टन धान क्रय कर ₹88,746 करोड़ का भुगतान

काम असरदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

वर्ष- 10 अंक- 8

मई -2025

सम्पादक ललित कुमार शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
अनादि शुक्ल, प्रशांत शर्मा
संजय बंसल, संजीव शर्मा

संरक्षक
स्व. वेद प्रकाश शर्मा
अभिषेक गर्ग, एनके शर्मा, प्रवीण चौधरी
अमिताभ शुक्ल, अरुण शर्मा,
प्रभाकर त्यागी, डॉ. निमित त्यागी

वरिष्ठ सलाहकार
विजय अरोडा, राहुल अग्रवाल,
सचिन तोमर, देवनाथ कुमार

सम्पादकीय सहयोगी
डॉ. बी. जमां

बिजनेस हेड
रजनीकांत शर्मा/विकास पंडित

कानूनी सलाहकार
कीर्तिकर सुकुल (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
वंदना शर्मा भंडारी (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
अनिल आनंद, नीरज सत्संगी

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक ललित कुमार द्वारा अवनीर एन्टरप्राईजेज, ए-7/105, इंडस्ट्रीयल एरिया साउथ साईड जी.टी. रोड गाजियाबाद से मुद्रित कराकर ग्राउंड फ्लोर 150, दुर्गा टॉवर, आरडीसी राजनगर गाजियाबाद से प्रकाशित किया।
सम्पादक - ललित कुमार शर्मा
RNI No. UPHIN/2015/61611
ई-मेल: winews.in@gmail.com
वेबसाइट: www.winews.in
सम्पर्क सूत्र: 9891116568

नोट: पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों आदि से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा किसी भी कानूनी वाद-विवाद के लिए गाजियाबाद न्यायालय मान्य होगा।

अन्दर के पेजों में...

ऐतिहासिक निर्णय है जातिगत जनगणना — पेज 03

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को निभानी होगी जिम्मेदार मीडिया की भूमिका — पेज 08

युद्ध काल में लक्ष्मण रेखा लांघता विपक्ष — पेज 10

सजा से रुकेंगे जहरीली शराब जैसे हादसे — पेज 14

श्रेया ने अपने मुंबई कॉन्सर्ट में सैनिकों को किया नमन — पेज 52

विराट और रोहित के संन्यास से क्रिकेट का एक युग समाप्त — पेज 54

विज्ञापन, समाचार के लिए वेलकम इंडिया दैनिक एवं मासिक पत्रिका के जोनल सम्पादक कृष्णराज अरुण से मोबाइल नम्बर 9802414328 /9813221734 पर सम्पर्क करें।

पाकिस्तान से तनाव के बीच बीएसएफ जवान की वापसी

ललित कुमार
सम्पादक

भारत के सीमा सुरक्षा बल यानी बीएसएफ के एक जवान को पाकिस्तान ने लौटा दिया है और स्वाभाविक ही इसे भारत की एक और कूटनीतिक कामयाबी माना जा रहा है। गौरतलब है कि भारत के बीएसएफ के जवान पूर्णम साव तेईस अप्रैल को गलती से पाकिस्तानी सीमा में दाखिल हो गए थे और वहां उन्हें पकड़ लिया गया था। सीमा पार किन्हीं हालात में अगर अन्य देश के जवान को पकड़ लिया जाता है तो उसके जीवन तक को लेकर आशंकाएं पैदा हो जाती हैं।

यही वजह है कि पूर्णम साव की वापसी को लेकर उनके परिवार सहित देश के लोगों की चिंताएं गहरा रही थीं। इस बीच भारत और पाकिस्तान के बीच किस स्तर का टकराव हुआ, यह दुनिया ने देखा। लेकिन अब बुधवार को जब पूर्णम साव की पाकिस्तान से रिहाई की खबर आई, तो निश्चित तौर पर यह उनके परिवार वालों के साथ-साथ समूचे देश के लोगों के लिए राहत की बात थी। दोनों देशों के डीजीएमओ स्तर पर हुई बातचीत के नतीजे में बीस दिनों के बाद पूर्णम शा को छोड़ा गया।

दरअसल, जिन परिस्थितियों में बीएसएफ के जवान गलती से पाकिस्तानी सीमा में दाखिल हो गए थे, वे इतनी ज्यादा संवेदनशील थीं कि उनके कारण दोनों देशों के बीच संघर्ष की नौबत आई। पहलगाम में आतंकी हमले में छब्बीस लोगों के मारे जाने के बाद भारत के पास एक तरह से जवाबी कार्रवाई करना अंतिम विकल्प था। इस टकराव की तीव्रता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इसे दोनों देशों के बीच पूर्ण संघर्ष के तौर पर भी देखा गया।

ऐसे में अगर बीएसएफ जवान की सुरक्षा और जान को लेकर भारत में चिंता गहरा रही थी, तो यह लाजिमी था। यों भी पाकिस्तान के अतीत और उसकी प्रकृति अक्सर उसके विवेक आधारित फैसले नहीं लेने के ही सूचक रहे हैं। हालांकि इस बीच उम्मीद जरूर की जा रही थी कि तमाम विपरीत हालात के बावजूद भारत के लगातार कूटनीतिक प्रयासों से जवान की वापसी सुनिश्चित हो सकेगी। मगर जब दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम की घोषणा हुई तब यह उम्मीद और मजबूत हुई कि अब शायद माहौल शांत होने के बाद इस मसले पर कूटनीतिक बातचीत आगे बढ़ेगी।

भारत और पाकिस्तान के बीच किसी गलती से जवानों के सीमा पार कर जाने की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अगर युद्ध या तनाव की स्थिति न हो तो रिहाई में ज्यादा मुश्किल नहीं होती है। मगर पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर जिस तरह का हमला किया था, उसे एक तरह से सीधा संघर्ष मान लिया गया था। पाकिस्तान पहले ही अवांछित गतिविधियों के अंजाम देने से लेकर आतंकवादियों को शह और समर्थन देकर भारत को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता रहा है।

ऐसे में वहां पकड़ लिए गए बीएसएफ जवान के प्रति उसके व्यवहार या रिहाई को लेकर आशंका बनी हुई थी, क्योंकि इसके लिए शुरू होने वाली प्रक्रिया काफी संवेदनशील और जटिल होती है। अंतरराष्ट्रीय कानून और सैन्य संधियों के तहत अगर कोई जवान गलती से सीमा पार कर जाता है तो उसके खिलाफ ज्यादा गंभीर कार्रवाई नहीं की जाती। हालांकि यह दोनों देशों के बीच संवाद और समझौते पर निर्भर करता है। इस लिहाज से देखें तो बीते कुछ दिनों के दौरान तेजी से बदलते घटनाक्रम में जवान की रिहाई के लिए भारत ने कूटनीतिक प्रयास तेज कर दिए थे और आखिर इसमें कामयाबी मिली।

भारत और पाकिस्तान के बीच किसी गलती से जवानों के सीमा पार कर जाने की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अगर युद्ध या तनाव की स्थिति न हो तो रिहाई में ज्यादा मुश्किल नहीं होती है। मगर पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर जिस तरह का हमला किया था, उसे एक तरह से सीधा संघर्ष मान लिया गया था।

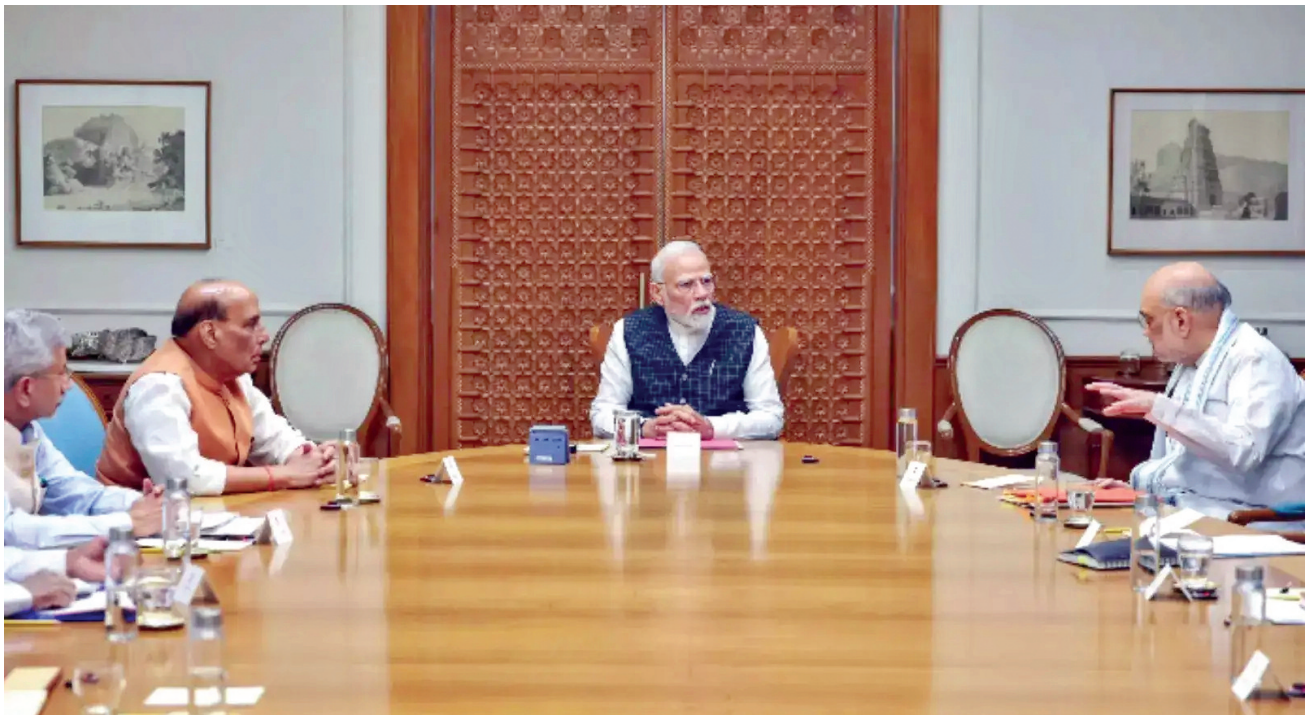

ऐतिहासिक निर्णय है जातिगत जनगणना

पत्रकार वार्ता में जातिगत जनगणना के निर्णय की जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि जातिगत जनगणना कराना समता, समरसता, सुशासन और सामाजिक न्याय के एक नये युग का आरंभ है। अब जातिगत जनगणना का मुद्दा पूरी तरह से बीजेपी के पाले में है।

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा धर्म पूछकर किये गये हिन्दू नरसंहार के बाद जनमानस में उपजे आक्रोष और पाकिस्तान पर कार्यवाही की प्रतीक्षा कर रहा आम जनमानस तथा राजनैतिक दल उस समय हैरान रह गए जब केंद्र सरकार ने जातिगत जनगणना कराने का बड़ा निर्णय सुनाया। केंद्र सरकार का यह निर्णय आते ही देश का राजनैतिक विमर्श जातिगत जनगणना पर केन्द्रित हो गया। आमजन यद्यपि यह सोच रहा है कि इस समय जब हम आतंकवादियों के शवों की प्रतीक्षा कर रहे हैं उस समय प्रधानमंत्री जी को ये क्या सूझ पड़ी, किन्तु आश्वस्त है कि प्रधानमंत्री जी ने ऐसा किया है तो अवश्य इसके पीछे कुछ रणनीति होगी। उधर कांग्रेस के नेतृत्व में इंडी गठबंधन इसे अपनी विजय बताकर प्रसन्नता व्यक्त कर रहा है। कांग्रेस तो इतनी आतुर हो गई कि उसने सोशल मीडिया पर, 'सरकार उनकी, सिस्टम हमारा' कैप्शन के साथ राहुल का प्रचार आरम्भ कर दिया, फिर उनको याद दिलाना पड़ा कि ये फिल्म में एक खलनायिका द्वारा कहे गए शब्द हैं जो आतंकवादियों के साथ है।

पहलगाम आतंकी हमले के पश्चात प्रधानमंत्री जी ने कदा रुख अपनाया है और कहा है, हम आतंकवादियों तथा उनके पीछे छुपे लोगों का धरती के अंत तक पीछा करेंगे और सजा देंगे। प्रधानमंत्री ने इस बार पाकिस्तान को कल्पना से अधिक दंड मिलने की बात भी कही है। संभव है, इस प्रक्रिया में समय लगे और लम्बे समय तक युद्ध की परिस्थितियां बनी रहें। उस समय में विपक्ष अपना राजनैतिक अस्तित्व बचाए रखने के लिए क्याद्दक्या कर सकता है? स्वाभाविक रूप से जाती जनगणना जैसे मुद्दों को हवा देगा। भारत की अवश्यम्भावी विजय के उपरांत विपक्ष के पास

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सदन और सदन के बाहर हमेशा यही कहते थे कि जब भी हमें मौका मिलेगा हम संसद से जातिगत जनगणना का प्रस्ताव पारित करवाकर रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी जी ने उनके इस कथन का पटाक्षेप कर दिया है और यह भी स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस जातिगत जनगणना पर केवल राजनीति ही करती रही है।

क्या मुद्दा होगा? स्वाभाविक है वो पुनः अत्यंत आक्रामक रूप से जातिगत जनगणना के मुद्दे को उठाएगा यही कारण है कि केंद्र सरकार ने पहले ही जातिगत जनगणना का निर्णय लेकर उन वर्गों की चिंताओं को दूर कर दिया है जो मानती है कि जातिगत जनगणना उनके पक्ष में होगी और जिनको विश्वास में लेकर राहुल गाँधी तथा उनके मित्र देश और समाज का वातावरण बिगाड़ सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सामाजिक समरसता के विचारों को आत्मसात करते हुए तथा संघ को अपने निर्णय में साथ लेकर केंद्र सरकार ने यह निर्णय लिया है।

कांग्रेस ने जातिगत जनगणना को एक राजनतिक हथियार के रूप में उपयोग करके 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के मिशन 400 को पूरा होने से रोक दिया यद्यपि उसके बाद हरियाणा, दिल्ली और महाराष्ट्र में भाजपा के नए नारों 'एक रहेंगे नेक रहेंगे' और 'बटेंगे तो कटेंगे' ने परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल दीं। वर्तमान में भारत -पाक के मध्य चल रहे तनाव के समय सरकार द्वारा लिया गया जातिगत जनगणना का निर्णय विपक्ष के लिए तनाव पैदा करने है भले ही इस समय वो इस फैसले को अपनी जीत मानकर जश्न मना रहा है। वास्तविकता यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने सहयोगियों व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ मिलकर विरोधी दलों के खतरनाक राजनीतिक एजेंडे पर पॉलटिकिल सर्जिकल स्ट्राइक कर दी है और एक बड़ा मुद्दा उनके हाथों से छीन लिया है।

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सदन और सदन के बाहर हमेशा यही कहते थे कि जब भी हमें मौका मिलेगा हम संसद से जातिगत जनगणना का प्रस्ताव पारित करवाकर रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी जी ने उनके इस कथन का पटाक्षेप कर दिया है और यह भी स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस जातिगत जनगणना पर केवल राजनीति ही करती रही है।

वर्ष 1931 में जब देश में अंग्रेजों की सरकार थी तब जातिगत जनगणना हुई थी, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अधिकांश समय कांग्रेस की सरकारें ही रहीं किंतु कांग्रेस ने कभी भी जातिगत जनगणना करवाने का साहस नहीं किया अपितु पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह सरकार के गृहमंत्री पी चिदम्बरम तक ने सदन मे खड़े होकर 16 बिन्दुओं को आधार मानकर जातिगत जनगणना का कड़ा विरोध किया था और इसे देशहित के खिलाफ बताया था। यह एक कटु सत्य है किआज जिस कांग्रेस के नेता

राहुल गाँधी जातिगत जनगणना के नाम पर देश को अराजकता की आग में झोकने का प्रयास कर रहे हैं उस कांग्रेस ने जातिगत जनगणना का हमेशा विरोध किया और इसे लागू नहीं होने दिया।

पत्रकार वार्ता में जातिगत जनगणना के निर्णय की जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि जातिगत जनगणना कराना समता, समरसता, सुशासन और सामाजिक न्याय के एक नये युग का आरंभ है। अब जातिगत जनगणना का मुद्दा पूरी तरह से बीजेपी के पाले में है। भाजपा ने कभी भी जातिगत जनगणना का विरोध नहीं किया।

स्मरणीय है कि जब बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री नीतिश कुमार इंडी गठबंधन में शामिल थे और उन्होंने जातिगत जनगणना को लेकर सर्वदलीय बैठक बुलाई थी तब बीजेपी ने भी उस बैठक में भाग लिया था और जातिगत जनगणना का समर्थन किया था यद्यपि बीजेपी को विपक्ष के तौर तरीकों पर आपत्ति थी क्योंकि जनगणना मूलतः केंद सरकार का विषय है और इसमें राज्य सरकारों की कोई भूमिका नहीं है। अभी तक जिन राज्यों में यह जनगणना हुई है वह राजनीति से प्रेरित तथा सामाजिक तनाव बढ़ाने वाली रही है।

केंद्र सरकार की जातिगत जनगणना से पहली बार वास्तविक आंकड़े सामने आयेंगे। इस जनगणना के माध्यम से कई चीजे स्पष्ट हो सकेंगी जिसमें एक यह बड़ा मुददा भी है कि हर जाति के दंबग लोग ही आरक्षण का लाभ उठाते चले आ रहे हैं जबकि उन्हीं जातियों और समाज के अन्य लोग पिछड़ते ही चले जा रहे हैं, उन्हें आरक्षण व सरकार की अन्य सुविधाओं का प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिल पा रहा है अर्थात क्रीमिलेयर का भी वास्तविक वर्गीकरण हो सकेगा।

विपक्ष की जातिगत जनगणना केवल हिंदू समाज को जातियों में विभाजित करने की नीयत से थी जबकि मोदी सरकार अब संपूर्णता के आधार पर जातिगत जनगणना कराने जा रही हैं देश के इतिहास में पहली बार मुस्लिम समाज की जातियों की भी जनगणना होने जा रही है। इस जनगणना के माध्यम से धर्मांतरण करने वालों का आंकड़ा भी जुटाया जायेगा। धर्म परिवर्तन करने के कारण देश के कई हिस्सों की जनसंख्या और भौगोलिक संरचना में तेजी से बदलाव देखा गया है ऐसे में सरकार के यह भी पता करने का इरादा है कि किन धर्मों और जाति विशेष के लोगों में धर्मांतरण हुआ और किस हिस्से में इसका प्रभाव अधिक है। जातिगत जनगणना का परिणाम सामने आने के बाद सामाजिक आर्थिक स्थिति का सटीक डेटा मिल सकेगा। वंचित समूहों के लिए नीतियां बनाने में मदद मिल सकेगी संसाधनों और अवसरो का समान वितरण हो सकेगा तथा समाजिक असमानता को कम करने में मदद मिलने के साथ जाति व्यवस्था के कारण होने वाले भेदभाव की समस्या का भी समाधान हो सकेगा।

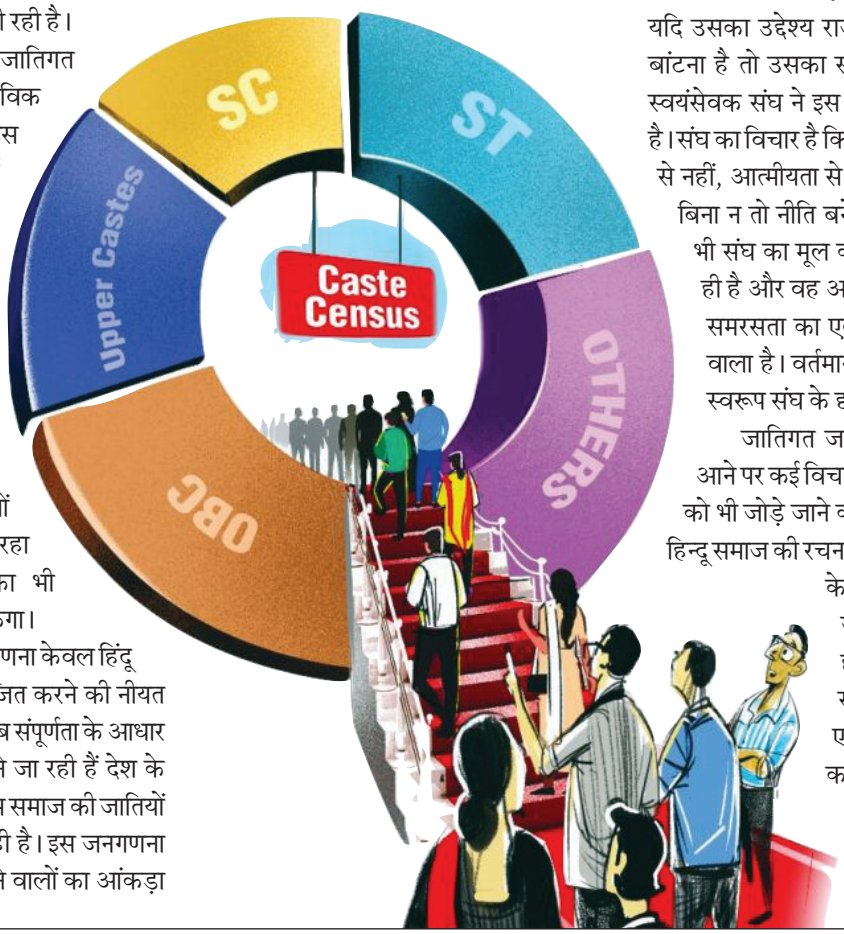

जातिगत जनगणना पर संघ का दृष्टिकोण भी स्पष्ट है कि यदि जातिगत जनगणना का उद्देश्य न्याय और कल्याण है तो समर्थन योग्य है और यदि उसका उद्देश्य राजनीति और समाज को बांटना है तो उसका सदैव विरोध है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस निर्णय का समर्थन किया है। संघ का विचार है कि 'जाति का अंत आांकड़ों से नहीं, आत्मीयता से होगा लेकिन आंकड़ो के बिना न तो नीति बनेगी न्याय मिलेगा।' वैसे भी संघ का मूल कार्य सामाजिक समरसता ही है और वह आगामी समय में सामाजिक समरसता का एक महा अभियान चलाने वाला है। वर्तमान जातिगत जनगणना का स्वरूप संघ के दृष्टिकोण से मेल खाता है।

जातिगत जनगणना की बात सामने आने पर कई विचारक इसमें सनातनी 'गोत्र' को भी जोड़े जाने की मांग कर रहे हैं क्योंकि हिन्दू समाज की रचना में गोत्र, किसी भी समाज के सनातन ऋषि परम्परा से जुडाव को स्थापित करता है। हिन्दू जीवन के सभी सोलह संस्कारों तथा पूजा एवं दान के संकल्प में गोत्र का नाम लिया जाना अनिवार्य होता है।

मोदी का पाक को स्पष्ट संदेश: अब केवल आतंकवाद और पीओके पर होगी बात

प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी साफ कर दिया है कि भविष्य में अगर पाकिस्तान से कभी बात होगी तो केवल आतंकवाद और पीओके पर ही बात होगी। उन्होंने कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि टेरर और टॉक, टेरर और ट्रेड एक साथ नहीं हो सकते।

चरण सिंह

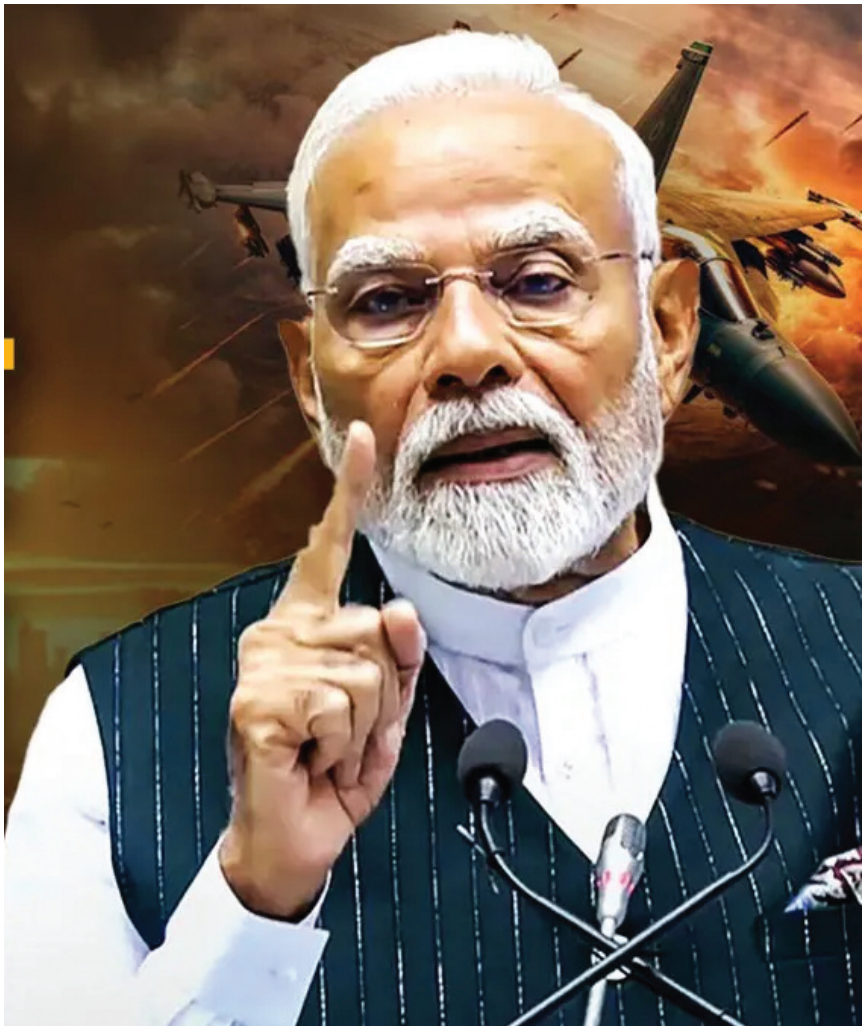

ऑपरेशन सिंदूर, पाकिस्तान के जवाबी हमले तथा युद्ध विराम के बाद राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कड़े एवं स्पष्ट शब्दों में न केवल पाकिस्तान को चेताया बल्कि उसको उसकी जमीन भी दिखायी। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ भारत की प्रखर एवं प्रभावी नीति को पूरी दुनिया के सामने बड़ी स्पष्टता और दृढ़ता के साथ रखा। उनका संबोधन न केवल भारत की भावना की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह हमारे देश के सैन्य, कूटनीतिक, नैतिक बल की प्रस्तुति एवं दो सौ अस्सी करोड़ तनी हुई मुट्ठियों की चेतावनी भी है। यह कोरा उद्बोधन नहीं, बल्कि एक जागृत राष्ट्र के साहस एवं हौसलों की उड़ान है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में नई लकीर खींची और नये पैमाने तय किये। पाकिस्तान की समझौते की गुहार को भी सुना, एक बड़े मकसद और व्यापक हित में भारत ने शांति की राह चुनी। पहले से ही युद्धों में उलझे विश्व के लिए भारत का यह कदम आशा एवं उम्मीद की बहुत बड़ी किरण है। लेकिन पाकिस्तान पर एक्शन सिर्फ स्थगित हुआ है, समाप्त नहीं। 22 मिनट का यह संबोधन पाकिस्तान के लिये एक सीख भी है और सबक भी। साथ ही यह एक विशाल एवं विराट इतिहास को समेटे हुए नये भारत के नये संकल्पों की सार्थक प्रस्तुति है।

प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी साफ कर दिया है कि भविष्य में अगर पाकिस्तान से कभी बात होगी तो केवल आतंकवाद और पीओके पर ही बात होगी। उन्होंने कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि टेरर और टॉक, टेरर और ट्रेड एक साथ नहीं हो सकते। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेनाओं के शौर्य और पराक्रम की भी उन्होंने खुल

कर सराहना की एवं वीरगाथा सुनाई है। भारतीय सेनाओं पर जहां पूरे देश को नाज है, वहीं प्रधानमंत्री के सशक्त नेतृत्व पर समूचे देश को भरोसा है और आज हमारा देश समृद्धशाली और शक्तिशाली होने के साथ ही विकसित भारत के रूप में तेजी से उभर रहा है। प्रत्येक भारतीय की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। आतंकवाद के समूल नाश के लिए हमारी सरकार कटिबद्ध है। सिंदूर पोंछने का अंजाम अब हर आतंकी को पता चल गया है। मोदी ने साफ किया कि अब वो दौर चला गया जब भारत परमाणु हमले के नाम पर ब्लैकमेल होता था। अब अगर फिर से हमला हुआ तो पाकिस्तान व आतंकवादियों को अलग-अलग नहीं देखा जाएगा। आतंक की जड़ों पर फिर से प्रहार किया जाएगा और इस बार का प्रहार विनाशकारी एवं विध्वंसक होगा।

पाकिस्तान द्वारा पोषित एवं पल्लवित आतंकवाद उसी के सर्वनाश का कारण बनेगा। पाक को बचना है तो उसे आतंकी ढांचे नष्ट करने होंगे। उन्होंने कहा कि हमारी मिसाइले एवं ड्रोन ने पाक में न सिर्फ आतंकी ठिकानों को नष्ट किया बल्कि इसके साथ सौ से अधिक खुंखार आतंकियों को भी मार गिराया। पाक में आतंकवादियों के लिये जो जगह एवं संवेदनाएं हैं, उसको दुनिया ने भी देखा। भारत की सर्जिकल स्ट्राइक में मरे दुर्दांत आतंकवादियों को अंतिम विदाई देने को पाक सेना के बड़े अधिकारी उतावले थे। पिछले तीस में पाकिस्तान ने आतंकवाद की फसल को सींचने के लिये जो संरचना अपने देश में तैयार की है, उससे निकले आतंकवादियों ने भारत को ही बार-बार लहूलुहान नहीं किया बल्कि ब्रिटेन तथा अमेरिका के 9/11 जैसे हमलों को दुनिया के दूसरे हिस्सों में अंजाम दिया है। मोदी ने स्पष्ट किया कि पहलगाम आतंकी हमले में धर्म पूछकर निर्दोष पर्यटकों की हत्या करने वाले आतंकवादी भारतीय समाज के साम्प्रदायिक सौहार्द एवं समरसता को नुकसान पहुंचाने में पूरी तरह विफल रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने साहस एवं निर्भीकता से पाक की आतंकी मानसिकता को दुनिया के सामने उजागर किया। आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखा जाएगा। बुद्ध पूर्णिमा के दिन देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने साफ किया है कि यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन आतंकवाद का भी नहीं है। भारत सदियों से बुद्ध की संस्कृति व विचारों का पक्षधर रहा है। लेकिन शांति का रास्ता शक्ति के रास्ते से ही होकर जाता है और भारत ने अपनी शक्ति को दिखाते हुए न केवल पाकिस्तान को पस्त किया बल्कि दुनिया को चौंकाया भी है। बिना लाग-लपेट के प्रधानमंत्री ने साफ किया कि भारतीय शांति की नीति को कमजोरी न माना जाए, वक्त आने पर हम शक्ति दिखाने से भी नहीं चूकेंगे। अंधेरों को चीर कर उजाला की ओर बढ़ते भारत की महान यात्रा के लिये सबके जागने, संकल्पित होने एवं आजादी के अमृतकाल काल को अमृतमय बनाने के लिये दृढ़ मनोबली एवं सकारात्मक होने का आह्वान है।

मोदी ने भारतीय वैज्ञानिकों की मेधा को सराहते हुए कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक ने बता दिया है कि भारत आधुनिक तकनीक से युद्ध के लक्ष्यों को हासिल करने में सक्षम है। भारत ने स्वदेशी प्रयासों व आत्मनिर्भरता के संकल्प के साथ देश को सुरक्षा कवच देने में कामयाबी हासिल की है। ये तकनीकें इक्कीसवीं सदी की सामरिक चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम हैं। पाक द्वारा विश्व शक्तियों से हासिल मिसाइलों व ड्रोन को भारतीय वायु प्रतिरक्षा तंत्र ने जिस तरह नाकाम किया, उसने भारत के रक्षा उत्पादों की विश्वसनीयता पर मोहर लगाई है। हम न्यू इरा के वारफेयर मानकों की कसौटी पर खरे उतरे हैं। जो मेड इन इंडिया हथियारों की विश्वसनीयता को वैश्विक स्तर पर स्थापित करेगा। हमें आने वाले कल के लिए संघर्ष करना है। हमें विश्व की ओर ताकने की आदत छोड़नी होगी, राजनीतिक संकीर्णता से भी ऊपर उठना होगा, जिन्हें भारत पर विश्वास है, अपनी संस्कृति, अपनी बुद्धि और विवेक पर अभिमान है, उन्हें कहीं अंतर में अपनी शक्ति का भान है, वे जानते हैं कि भारत आज पीछे पीछे चलने की मानसिकता से मुक्ति की ओर कदम बढ़ा चुका है और ये स्थितियां हमने पाक के खिलाफ एक्शन में देख ली है।

> मोदी ने भारतीय समाज में एकजुटता को अपरिहार्य बताया और कहा कि जब हमारी संप्रभुता और नागरिकों के जीवन पर संकट आएगा तो मुंहतोड़ जवाब जरूर दिया जाएगा। उन्होंने देश के लोगों को भरोसा दिलाया कि भारतीय सेना और सुरक्षा बल किसी भी चुनौती के मुकाबले के लिये तैयार हैं।

मोदी ने भारतीय समाज में एकजुटता को अपरिहार्य बताया और कहा कि जब हमारी संप्रभुता और नागरिकों के जीवन पर संकट आएगा तो मुंहतोड़ जवाब जरूर दिया जाएगा। उन्होंने देश के लोगों को भरोसा दिलाया कि भारतीय सेना और सुरक्षा बल किसी भी चुनौती के मुकाबले के लिये तैयार हैं। तब तक तैयार रहेंगे जब तक आतंक के अड्डे खंडहरों में तब्दील नहीं हो जाते। सीमाओं पर शांति इस बात पर निर्भर करेगी कि पाक आतंकवाद को लेकर क्या रवैया अपनाता है। उन्होंने देश की माता-बहनों और बेटियों को आश्वस्त किया कि सरकार का ऑपरेशन सिंदूर उनकी अस्मिता व सुरक्षा के लिये समर्पित था। उस पर किसी कीमत पर आंच नहीं आने दी जाएगी। यह उद्बोधन भारत की भावी सुरक्षित एवं सशक्त दशा-दिशा रेखांकित करते हुए उसे विश्व की महाताकत बनाने का आह्वान है। यह शांति का उजाला, समृद्धि का राजपथ, उजाले का भरोसा एवं महाशक्ति बनने का संकल्प है।

मोदी ने अपने इस संबोधन से अनेक निशाने साधे हैं। उनके अनुसार 2047 तक विकसित मुल्क बनाने के लिए पूरी जी-जान लगाकर दौड़ना होगा। पाक एवं क्षेत्रीय अस्थिरता इसमें बड़ी बाधा है, और भारत ने फिलहाल इसका इलाज कर दिया है। पाकिस्तान तक सख्त संदेश पहुंच चुका है। इस टकराव के आगे न बढ़ने और भारत के फिर से अपने लक्ष्य की ओर चलने से विश्व राजनीति एवं आर्थिक विकास में नई आशा का संचार हुआ है। मोदी के पाक के खिलाफ एक्शन को स्थगित करने की खुशखबरी के साथ दुनिया में दो बड़ी सकारात्मक खबरे भी आशा की किरण बनी। एक आशा की किरण है अमेरिका और चीन के बीच जारी टैरिफ वॉर का टल जाना, दूसरी किरण तीन साल से ज्यादा समय से युद्ध में उलझे रूस और यूक्रेन में सुलह के लिये दोनों देशों के बीच पहली बार सीधी बातचीत होना। यूक्रेन युद्ध, टैरिफ वॉर और भारत-पाक तनाव ने दुनिया को गंभीर संकट में डाल दिया था। तीनों मोर्चों पर आई सकारात्मक खबरों का असर भारत सहित दुनिया के शेयर बाजारों में आया उछाल है। इनके चलते भारत में नीतिगत स्थिरता, बेहतर समन्वय और ईज आफ डूइंग बिजनेस की स्थिति भी पुनः रफ्तार पकडेगी। ताजा घटनाक्रम से भारत एक आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर एवं सशक्त राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को निभानी होगी जिम्मेदार मीडिया की भूमिका

एक समय था जब आकाशवाणी की अपनी विश्वसनीयता रही। सरकारी प्रसारण होने के बावजूद घड़ी का समय मिलाने से लेकर नियतकालीन न्यूज प्रसारण समय पर लोग सब कुछ काम छोड़कर या फिर चौराहे की पान-चाय की दुकान पर जम जाते थे।

राहुल अग्रवाल

सच ही कहा है कि अति उत्साह में कभी भी संयम नहीं खोना चाहिए। ऑपरेशन सिन्दूर और उसके बाद की हालातों को जिस तरह से टीवी चैनलों द्वारा सनसनीखेज बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है भले ही इससे इन चैनलों की टीआरपी में बढ़ोतरी हो जाए पर यह किसी भी हालत में एक जिम्मेदार मीडिया की भूमिका नहीं हो सकती। आज देशवासी सही तस्वीर देखने को तरस गए हैं। कोई चैनल पाकिस्तान के किसी स्थान पर कब्जे की बात करता है तो कोई चैनल पाकिस्तान की सीमाओं में भारतीय सेना के प्रवेश की बात करता है। कोई चैनल कुछ और सनसनीखेज तस्वीर बताता है। यह सब ऑपरेशन सिन्दूर के अगले दिन रात के प्रसारणों से खासतौर से देखने को मिला। ठीक है देशभक्ति का जज्बा है और ऑपरेशन सिन्दूर से प्रत्येक देशवासी अपने आप को गर्वान्वित महसूस कर रहा है। हमारी सेना, हमारे सैनिकों और राजनीतिक नेतृत्व को लेकर प्रत्येक देशवासी में अति उत्साह और लबालब विश्वास है। इसमें कोई दो राय नहीं कि इस दौर में देश के प्रिन्ट मीडिया ने अपनी भूमिका सही तरीके से निभाई है। सवाल यही है कि क्या चैनलों या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एकमात्र उद्देश्य गंभीर से गंभीर मुद्दे को सनसनीखेज ही बनाना है। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि केन्द्र सरकार को बार बार एडवाइजरी जारी करनी पड़ रही है तो आमजन समझ ही नहीं पा रहे कि वास्तविकता क्या है?

एक समय था जब आकाशवाणी की अपनी विश्वसनीयता रही। सरकारी प्रसारण होने के

बावजूद घड़ी का समय मिलाने से लेकर नियतकालीन न्यूज प्रसारण समय पर लोग सब कुछ काम छोड़कर या फिर चौराहे की पान-चाय की दुकान पर जम जाते थे। प्रातः 8 बजे, रात पौने नो बजे व स्थानीय समाचारों के लिए निर्धारित समय पर लोग समाचार सुनने का बेसब्री से इंतजार करते थे। विश्वसनीयता यह कि सरकार विरोधी आंदोलनकारी भी सरकारी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित समाचारों पर पूरा पूरा विश्वास करते थे। यही कारण था कि समाचारों की विश्वसनीयता होती थी। दूरदर्शन का आंरभिक दौर भी इसी तरह का रहा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन समाचारों की वह गौरवशाली परंपरा इतिहास की बात हो गई है। 1956, 1962 या 1971 का युद्ध हो सभी की निगाहें समाचार बुलेटिनों पर रहती थी तो समय की मांग को देखते हुए देशभक्ति पूर्ण गीतों, कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता था। समय का बदलाव देखिये कि टीवी चैनलों की टीआरपी दौड़ सत्य दिखाने के स्थान पर भ्रम का जाल बुनने लगती है। सोशियल मीडिया पर यह आरोप आम है पर समाचार टीवी चैनल तो दो कदम आगे हो गए हैं।

समूचे देश के लिए गर्व की बात है कि आज सरहद के मोर्चे पर हो या कूटनीतिक मोर्चे पर हमारी रणनीति पूरी तरह से सफल है। हमारी सेना और सैनिक पाकिस्तान के हर कूटरचित कदमों को विफल करने में सफल हो रही है। पाकिस्तान द्वारा

आज देशवासी सही तस्वीर देखने को तरस गए हैं। कोई चैनल पाकिस्तान के किसी स्थान पर कब्जे की बात करता है तो कोई चैनल पाकिस्तान की सीमाओं में भारतीय सेना के प्रवेश की बात करता है।

सीमावर्ती इलाकों और नागरिक क्षेत्रों में की जा रही सैन्य गतिविधियों को अंजाम देने के कुत्सित प्रयासों को पूरी तरह से विफल किया जा रहा है वही लगभग सभी द्रोण हमलों को विफल किया जा रहा है। पाकिस्तान अब पूरी तरह कुंठित देश हो गया है और आज तुर्की और चीन को छोड़कर कोई देश पाकिस्तान के पक्ष में आने को तैयार नहीं है। पहलगाम की घटना के बाद से पाकिस्तान एक के बाद एक गलतियां कर रहा है और आतंकवादी के जनाजे में सैनिकों द्वारा शामिल होना उसके आतंकवादियों से जुड़ाव को स्पष्ट कर देता है। अब पाकिस्तान ने अपनी तरफ से इकतरफा भारत के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी गई है अपितु परमाणु बम विस्फोट की धमकी दी जा रही है। पर जिस संयमित तरीके से भारत द्वारा पाकिस्तान के हर आक्रमण और कदम को विफल किया जा रहा है वह देश के लिए गर्व की बात है। आज पाकिस्तान का हर कदम उसके लिए आत्मघाती होता जा रहा है। बलूचियों को अलग अवसर मिल गया है तो पीओके में पाकिस्तान के विरोध को भी मुखर होने का अवसर मिल गया है। जब युद्ध जैसे हालात हो तो ऐसे में सबसे पहली आवश्यकता जिम्मेदार रिपोर्टिंग की हो जाती है। मीडिया को ऐसे सभी कदमों से बचना जरुरी हो जाता है। सबसे महत्वपूर्ण यह हो जाता है कि हमारी अतिउत्साह की रिपोर्टिंग दुश्मन देश के लिए सहायक ना बन जाए यह जरुरी हो जाता है। यही कारण है कि सरकार एडवाइजरी जारी करते हुए सेना के मूवमेंट व अन्य सामरिक सूचनाओं से दूरी बनाये रखने की सलाह दी जा रही है। दरअसल जिस तरह से ऑपरेशन सिन्दूर के बाद पाकिस्तान द्वारा द्रोण हमलों का दौर चलाया और उनके द्रोण हमलें को नाकाम किया गया वहां तक तो सब ठीक रहा पर ब्रेकिंग के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा था वह जिम्मेदार मीडिया की भूमिका नहीं कहा जा सकता। ऐसे में टीवी चैनलों को संयम और जिम्मेदारी से काम करना होगा। हमें पाकिस्तानी प्रोपेगेण्डा प्रचार से दूर रहते हुए रचनात्मक भूमिका निभानी होगी।

युद्ध काल में लक्ष्मणरेखा लांघता विपक्ष

विगत एक माह के इस समस्त घटनाक्रम के दौरान कांग्रेस पार्टी व इंडी गठबंधन के नेता यह बयान तो देते रहे कि वे आतंकवाद के खिलाफ सरकार जो भी रणनीति अपनाएगी उसके साथ पूरी तरह से एकजुट होकर खड़े रहेंगे किन्तु उनकी करनी उनकी इस कथनी के एकदम विपरीत है।

रवि जैन

पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए क्रूर आतंकी हमले की सूचना मिलते ही गृह मंत्री अमित शाह कश्मीर पहुंच गए, प्रधानमंत्री मोदी विदेश दौरा बीच में ही रोक कर वापस आए, एअरपोर्ट पर ही सम्बंधित अधिकारियों के साथ बैठक की, और अगले ही दिन आतंकियों और उनके पीछे पीछे शत्रुओं को ऐसा दंड देने की घोषणा की जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। इसके बाद सरकार के सभी अंग अपने अपने काम पर लग गए और विपक्ष सरकार का उपहास उड़ाने में। सरकार ने पहले बड़े कूटनीतिक निर्णय लेते हुए सिन्धु जल समझौते को स्थगित किया फिर पूरी तैयारी के साथ ऑपरेशन सिन्दूर लांच हुआ, जिसके अंतर्गत पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर तथा पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकाने नष्ट किये गए जिनमें सौ से अधिक आतंकवादी मारे गए। भारत ने पाकिस्तान के किसी सैन्य ठिकाने या नागरिक क्षेत्र को निशाना नहीं बनाया और स्पष्ट किया कि उसकी कार्यवाई केवल आतंक के विरुद्ध है किन्तु पाकिस्तानी सेना फिर भी बीच में कूद पड़ी और भारत के सैन्य तथा नागरिक क्षेत्र को निशाना बनाकर हमले किए। भारत के पलटवार के बाद पाकिस्तान में तबाही का मंजर देखा गया और फिर अचानक सीज फायर हो गया। इसके पश्चात प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया कि यह युद्ध विराम नहीं मात्र स्थगन है, ऑपरेशन सिन्दूर जारी है। वर्तमान में भारत के सर्वदलीय सांसद समूह विश्व के अलग अलग देशों में भारत का पक्ष रखने पहुंचे हुए हैं।

विगत एक माह के इस समस्त घटनाक्रम के दौरान कांग्रेस पार्टी व इंडी गठबंधन के नेता यह बयान तो देते रहे कि वे आतंकवाद के खिलाफ

सरकार जो भी रणनीति अपनाएगी उसके साथ पूरी तरह से एकजुट होकर खड़े रहेंगे किन्तु उनकी करनी उनकी इस कथनी के एकदम विपरीत है। ऑपरेशन सिन्दूर लांच होने से पूर्व, सीज फायर की घोषणा और फिर संसदीय दलों की सूची बनने तक राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडी गठबंधन के नेता जिस प्रकार की बयानबाजी, प्रदर्शन और सोशल मीडिया पोस्ट कर रहे हैं कर रहे हैं उससे यह स्पष्ट हो गया है कि वास्तव में इन दलों द्वारा आपदकाल में एकजुट रहने की बात करना एक कोरा दिखावा मात्र है।

कांग्रेस ने सबसे पहले प्रधानमंत्री मोदी की बिना सिर की तस्वीर सोशल मीडिया पर जारी की और उसके ऊपर गायब लिखा, सोशल मीडिया पर हुए भारी विरोध के बाद भी कांग्रेस की सोशल मीडिया प्रकोष्ठ की हेड उसका बचाव करती रहीं लेकिन बाद में मजबूरन उनको वह पोस्ट हटाना पड़ा। इसके बाद कांग्रेस के उत्तर प्रदेश अध्यक्ष ने राफेल का उपहास उड़ाया। कुछ विरोधियों ने तो दो कदम आगे बढ़कर इसे चुनावी स्टंट तक बता दिया। ये लोग लगातार प्रधानमंत्री के मीम सोशल मीडिया पर डालते रहे।

विमर्श बदलने और अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए इन्होने पहलगाम की घटना को हल्का करने और इस सत्य पर चूना पोतने का प्रयास किया कि आतंकवादियों ने धर्म पूछकर केवल हिन्दू पुरुषों को मारा। मीडिया बहसों के दौरान किसी भी विरोधी दल के प्रवक्ता ने यह नहीं कहा कि पहलगाम में आतंकियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछकर मारा है अपितु वह सभी लोग यही कहते रहे कि आतंकवादियों ने कुछ निर्दोष लोगों को मार दिया। साथ ही मुस्लिम परस्त विरोधी दलों के नेता लगातार ये कहने लगे कि किसी एक के आतंकवादी होने से पूरी कौम को आतंकी नहीं कह सकते जबकि उस समय यह विषय ही चर्चा करने का नहीं था।

ऑपरेशन सिंदूर स्थगन के बाद से राहुल गांधी व इंडी गठबंधन के नेता व प्रवक्ता सरकार के विरोध की लक्ष्मण रेखा लांघ कर उसे राष्ट्र विरोध में बदल रहे है। राहुल गांधी, इंडी गठबंधन व उनके प्रवक्ता मीडिया के सामने जो प्रश्न कर रहे हैं वो पाकिस्तान व आतंकवादियों के लिए कवर फायर देने वाले हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे व उत्तर प्रदेश के स्वामी प्रसाद मौर्य जैसे लोगों को ऑपरेशन सिंदूर एक छुटपुट घटना लग रही है। इन लोगों के अनुसार यह ऑपरेशन 24 घंटे में ही फुस्स हो गया। कांगेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का पाकिस्तान प्रेम तो अद्भुत ही उनका कहना है कि 'अपने पाकिस्तान' से युद्ध चल रहा है।

राहुल गांधी व इंडी गठबंधन ने आज तक ऑपरेशन सिंदूर की प्रशंसा नहीं की है अपितु वह पूछ रहे हैं कि इस ऑपरेशन में हमने कितने पायलट खो दिये हैं, हमारे कितने विमान नष्ट हुए। कांग्रेस प्रवक्ता दो हाथ आगे जाकर ऑपरेशन सिंदूर को सौदा बता रहे हैं। विपक्ष उसी तरह से बौखलाया दिख रहा है जिस तरह से पाकिस्तान।

अब जबकि अभी ऑपरेशन सिंदूर का एक छोटा सा चक्र ही पूरा हुआ है राहुल गांधी और अन्य विपक्ष विदेश मंत्री के बयान को तोड़ मरोड़ कर उनके पीछे पड़ गया है और उनके इस्तीफे की मांग कर रहा हैं, सुनियोजित तरीके से सीजफायर के मामले पर अमेरिकी दबाव के आगे झुकने का झूठ फैला रहा है। जब अमेरिका ने पाकिस्तान में ओसामा बिन लादेन के ठिकाने पर हमला किया था तब अमेरिका ने भी पाकिस्तान को पूर्व में ही सूचित कर दिया था यह एक अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का अहम हिस्सा है और भारत ने भी उसी नियम का पालन किया है किंतु पता नही क्यों राहुल गांधी को इस पर भी राजनीति करनी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर विदेश मामलों के विशेषज्ञ हैं, कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता उनको 'मुखबिर' कह रहे हैं।

राहुल गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी उरी से लेकर पुलवामा और पहलगाम तक हर घटना पर संदेह व्यक्त किया है और कभी भी पाकिस्तान व आतंकवाद के खिलाफ नहीं बोली। इतना ही नहीं इन्होने पुलवामा के बाद हुई एयर स्ट्राइक का सबूत भी माँगा। वर्तमान कांग्रेस पार्टी पूरी तरह से अर्बन नक्सलियों के शिकंजे में जा चुकी है। आज वो लोग सरकार व सेना पर सवाल उठा रहे हैं जिनकी मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के कारण आज आतंकवाद व आतंकवादी नासूर बन गये हैं। वो लोग सवाल उठा रहे हैं जिनके रहते कश्मीर घाटी में हिन्दुओं के साथ 1980- 90 के दशकों में खून की होली खेली गई और कश्मीर घाटी हिन्दुओं से विहीन कर दी गई। इन सभी दलों को 2004से 2014 तक का काला दौर याद रखना चाहिए जब देश का कोई भी कोना आतंकवादी हमलों से नहीं बच पा रहा था किंतु आज स्थित एकदम उलट गई है। कांग्रेस के मूर्धन्य लोगों को यह बताना ही होगा कि इन लोगों ने मुंबई बम धमाकों के बाद क्या किया था?

राहुल गांधी की बयानबाजी से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह पाकिस्तान और चीन के लिए जासूसी कर रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर से घायल पाकिस्तान ये जानना चाहता है कि ऑपरेशन सिंदूर से हमें तो नुकसान हुआ किंतु क्या भारत को भी नुकसान हुआ यदि हाँ तो कितना? अब राहुल गाँधी इसी काम में लगे हैं। यदि राहुल गांधी को सेना पर भी विश्वास होता तो इन्होने डीजीएमओ की प्रेस वाताएँ सुनी होतीं जिनमें भारतीय पक्ष को विस्तार से समझाया गया था किन्तु निजी स्वार्थ की राजनीति सेकरने वाले इन लोगों को मुस्लिम वोट बैंक के आगे कुछ और दिखाई नहीं देता। राहुल गांधी भारत में विपक्ष के नेता हैं और वह जो भी बोलते हैं उसे पाकिस्तान में अवश्य सुना जाता है।

राहुल गांधी व कांग्रेस पार्टी इनती विचार शून्य हो चुकी है कि इसने भारत सरकार का पक्ष उचित रूप से रखने पर अपने ही नेता शशि थरूर का अपमान करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। केंद्र सरकार द्वारा उन्हें सर्वदलीय प्रतिनिधमंडल में शामिल किये जाने पर कांग्रेस ने अपने योग्य, विदेश मामलों के जानकार तथा अनुभवी सांसद को लेकर ही बवाल मचा दिया। इस पूरे घटनाक्रम से यह बात स्पष्ट हो गई है जल्दी ही कांग्रेस दो भागों में विभाजित दिखाई देगी जिसमें जिसमे एक गुट देशहित में सोचने वाले नेताओं का होगा और दूसरा डीप स्टेट समर्थित राहुल गाँधी परिवार का।

राहुल गांधी की बयानबाजी से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह पाकिस्तान और चीन के लिए जासूसी कर रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर से घायल पाकिस्तान ये जानना चाहता है कि ऑपरेशन सिंदूर से हमें तो नुकसान हुआ किंतु क्या भारत को भी नुकसान हुआ यदि हाँ तो कितना?

इंद्रेश शर्मा

क्यों जनता भ्रष्टाचार का अनचाहा भार ढ़ोये?

भ्रष्टाचार की परतें अपराधियों एवं भ्रष्ट लोगों को बचाने तक ही सीमित नहीं है, अब तो यह गरीबों का निवाला भी छीन रही है। सरकार गरीबों के लिये अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाती हैं, लेकिन बड़ा स्थापित तथ्य है कि अधिकतर सरकारी योजनाएं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पातीं, भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं।

विभिन्न राजनीतिक दलों, विभिन्न प्रांतों की सरकारों, विभिन्न गरीब कल्याण की योजनाओं, न्यायिक क्षेत्र एवं उच्च जांच एजेंसियों में भ्रष्टाचार की बढ़ती स्थितियां गंभीर चिन्ता का विषय है। ऐसा लगता है आज हम जीवन नहीं, राजनीतिक, न्यायिक एवं प्रशासनिक मजबूरियां जी रहे हैं। ऐसा भी लगता है न्याय, राजनीति एवं प्रशासन की सार्थकता एवं साफ-सुथरा उद्देश्य नहीं रहा, स्वार्थपूर्ति का जरिया बन गया है। दिल्ली उच्च न्यायालय के द्वारा एक असामान्य घटनाक्रम के तहत भ्रष्टाचार के एक मामले में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के तीन अधिकारियों को उसी सीबीआई की हिरासत में भेज देना न केवल चिन्ताजनक एवं शर्मनाक है बल्कि विडम्बनापूर्ण है। भाजपा सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ केन्द्रीय एजेंसियों की कार्रवाई का बुगल बजाय हुए है, जिससे राजनीति में बढ़ रहे भ्रष्टाचार पर नियंत्रण का नया सूरज उदित होता हुआ दिखाई दे रहा है, लेकिन सीबीआई जैसी जांच एजेन्सी में भ्रष्टाचार का पदार्फाश होना इस सूरज को उदित होने से पहले ही अंधेरा की ओट में ले रहा है। इससे भी बड़ी त्रासद एवं निराशाजनक है गुजरात में 71 करोड़ रुपये के मनरेगा घोटाले में मंत्री बच्चू भाई खाबड़ के दो बेटों का गिरफ्तार होना। राजनीति एवं कार्यपालिका के साथ न्याय पालिका के क्षेत्र में जस्टिस यशवंत वर्मा के सरकारी आवास से बड़ी मात्रा में कथित तौर पर नकदी मिलना भ्रष्टाचार के सर्वत्र व्याप्त होने को दर्शा रहा है। जनता कब तक भ्रष्टाचार का अनचाहा भार ढ़ोती रहेगी। कैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भ्रष्टाचारमुक्त आदर्श राष्ट्र-निर्माण के अपने लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे? कैसे आजादी के अमृत काल में ईमानदार राष्ट्र बना पायेंगे?

न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा ने 25 अप्रैल को

सीबीआई के तीन अधिकारियों के भ्रष्टता पर अपने आदेश में कहा कि यह सीबीआई, ईडी और ऐसे अन्य विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार का अनूठा मामला है, जिसने हमारी कार्यपालिका और जांच तंत्र की पूरी संरचना को हिलाकर रख दिया है। इन एजेंसियों का प्राथमिक कर्तव्य अपराध की जांच करना और भ्रष्टाचार के दोषियों को सजा दिलाना है। लेकिन इन उच्च जांच एजेन्सियों के आला अधिकारी ही भ्रष्ट हो तो दूसरों के भ्रष्टाचार मामलों में निष्पक्ष एवं तीक्ष्ण जांच की उम्मीद कैसे संभव है? सीबीआई-भ्रष्टाचार एकमात्र मामला नहीं है, बल्कि यह विभिन्न विभागों के अधिकारियों के बीच एक 'बड़ी साजिश' को दशार्ता है, जो अनुचित लाभ या प्रभाव डालने समेत इन विभागों के कामकाज में हस्तक्षेप करने के लिए रिश्वत के मामले को दशार्ता है। अब सर्वोच्च न्यायालय के जज भी ऐसे मामलों में लिप्त हो तो समस्या की गंभीरता को सहज ही समझा जा सकता है। निश्चित ही भारतीय न्यायपालिका के इतिहास में जस्टिस वर्मा केस एक दुर्लभ एवं संवेदनशील मौका है। अब इसकी वजह से न्यायपालिका की गरिमा को ठेस न पहुंचे और जनता का भरोसा बना रहे, इसके लिए पूर्व मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने मामले से जुड़ी जानकारियों को देश से साझा किया। साथ ही, उनकी पहल पर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों ने अपनी संपत्ति का ब्यौरा भी सार्वजनिक किया। जस्टिस वर्मा का ट्रांसफर किया गया और जांच कमिटी बनाकर उसकी रिपोर्ट सरकार व राष्ट्रपति के पास भेजकर महाभियोग की सिफारिश कर दी गई है। यहां से अब गेंद सरकार और संसद के पाले में है। महाभियोग ही एकमात्र तरीका है, जिससे सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के मौजूदा जजों को हटाया जा सकता है। लेकिन, आजाद भारत के इतिहास में आज तक ऐसा नहीं हुआ। इसके पहले, भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना कर रहे कलकत्ता हाई कोर्ट के न्यायाधीश सौमित्र सेन के खिलाफ महाभियोग चला था, लेकिन लोकसभा में वोटिंग से पहले ही उन्होंने इस्तीफा दे दिया यानी वहां भी प्रक्रिया पूरी नहीं हो पाई थी। अब अगर जस्टिस वर्मा का यह मामला महाभियोग तक पहुंचता है, तो वहां भी एक लंबी प्रक्रिया चलेगी। लेकिन विचार करने वाली बात यह है कि क्या न्यायपालिका की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखते हुए प्रक्रिया की जटिलता को कम किया जा सकता है? ताकि जजों के भ्रष्टाचार की उचित सजा उनको मिल सके, ऐसी प्रक्रिया से ही न्यायपालिका बिना किसी डर, दबाव या लालच के अपना कर्तव्य भी

राजनीतिज्ञों, जजों, प्रशासनिक अधिकारियों की साख गिरेगी, तो राष्ट्र की साख बचाना भी आसान नहीं होगा। चहुंओर पसरे बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार से विकास के दावों का विद्रूप रूप ही सामने आता है।

निभा सके। भ्रष्टाचार की परतें अपराधियों एवं भ्रष्ट लोगों को बचाने तक ही सीमित नहीं है, अब तो यह गरीबों का निवाला भी छीन रही है। सरकार गरीबों के लिये अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाती हैं, लेकिन बड़ा स्थापित तथ्य है कि अधिकतर सरकारी योजनाएं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पातीं, भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं। महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना यानी मनरेगा की स्थिति भी इससे अलग नहीं है। इस योजना की शुरूआत इस मकसद से की गई थी कि गरीब परिवारों को साल में कम से कम सौ दिन रोजगार मिल सकेगा और वे अपना भरण-पोषण कर सकेंगे मगर शुरूआती वर्षों में ही इसमें भ्रष्टाचार उजागर होने लगे थे। फर्जी नाम दर्ज कर काम देने की बड़ी चालबाजियां सामने आई थीं। सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार का ताना-बाना संबंधित महकमों में ही बुना जाता है। इसी का त्रासद उदाहरण गुजरात में मनरेगा के तहत फर्जी तरीके से कार्य निष्पादन के दस्तावेज तैयार कर करोड़ों की रकम भुना लेने का है। पुलिस ने इस मामले में अब तक ग्यारह लोगों को गिरफ्तार किया है, जिन्हें सड़क, बांध, पुलिया आदि निर्माण के लिए सामग्री मुहैया कराने का ठेका दिया गया था। इस घोटाले ने इसलिए तूल पकड़ा और राजनीतिक रंग ले लिया है कि इसमें वहां के पंचायत और कृषि राज्यमंत्री के दो बेटों को भी गिरफ्तार किया गया है।

गुजरात ही नहीं, देश के अन्य हिस्सों में भी मनरेगा में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के किस्से उजागर हो रहे हैं। मुजफ्फरपुर में भी मनरेगा भ्रष्टाचार का शिकार हो गया है। जिले के कई ब्लॉक में मनरेगा में भ्रष्टाचार हो रहा है। फर्जी हाजिरी और फोटो घोटाले से हर दिन लाखों रुपये की लूट हो रही है। एक ही फोटो को बार-बार इस्तेमाल करके लाखों रुपये निकाले जा रहे हैं। गुजरात में मंत्री के बेटों के द्वारा मनरेगा लूट एवं भ्रष्टाचार अधिक परेशान करने वाला एवं चिन्ता में डालने वाला है। नेता, मंत्री एवं प्रशासनिक अधिकारी अच्छे-बुरे, उपयोगी-अनुपयोगी का फर्क नहीं कर पा रहे हैं। मार्गदर्शक यानि नेता शब्द कितना पवित्र व अर्थपूर्ण था पर अब नेता खलनायक बन गया है। नेतृत्व व्यवसायी एवं भ्रष्टाचारी बन गया। आज नेता शब्द एक गाली है। जबकि नेता तो पिता का पर्याय था। उसे पिता का किरदार निभाना चाहिए था। पिता केवल वही नहीं होता जो जन्म का हेतु बनता है अपितु वह भी होता है, जो अनुशासन सिखाता है, ईमानदारी का पाठ पढ़ाता है, विकास की राह दिखाता है। आगे बढ़ने का मार्गदर्शक बनता है। अब तक आम आदमी पार्टी, कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, राष्ट्रीय जनता दल आदि राजनीतिक दलों में ही भ्रष्टाचार के किस्से सामने आ रहे थे, अब भाजपा नेताओं एवं मंत्रियों पर भी ऐसे आरोप लगना ज्यादा चिन्ताजनक है। प्रश्न भाजपा का ही नहीं है, भ्रष्टाचार जहां भी हो, उसके खिलाफ बिना किसी पक्षपात के कार्रवाई की जानी चाहिए। भाजपा एक राष्ट्रवादी पार्टी है, नया भारत एवं सशक्त भारत को निर्मित करने के लिये तत्पर है तो उसकी पार्टी के भीतर भी यदि भ्रष्टाचार है तो उसकी सफाई ज्यादा जरूरी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी किसी भी दल के नेताओं के भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई का बुगल बजाय हुए हैं तो यह नये भारत, सशक्त भारत, ईमानदार भारत बनाने की सार्थक पहल है। राजनीतिज्ञों, जजों, प्रशासनिक अधिकारियों की साख गिरेगी, तो राष्ट्र की साख बचाना भी आसान नहीं होगा। चहुंओर पसरे बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार से विकास के दावों का विद्रूप रूप ही सामने आता है। हमारे पास कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं राजनीति ही समाज की बेहतरी का भरोसेमंद रास्ता है और इसकी साख गिराने वाले कारणों में अपराधीकरण और भ्रष्टाचार के बाद तीसरा नंबर कीचड़ उछाल राजनीति का भी है, जिसमें गलत को गलत नहीं माना जाता। ये तीनों ही ऐसे औजार है, जो देश को तबाही की ओर ले जाते हैं। अपराधीकरण और भ्रष्टाचार का मसला काफी गहरा है और इससे खिलाफ आरपार की लड़ाई के लिए काफी कठोरता, निष्पक्षता, वक्त और ऊर्जा की जरूरत है, सख्त कदम उठाने की अपेक्षा है। ऐसी ही उम्मीदभरी एवं भ्रष्टाचार-निरोधक कार्रवाई से भारत का लोकतंत्र समृद्ध हो सकेगा।

सजा से रुकेंगे जहरीली शराब जैसे हादसे

ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति के बावजूद राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों में ऐसी समस्याएं स्थान नहीं पाती हैं। दरअसल राजनीतिक दलों के एजेंडे में ऐसी मौतों के लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसा इसलिए भी है कि ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति नहीं होने देने की गारंटी से वोट बैंक मजबूत नहीं होता। यही वजह है कि हर साल किसी न किसी राज्य से जहरीली शराब से होने वाली मौतों की पुनरावृत्ति जारी है...

भारत में आम लोगों के जीवन की कोई कीमत नहीं है। सरकारों का काम सिर्फ टैक्स वसूलना रह गया है, जब जिम्मेदारी लेने के वक्त आता है तो सब एक-दूसरे को दोषी ठहरा कर पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं। इससे भी ज्यादा आश्चर्य यह है कि सरकारें पिछली गलतियों से भी कोई सबक नहीं सीखती हैं। साथ ही गलतियों के लिए जिम्मेदार अफसरों पर ऐसी कोई कार्रवाई नहीं होती, जिससे दूसरे लोग इससे सबक सीख सकें। महज कागजी खानापूर्ति करने के लिए कार्रवाई करने के बाद अफसर वापस मलाईदार पोस्टिंग पाने में कामयाब हो जाते हैं। पंजाब के अमृतसर के कई गांव में जहरीली शराब पीने से करीब दो दर्जन लोगों की मौत भी ऐसी ही

अनिल वशिष्ठ

गैरजिम्मेदाराना प्रवृत्ति का परिणाम है। इस मामले में मुख्य आरोपी प्रभजीत सिंह को गिरफ्तार किया गया। आबकारी विभाग के दो अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। सबसे बड़ा सवाल यही है कि इतने लोगों की मौत के बाद अधिकारियों को सिर्फ निलंबित किया गया है। दरअसल कानून में ऐसा कोई प्रावधान ही नहीं है कि अफसरों की लापरवाही से होने वाली मौतों के लिए उन्हें भी अपराधियों की तरह सजा होगी। केंद्र सरकार ने आपराधिक कानून का नाम बदल दिया। इसमें कई तरह के संशोधन किए गए। किन्तु नौकरशाहों को जिम्मेदार बनाने के लिए सजा का प्रावधान नहीं किया गया। यही वजह है कि जहरीली शराब पीने से होने वाले हादसे हों या इसी तरह के दूसरे हादसों में जिम्मेदार अधिकारियों को आपराधिक मामलों की तरह जेल की सजा नहीं होती। पांच साल पहले पंजाब में तरनतारन, अमृतसर और गुरदासपुर जिलों में एक बड़ी शराब त्रासदी हुई थी। जुलाई और अगस्त 2020 में माझा क्षेत्र के तीन जिलों तरनतारन, गुरदासपुर और अमृतसर में नकली शराब पीने से लगभग 130 लोगों की मौत हो गई थी। लगभग एक दर्जन लोगों की आंखों की रोशनी

चली गई थी।

अकेले तरनतारन जिले में लगभग 80 मौतें हुई थीं। 19 मार्च 2024 को पंजाब के ही संगरूर जिले में नकली शराब पीने से 21 मौतें हो गई थीं, जबकि 40 से अधिक लोग गंभीर रूप से बीमार हुए। यह पहला मौका नहीं है जब देश के किसी राज्य में जहरीली शराब पीने से लोगों की मौत हुई हो। वर्ष 2014 में अवैध शराब के सेवन से 1699 मौतें हुईं। वर्ष 2015 में 1624 घटनाओं में 1522 लोगों की जान गई। महाराष्ट्र (278), पुडुचेरी (149) और मध्य प्रदेश (246) में सबसे ज्यादा मौतें हुईं। वर्ष 2016 में 1073 घटनाओं में 1054 मौतें दर्ज की गईं। इस वर्ष मध्य प्रदेश (184) और हरियाणा (169) में सबसे ज्यादा लोगों ने अपनी जान गंवाई। इसी तरह वर्ष 2017 में 1497 घटनाओं में 1510 मौतें हुईं। इनमें कर्नाटक (256), मध्य प्रदेश (216) और आंध्र प्रदेश (183) में हालात गंभीर रहे। वर्ष 2018 में 1346 घटनाओं में 1365 लोगों की जान गई। मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (218) में सबसे ज्यादा मौत के मामले सामने आए। वर्ष 2019 में 1141 घटनाओं में 1296 मौतें हुईं। इनमें मध्य प्रदेश में 410 और कर्नाटक में 268 लोगों की मौत हुई। वर्ष 2020 में 931 घटनाओं में 947 लोगों की जान गई। मध्य प्रदेश (214) और झारखंड (139) में सबसे ज्यादा मौतें हुईं। वर्ष 2021 में 708 घटनाओं में 782 मौतें हुईं और वर्ष 2022 में 507 घटनाओं में 617 मौतें हुईं। इनमें बिहार (134) और कर्नाटक (98) में अवैध शराब का कहर जारी रहा। वर्ष 1992 ओडिशा के कटक में जहरीली शराब पीने से 200 से अधिक लोगों की मौत हुई, जबकि 600 अन्य लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जो दशकों में भारत में इस तरह की सबसे बड़ी घटना थी। वर्ष 1981 में कर्नाटक के बेंगलुरु में सबसे भयानक हादसा हुआ। बेंगलुरु में मिथाइल अल्कोहल विषाक्तता के कारण 308 लोगों की मौत हो गई। यह सस्ती शराब में मिलावट के कारण हुआ था। अवैध या जहरीली शराब सिर्फ बिहार या पंजाब की समस्या नहीं है।

देश के लगभग सभी राज्यों में अवैध शराब का कारोबार धड़ल्ले से चलता है। हर साल लाखों लीटर अवैध शराब जब्त भी होती है। लेकिन इस पर पूरी तरह से रोक नहीं लग पा रही। बिहार ही नहीं, बल्कि गुजरात, मिजोरम, नागालैंड और लक्षद्वीप में भी पूरी तरह से शराबबंदी है। इसके बावजूद यहां जहरीली शराब से मौतें होती रहती हैं। गुजरात पहला राज्य था, जिसने शराब पर प्रतिबंध लगाया था। फिर भी राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि 6 साल में जहरीली या अवैध शराब पीने से राज्य में 54 लोगों की मौत हो चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि भारत में हर साल शराब की जितनी खपत होती है, उसमें से 50 फीसदी अवैध तरीके से बनती और बिकती है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में हर साल पांच अरब लीटर शराब पी जाती है।

इसमें 40 फीसदी से ज्यादा अवैध तरीके से बनाई जाती है और ये सस्ती होती है। ग्रामीण इलाकों में देसी शराब ज्यादा पी जाती है। बिहार सरकार के आंकड़े बताते हैं कि शराबबंदी कानून तोड़ने के मामले में 6.71 लाख से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया है। देश के कुछ राज्यों में शराबबंदी लागू है और कुछ ऐसे भी हैं जहां पहले शराबबंदी थी, लेकिन बाद में इसे हटा लिया गया। हरियाणा में 1996 में शराबबंदी लागू की गई थी, लेकिन दो साल बाद ही 1998 में इसे हटा लिया गया। आंध्र प्रदेश में 1995 में शराब पर प्रतिबंध लगा, लेकिन 1997 में सरकार ने इसे वापस ले लिया। मणिपुर में भी 1991 से शराबबंदी लागू है और सरकार ने इसमें थोड़ी छूट देने का फैसला लिया। ऐसा इसलिए ताकि सरकारी खजाना भर सके। मणिपुर सरकार को शराबबंदी के कानून में थोड़ी छूट देने से 600 करोड़ रुपए का रैवेन्यू मिलने का अनुमान है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक देश के ज्यादातर राज्यों के टैक्स रैवेन्यू में 10 से 15 फीसदी हिस्सेदारी शराब से मिलने वाले टैक्स की है। उत्तर प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों के टैक्स रैवेन्यू में तो 20 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी शराब की है।

अवैध और जहरीली शराब से होने वाली मौतों के आंकड़ों से जाहिर है कि देश में ऐसा एक भी साल नहीं गया, जब ऐसे हादसों में लोगों की जानें नहीं गई हों। मतलब जहरीली शराब से होने वाली मौतें देश में स्थायी लाइलाज समस्या बन गई हैं। केंद्र हो या राज्य सरकारों की जांच एजेंसियां, ऐसा हादसा होने के बाद सक्रिय होती हैं। सरकारें मृतक आश्रितों को चंद रुपयों का मुआवजा और कुछ आरोपियों की गिरफ्तारी कर असली जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति के बावजूद राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों में ऐसी समस्याएं स्थान नहीं पाती हैं। दरअसल राजनीतिक दलों के एजेंडे में ऐसी मौतों के लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसा इसलिए भी है कि ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति नहीं होने देने की गारंटी से वोट बैंक मजबूत नहीं होता। यही वजह है कि हर साल किसी न किसी राज्य से जहरीली शराब से होने वाली मौतों की पुनरावृत्ति जारी है। आगे भी इस सिलसिले के थमने के आसार नजर नहीं आते। राज्यों में सिर्फ विपक्षी दल शोर-शराबा करता है, किन्तु सत्ता में आने पर ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए किसी के पास कोई नीति नहीं होती। ऐसी मौतों का सिलसिला तब तक जारी रहेगा, जब तक मौतों के लिए जिम्मेदार अफसरों के लिए कानून में जेल भेजे जाने का प्रावधान नहीं होगा। सभी वर्गों को इस समस्या के ठोस समाधान के लिए मिलजुल कर काम करना होगा।

अब चीन से आयात नियंत्रण जरूरी

इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि पिछले एक दशक से स्वदेशी उत्पादों को हरसंभव तरीके से प्रोत्साहित करके चीन से आयात घटाने के प्रयास हुए हैं। वर्ष 2019 और 2020 में चीन से तनाव के कारण जैसे-जैसे चीन की भारत के प्रति आक्रामकता और विस्तारवादी नीति सामने आई, वैसे-वैसे स्थानीय उत्पादों के उपयोग की लहर देश भर में बढ़ती हुई दिखाई दी। प्रधानमंत्री मोदी के स्थानीय आर्थिकी का समर्थन करने से स्वदेशी उत्पादों के साथ आगे बढ़ना होगा...

यकीनन पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ भारत की कार्रवाई पर चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा दिखाई दिया। चीन ने न केवल पाकिस्तान को पूर्ण समर्थन दिया, वरन्-चीन ने पाकिस्तान को मिसाइलों सहित विभिन्न हथियारों की सीधी आपूर्ति भी की। दुनिया में रेखांकित हो रहा है कि चीन निर्मित जिन हथियारों का पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ प्रयोग किया, वे सभी हथियार जल, थल और नभ में मौजूद पराक्रमी भारतीय सेना और प्रभावी भारतीय सैन्य व्यवस्था को किसी भी प्रकार की हानि पहुंचाने में नाकाम रहे। चीन अप्रत्यक्ष रूप से भारत को तेजी से आर्थिक शक्ति बनने से रोकना चाहता है। ऐसे में अब भारत के द्वारा पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबंधों की कड़ाई के साथ भारत के साथ शत्रुपूर्ण आचरण कर रहे चीन से वर्ष-प्रतिवर्ष तेजी से बढ़ते हुए आयातों को नियंत्रित करके चीन को भी आर्थिक सबक दिया जाना जरूरी है। हाल ही में प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक चीन के साथ द्विपक्षीय कारोबार में भारत लगातार घाटे की स्थिति में बना हुआ है। पिछले वित्त वर्ष 2024-25 में चीन को भारत का निर्यात 14.5 प्रतिशत घटकर 14.25 अरब डॉलर रह गया, जबकि 2023-24 में यह 16.66 अरब डॉलर था। इतना ही नहीं, चिंताजनक यह भी है कि चीन से 2024-25 में आयात 11.52 प्रतिशत बढकर 113.45 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2023-24 में यह 101.73 अरब डॉलर था। चीन के साथ व्यापार घाटा पिछले वित्त वर्ष में करीब 17 प्रतिशत बढकर 99.2 अरब डॉलर हो गया, जो 2023-24 में 85.07 अरब डॉलर था। चीन 2024-25 में 127.7 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा। दोनों देशों के

बीच 2023-24 में 118.4 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था।

चीन पर निर्भरता कम करने के जो रणनीतिक कदम उठाए गए हैं, उनका अभी जमीनी तौर पर कोई विशेष असर नहीं दिखा है। अब आतंकी देश पाकिस्तान को विश्व मंच पर खुला समर्थन दे रहे चीन के साथ कोई छह माह पूर्व भारत ने मित्रता की जिस राह को आगे बढ़ाया था, अब उस राह को रोकते हुए चीन के साथ कारोबार असंतुलन को कम करने के लिए हरसंभव कदम उठाए जाने जरूरी हैं। गौरतलब है कि पिछले वर्ष 31 अक्टूबर को खुशियों के महापर्व दीपावली के दिन भारत-चीन सीमा पर भारत-चीन दोनों देशों के सैनिकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर दीपावली मनाई थी। इस खुशी का कारण यह था कि पिछले वर्ष 23 अक्टूबर को रूस के कजान में 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच सार्थक और सफल द्विपक्षीय वार्ता हुई और पांच साल बाद हुई इस वार्ता में दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया था।

दोनों नेताओं ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैन्य गतिरोध को हल करने के लिए समझौते का स्वागत किया और अधिकारियों को लद्दाख में सीमा विवाद सुलझाने के लिए आगे बातचीत जारी रखने के निर्देश दिए। यही कारण रहा कि इस वार्ता के बाद सैन्य स्तर पर तत्परतापूर्वक क्रियान्वयन के साथ डेमचोक और डेपसांग मैदानी क्षेत्रों में टकराव वाले बिंदुओं से सैनिकों की पूर्ण वापसी के बाद से लगातार पेट्रोलिंग हो रही है। यद्यपि चीन से भारत के नए सैन्य समझौते के बाद भारत को चीन से आयातों के ढेर से बचने के लिए फूंक-फूंक कर कदम रखना जरूरी दिखाई दे रहा थे, लेकिन भारत ऐसा नहीं कर पाया और चीन से आयात माह-प्रतिमाह बढ़ते गए हैं। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि चीन पाकिस्तान को आतंकी प्रोत्साहन देते हुए भारत की तेजी से बढ़ती आर्थिकी की राह में बाधक बनना चाहता है।

चीन देख रहा है कि भारत आर्थिकी को तेजी से आगे बढ़ा रहा है और भारत अपनी बढ़ती आर्थिक साख व आर्थिक तेजी से इसी वर्ष 2025 में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिकी बनते हुए दिखाई देगा। 6 मई को प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की विश्व आर्थिक परिदृश्य से जुड़ी रिपोर्ट के अनुसार, भारत दुनिया की सबसे

तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना हुआ है। इसी वर्ष 2025 के अंत तक भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा। उस समय देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बढकर 4.187 ट्रिलियन डालर हो जाएगी और यह जापान की जीडीपी 4.186 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा होगी।

इतना ही नहीं, रिपोर्ट में कहा गया है कि विकास की ऊंची दर से भारत की जीडीपी 2028 में बढकर 5.584 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगी और भारत जर्मनी को पीछे छोडकर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसी तरह हाल ही में वैश्विक रेटिंग एजेंसी मॉर्निंगस्टार डीबीआरएस ने भारत की सॉवरेन रेटिंग को निम्नतम निवेश ग्रेड 'बीबीबी ;कमद्ध' से एक पायदान ऊपर उठाकर ष्बीबीबीष कर दिया है।

रेटिंग प्रवृत्ति को भी 'सकारात्मक' से 'स्थिर' कर दिया गया है। इस रेटिंग एजेंसी ने उन्नयन के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश और डिजिटलीकरण, राजकोषीय समेकन, व्यापक आर्थिक स्थिरता के साथ सतत उच्च विकास और एक लचीली बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से देश के संरचनात्मक सुधारों का हवाला दिया है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि दुनिया के उभरते हुए देशों की तुलना में भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से आगे बढ़ रही है। माह अप्रैल 2025 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का संग्रह 2.09 लाख करोड़ रुपए स्तर पर पहुंच गया, जो किसी महीने अभी तक का सर्वाधिक रिकॉर्ड राजस्व है। पिछले वर्ष 2024-25 में जीएसटी और इनकम टैक्स संग्रहण रिकॉर्ड ऊंचाई पर रहा है। निश्चित रूप से भारत को आर्थिक रूप से आगे बढ़ने से रोकने और भारत के साथ शत्रुपूर्ण व्यवहार कर रहे चीन से व्यापार घाटा कम करने के लिए सरकार के द्वारा और अधिक कारगर प्रयास करने होंगे। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि पिछले एक दशक से स्वदेशी उत्पादों को हरसंभव तरीके से प्रोत्साहित करके चीन से आयात घटाने के प्रयास हुए हैं। वर्ष 2019 और 2020 में चीन से तनाव के कारण जैसे-जैसे चीन की भारत के प्रति आक्रामकता और विस्तारवादी नीति सामने आई, वैसे-वैसे स्थानीय उत्पादों के उपयोग की लहर देश भर में बढ़ती हुई दिखाई दी। प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा बार-बार स्थानीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करने और वोकल फॉर लोकल मुहिम के प्रसार ने स्थानीय उत्पादों की खरीदी को पहले की तुलना में अधिक समर्थन दिया है।

अब एक बार फिर से देश के करोड़ों लोगों को चीनी उत्पादों की जगह स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के नए संकल्प के साथ आगे बढ़ना होगा। हम उम्मीद करें कि भारत के द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान पर प्रचंड प्रहार के दौरान पाकिस्तान के द्वारा जिस तरह चीन के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग हुआ है, उसके मद्देनजर भारत के द्वारा अब पाकिस्तान को आर्थिक प्रतिबंधों से पस्त करते हुए चीन से भी हरसंभव तरीके से आयात नियंत्रण किए जाएंगे। निश्चित रूप से चीन के लिए भारत के व्यापक बाजार में आयातों में कमी एक आर्थिक प्रहार के रूप में दिखाई देगी और इससे भारत के स्वदेशी उद्योग तथा एमएसएमई लाभान्वित होते हुए भी दिखाई देंगे।

टोल टैक्स पर फिर बढ़ीं दरें

अवकाश शर्मा

अगर आप अपने वाहन को लेकर हाई-वे पर जा रहे हैं तो अपने फास्ट टेग एकाउंट में रुपए ज्यादा डालकर निकलें। इसलिये कि पिछले महीने की 31 तारीख से टोल टैक्स बढ़ चुका है। अगर फास्ट टैग एकाउंट में पैसे कम हुए तो दोगुना टोल देना पड़ेगा।

जी हां, अगर आप अपने वाहन से नेशनल हाई-वे पर यात्रा करते हैं, तो आपके लिए यह जान लेना बहुत जरूरी है कि 31 मार्च से टोल टैक्स बढ़ चुका है। लम्बी दूरी वाले हाई-वे पर यात्रा करने वालों के लिये यह खबर ज्यादा खास है, क्योंकि इन मार्गों पर टोल की रकम कुछ ज्यादा ही होती है। मतलब स्पष्ट है कि वाहन मालिकों की जेब पर अच्छा-खासा असर पड़ेगा।

चौंकिये मत, यह हर साल होता है। हर वर्ष टोल कुछ न कुछ बढ़ जाता है। इस बार भी 31 मार्च की आधी रात से ऐसा ही किया गया। महंगाई बढ़ने और राजमार्गों की देखरेख, मरम्मत का खर्च बढ़ने व उनके कर्मचारियों का वेतन बढ़ाने के मकसद से ऐसा किया जाता है। यह अलग बात है कि कर्मचारियों का वेतन बढ़ता है या नहीं? हां, यह तो सच है कि राजमार्गों की मरम्मत के लिये इस्तेमाल होने वाली निर्माण सामग्री जरूर महंगी हो जाती है।

गौरतलब है कि गुरुग्राम सेक्शन में नेशनल हाई-वे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के चार प्रमुख टोल प्लाजा हैं। ये हैं दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर हिलालपुर गांव के पास, कुंडली-मानेसर-पलवल हाई-वे पर पचगांव, सोहना-घामडोज टोल और दिल्ली-जयपुर हाई-वे पर खेड़कीदौला। इन टोल प्लाजाओं पर टोल दरों में 10 प्रतिशत तक इजाफा किया गया है।

देश के बाकी सभी राजमार्गों पर इसी तरह टोल टैक्स बढ़ाया गया है। दिल्ली-जयपुर हाई-वे के प्रोजेक्ट डायरेक्टर आकाश पाढ़ी ने साफ किया है कि सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के नियमों के अनुसार हर वर्ष टोल दरों में बदलाव किया जाता है।

इस प्रक्रिया में वाहन चालकों से वसूली जाने

दो साल बाद बंद होंगे टोल प्लाजा

केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पिछले दिनों एसोचेम के आयोजित एक कार्यकम में कहा कि दो साल बाद राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल प्लाजा नहीं दिखाई देंगे। उन्होंने बताया कि केन्द्र सरकार सैटेलाइट सिस्टम के जरिये टोल वसूलने की तैयारी कर रही है। सरकार 'इलेक्ट्रॉनिक टोल कलेक्शन (ईटीसी)' नाम की एक नई तकनीक ला रही है। इससे टोल प्लाजा पर बिना रुके ही टोल का भुगतान किया जा सकेगा। यह फास्टैग जैसा ही है, लेकिन इसमें वाहन एक सेंकड के लिए भी नहीं रोकना पड़ेगा। इसे जीएनएसएस (ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम) भी कहा जाता है। अभी यह सिस्टम कहीं भी चालू नहीं है, लेकिन सरकार इस पर काम कर रही है। यह सिस्टम सस्ता होगा, क्योंकि इससे टोल प्लाजा पर काम करने वाले लोगों की जरूरत नहीं पड़ेगी। गडकरी की दी इस जानकारी के बाद देश में टोल प्लाजा कर्मचारियों में चिंता बढ़ी है।

वाली टोल राशि पर विस्तृत चर्चा की जाती है और उसके आधार पर नई दरें तय की जाती हैं। विस्तार से बढ़ते हुए, दिल्ली-अलवर एनएच-248ए के चार लेनीकरण की योजना को केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी की मंजूरी मिली है। कांग्रेस विधायक आफताब अहमद के पत्र के जवाब में इस योजना की पुष्टि की गई। यह परियोजना ईपीसी मोड पर आधारित है, जिससे इस मार्ग का विकास और देखरेख सुनिश्चित हो सकेगी। हाई-वेज पर टोल टैक्स की इस बढ़ोतरी से वाहन चालकों पर आर्थिक बोझ बढ़ना लाजिमी है। खासकर तब, जब पैट्रोल-डीजल की कीमतों में आग लगी हुई है। जाहिर है कि सड़क से यात्रा मंहगी होगी। यह वृद्धि विशेष रूप से उन लोगों के लिए चिंता का विषय हो सकती है, जिन्हें नियमित रूप से इन हाईवेज का उपयोग करना पड़ता है।

सरकार को टोल टैक्स से कितनी कमाई?

नेशनल हाई-वे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) के दिये आंकड़ों पर गौर करें तो उसे टोल प्लाजाओं से हर महीने 2237 करोड़, रुपए की कमाई होती है। सरकार का कहना है कि इस रकम से राष्ट्रीय राजमार्गों की मरम्मत और देखरेख की जाती है। राज्य सरकारें अपने राजमार्गों पर टोल दरें अलग से तय करती हैं। इसमें केन्द्र सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। यहां यह जान लेना भी जरूरी होगा कि केन्द्र हो या राज्य सरकारें, दोनों ज्यादातर पीपीपी मॉडल पर ही हाई-वे बनाती हैं। जाहिर है कि टोल से होने वाली कमाई का एक बड़ा हिस्सा राजमार्गों को बनाने वाली कम्पनियों को जाता है। बल्कि सरकार को कमाई का कुछ ही हिस्सा मिलता है, क्योंकि टोल नाकों पर तैनात होने वाले कर्मचारी और राजमार्गों की मरम्मत का काम निर्माण कम्पनियां ही करती हैं। आंकड़े बताते हैं कि टोल प्लाजा से होने वाली कमाई में यूपी सबसे आगे है। इस राज्य में 758 टोल प्लाजा हैं।

सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न समस्त मत पंथ विश्व में शांति चाहते हैं

भारत में सनातन हिंदू धर्म तो अनादि एवं अनंत काल से चला आ रहा है परंतु बाद के खंडकाल में भारत में कई अन्य प्रकार के मत पंथ भी विकसित हुए हैं जैसे बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म आदि। भारत में विकसित विभिन्न मत पंथ मूलतः सनातन हिंदू संस्कृति का ही अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं और ऐसा कहा जाता है कि यह समस्त मत पंथ सनातन हिंदू धर्म की विभिन्न धाराएं ही हैं। भारत में विकसित मत पंथ सामान्यतः अपने दर्शन, कर्मकांड एवं सामाजिक ताने बाने के दायरे में अपने धर्म का अनुपालन करते हैं।

भारत में हिंदू धर्म के सिद्धांतों पर चलने वाले नागरिकों की संख्या सबसे अधिक हैं एवं यह भारत का सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें विभिन्न देवी देवताओं और पूजा प्रथाओं की एक विस्तृत प्रणाली शामिल है। भारत में विकसित हुए मत पंथों में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के आधार पर हुई है। यह शिक्षाएं मानव जीवन से दुःख और उसके कारणों को दूर करने के सम्बंध में हैं। बौद्ध धर्म में ध्यान, प्रेम एवं करुणा पर जोर दिया जाता है। बौद्ध धर्म में कर्मकांड के महत्व को भी रेखांकित किया गया है परंतु इसका उद्देश्य ईश्वर की आराधना नहीं बल्कि मोक्ष की प्राप्ति करने से है। भारत में ही विकसित दूसरे महत्वपूर्ण मत पंथ, जैन धर्म में अहिंसा, आत्म संयम, सत्य एवं ईमानदारी पर अधिक जोर दिया जाता है। जैन धर्म में ऐसा माना जाता है कि मोक्ष की प्राप्ति स्वयं के प्रयासों से ही सम्भव है।

भारत में ही विकसित तीसरा महत्वपूर्ण मत पंथ है सिख धर्म जिसकी स्थापना श्री गुरु नानक देव जी ने की थी। सिख धर्म ईश्वर में विश्वास, सेवा, समानता एवं सत्यनिष्ठा पर आधारित है। सिख धर्म में ईश्वर की उपासना की जाती है परंतु यह उपासना कर्मकांड से परे हैं। भारत की सनातन हिंदू संस्कृति को पूरे विश्व में अति प्राचीन संस्कृति के रूप में देखा जाता है। मूल रूप से भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में आध्यात्म का विशेष महत्व है जिसके अंतर्गत वसुधैव कुटुंबकम, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, विश्व का कल्याण हो, किसी भी जीव का अहित न हो जैसे भावों पर अमल करने का प्रयास किया जाता है।

भारत में चूंकि मनुष्य के साथ साथ जीव जंतुओं, नदियों, पहाड़ों, पेड़ पौधों एवं जंगलों, आदि में भी ईश्वर का वास माना जाता है इसलिए किसी भी जीव को कोई क्षति न हो इस भावना को न केवल को आगे बढ़ाया जाता है बल्कि इस सिद्धांत पर अमल भी किया जाता है। इसीलिए भारत मूलतः शांतिप्रिय देश माना जाता है तथा भारत में

हिंसा के लिए तो कोई जगह ही नहीं है। भारत के धर्मग्रंथों में भी जाने अनजाने में भी की गई जीव हत्या को पाप की संज्ञा दी गई है। सनातन हिंदू संस्कृति के ग्रंथों, उपनिषदों, आदि द्वारा काम, कर्म एवं अर्थ को धर्म के साथ जोड़कर ही सम्पन्न करने के उपदेश दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत में वेद व्यास जी ने धर्म के आठ तरीके बताए हैं - (क) यज्ञ - जिसका आशय है कि ऐसा कर्म जो समाज के लाभ के लिए किया जाता है। (कक) दान - समाज की सहायता करना। (ककक) तप - अर्थात स्वयं में सुधार करते रहना, स्वयं का मूल्यांकन करना तथा नकारात्मक गुणों को दूर कर सकारात्मक गुणों का विस्तार करना। (कश) सत्यम् - सत्य के मार्ग पर चलना। (श) क्षमा -दूसरों तथा स्वयं को गलतियों के लिए क्षमा करना। (शक) दंभ - इंद्रियों को वश में रखना। (शकक) आलोभ - लालच नहीं करना एवं लालच में न आना। (शककक) अध्ययन - स्वयं और दुनिया का अध्ययन करना। सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायी सामान्यतः धर्म के उक्त वर्णित आठ तरीकों पर चलने का प्रयास करते पाए जाते हैं। धर्म की इस राह पर चलकर उन्हें समाज में शांति पूर्वक रहने की प्रेरणा मिलती है एवं अंततः उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही, विश्व के अन्य देशों में विकसित मत पंथों का अनुसरण करने वाले नागरिक भी भारत में पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं जैसे यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम के अनुयायी, आदि। विश्व के अन्य भागों में विकसित उक्त वर्णित मत पंथों को सेमेटिक रिलिजन की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इनकी साझा उत्पत्ति एवं कुछ सामान्य अवधारणाएं होती हैं, जैसे एक ही ईश्वर में विश्वास, नैतिकता एवं कर्मकांड। यहूदी धर्म एक धर्मग्रंथ (ताल्मुद) पर आधारित है। इस धर्मग्रंथ में यहूदी लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दशार्या गया है। यहूदी धर्म सेमेटिक धर्म की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें एक ईश्वर (येहव) में विश्वास, अनुष्ठान एवं नैतिक नियमों का पालन किया जाता है। ईसाई धर्म ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है, जो एक ईश्वर में विश्वास एवं ईसा मसीह के द्वारा उद्धार करने एवं उनके द्वारा ही मोक्ष करने पर जोर देता है। इसी प्रकार इस्लाम भी पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं पर आधारित है, जो कि एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास एवं कुरान का पालन करने पर जोर देता है। भारत में उत्पन्न विभिन्न धर्मों एवं मत पंथों में ईश्वर की अवधारणा विविध है, परंतु सेमेटिक धर्मों में केवल एक ईश्वर में ही विश्वास किया जाता है। भारतीय मत पंथों में कर्मकांड का महत्व कम है, जबकि सेमेटिक धर्मों में कर्मकांड की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारतीय मत पंथों में मोक्ष की प्राप्ति के विभिन्न मार्ग उपलब्ध हैं जिन पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है परंतु सेमेटिक धर्मों में मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर की कृपा से ही सम्भव है। भारतीय मत पंथों में विविध सामाजिक संरचना रहती है जबकि सेमेटिक धर्मों में एक समान सामाजिक संरचना रहती है एवं इसमें विविधता का अभाव है। भारत में उत्पन्न धर्मों एवं मत पंथों में तथा सेमेटिक धर्मों में सामाजिक संरचना एवं दर्शन भी अलग अलग है।

भारत के बारे में यह कहा जाता है कि यहां विविधता में भी एकता दिखाई देती है क्योंकि आज भारत में विभिन्न धार्मिक आस्थाओं एवं विभिन्न धर्मों की उपस्थिति तथा उनकी उत्पत्ति तो दिखाई ही देती है, साथ ही, व्यापारियों, यात्रियों, आप्रवासियों, एवं यहां तक कि आक्रमणकारियों द्वारा भी यहां लाए गए धर्मों को आत्मसात करते हुए उनका सामाजिक एकीकरण दिखाई देता है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिथ्य भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं, हालांकि, वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर-हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहां सभी धर्म समान हैं...। पूरे विश्व में संभवतः केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता को समाज द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है। सनातन हिंदू संस्कृति में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय नागरिक स्वयं को किसी न किसी धर्म से सम्बंधित अवश्य बताता है। इसी के चलते, भारतीय नागरिक विश्व के किसी भी कोने में चला जाय परंतु अपनी संस्कृति को छोड़ता नहीं है। इसी कारण से यह कहा जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर आज की परिस्थितियों की बीच केवल भारतीय सनातन संस्कृति के माध्यम से ही पूरे विश्व में एक बार पुनः शांति स्थापित की जा सकती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सौ साल का गौरवमयी इतिहास

देश को समर्पित भारतीय संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना के सौ साल पूरे हो चुके हैं। 100 वर्ष की लंबी यात्रा के बाद आज यह राष्ट्रवादी विचारधारा का सबसे मजूबत संगठनों में एक है। इसका उद्देश्य राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए देश में सनातन को सुरक्षित रखने के लिए हिन्दुस्तान व हिन्दुत्व के प्रति नागरिकों को उनके कर्तव्य के प्रति जागरुक करते हुए राष्ट्रभक्ति व हिन्दुत्व को बढ़ावा देना है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की 100वीं वर्षगांठ पर उसकी उपलब्धियों की बात करने से पहले यह बताना जरुरी है कि आरएसएस एक सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन है, जिसकी स्थापना 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने की थी। यह भारत का एक हिन्दू राष्ट्रवादी, अर्धसैनिक, स्वयंसेवक संगठन हैं, जो व्यापक रूप से भारत के सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी का पैतृक संगठन माना जाता हैं। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अपेक्षा संघ या आर.एस.एस. के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। बीबीसी के अनुसार संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संस्थान है, जिसका मुख्यालय नागपुर (महाराष्ट्र) में है। आरएसएस का उद्देश्य भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक

एन के शर्मा

एकता को बढ़ावा देना है।आरएसएस विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए काम करता है, जिनमें शाखाएं, संघ शिक्षा वर्ग और सेवा गतिविधियां शामिल हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को महासचिव सुरेश 'भैयाजी' जोशी व सरसंघचालक मोहन भागवत हैं। संबद्धता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर 1925 के पचास साल बाद जब 1975 में जब भारत सरकार ने ने आपातकाल की घोषणा की थी तब तत्कालीन सरकार ने जनसंघ पर भी संघ के साथ प्रतिबंध लगा दिया गया। आपातकाल हटने के बाद जनसंघ का विलय जनता पार्टी में हुआ। केन्द्र में मोरारजी देसाई के प्रधानमन्त्रित्व में मिलीजुली सरकार बनी। 1975 के बाद से धीरे-धीरे इस संगठन का राजनैतिक महत्व बढ़ता गया और इसकी परिणति भाजपा जैसे राजनैतिक दल के रूप में हुई, जिसे आमतौर पर संघ की राजनैतिक शाखा के रूप में देखा जाता है। संघ की स्थापना के 75 वर्ष बाद वर्ष 2000 में प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी क

नेतृत्व में केन्द्र में एनडीए की मिलीजुली सरकार बनी थी।

यदि हम आरआरएस के कार्यशैली की बात करें तो संघ में संगठनात्मक रूप से सबसे ऊपर

सरसंघचालक का स्थान होता है जो पूरे संघ का दिशा-निर्देशन करते हैं। सरसंघचालक की नियुक्ति मनोनयन द्वारा होती है। प्रत्येक सरसंघचालक अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करता है। वर्तमान में संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत हैं। संघ के ज्यादातर कार्यों का निष्पादन शाखा के माध्यम से ही होता है, जिसमें सार्वजनिक स्थानों पर सुबह या शाम के समय एक घंटे के लिये स्वयंसेवकों का परस्पर मिलन होता है। वर्तमान में पूरे भारत में संघ की लगभग पचपन हजार से ज्यादा शाखा लगती हैं। वस्तुतः शाखा ही संघ की वह बुनियाद है, जिसके ऊपर आज यह इतना विशाल संगठन खड़ा हुआ है। शाखा की सामान्य गतिविधियों में खेल, योग, वंदना और भारत एवं विश्व के सांस्कृतिक पहलुओं पर बौद्धिक चर्चा-परिचर्चा शामिल हैं।

ये वर्ग बौद्धिक और शारीरिक रूप से स्वयंसेवकों को संघ की जानकारी तो देते ही हैं साथ-साथ समाज, राष्ट्र और धर्म की शिक्षा भी देते हैं।

संघ की ओर से लगाये जाने वाले शिविरों में दीपावली वर्ग, शीत शिविर या (हेमंत शिविर), निवासी वर्ग, बौद्धिक वर्ग,शारीरिक वर्ग, संघ शिक्षा वर्गस प्राथमिक वर्ग, द्वितीय संघ शिक्षा वर्ग, तृतीय वर्ग होते हैं। इसका आयोजन हर साल नागपुर में ही होता है। इसी कार्यपद्धति को बनाए

रखते हुए यह आन्दोलन लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा घोषित लोक संघर्ष समिति तथा युवा छात्र संघर्ष समिति के नाम से ही चलाया। संगठनात्मक बैठकें, जन जागरण हेतु साहित्य का प्रकाशन और वितरण, सम्पर्क की योजना, सत्याग्रहियों की तैयारी, सत्याग्रह का स्थान, प्रत्यक्ष सत्याग्रह, जेल में गए कार्यकताओं के परिवारों की चिंता/सहयोग,प्रशासन और पुलिस की रणनीति की टोह लेने के लिए स्वयंसेवकों का गुप्तचर विभाग आदि अनेक कामों में संघ के भूमिगत नेतृत्व ने अपने संगठन कौशल का परिचय दिया।

इस आंदोलन में भाग लेकर जेल जाने वाले सत्याग्रही स्वयंसेवकों की संख्या डेढ़ लाख से ज्यादा थी। सभी आयुवर्ग के स्वयंसेवकों ने गिरफ्तारी से पूर्व और बाद में पुलिस के लॉकअप में यातनाएं सहीं। उल्लेखनीय है कि उस समय पूरे भारत में संघ के प्रचारकों की कुल संख्या 1356 थी (अनुषांगिक संगठनों के प्रचारक इसमें शामिल नहीं हैं) जिनमें से मात्र 169 को ही पुलिस पकड़ सकी, शेष भूमिगत रहकर आन्दोलन का संचालन करते रहे। स्वयंसेवकों ने विदेशों में भी जाकर इमरजेंसी को वापस लेने का दबाव बनाने का सफल प्रयास किया। विदेशों में इन कार्यकताओं ने भारतीय स्वयंसेवक संघ तथा फ्रेंड्स ऑफ इंडिया सोसायटी के नाम से विचार गोष्ठियों तथा साहित्य वितरण जैसे अनेक कामों को अंजाम दिया।

नेताओं के बिगड़े बोल से आहत होती राष्ट्रीयता

नफरती सोच एवं हेट स्पीच का बाजार बहुत गर्म है। राजनीति की सोच ही दूषित एवं घृणित हो गयी है। नियंत्रण और अनुशासन के बिना राजनीतिक शुचिता एवं आदर्श राजनीतिक मूल्यों की कल्पना नहीं की जा सकती।

सचिन तोमर

सेना के शौर्य पर सम्मान की बजाय अपमान के बिगड़े बोल को लेकर राजनीतिक घमासान छिड़ जाना स्वाभाविक है। कर्नल सोफिया और विंग कमांडर ब्योमिका सिंह के संबंध में क्रमशः मंत्री विजय शाह और सपा महासचिव राम गोपाल यादव द्वारा की गई टिप्पणियों पर राजनीतिक विवाद और कानूनी कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। बड़ा प्रश्न है कि क्या धर्म और जाति के नाम पर वोट के लिए सेना और सेना से जुड़ी बेटियों के सम्मान को चोट पहुंचाई जाना उचित है? चाहे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष वाणी का संयम अपेक्षित है। भारतीय राजनीति में बिगड़े बोल, असंयमित भाषा एवं कड़ावपन की मानसिकता चिन्ताजनक है। ऐसा लगता है ऊपर से नीचे तक सड़कछाप भाषा ने अपनी बड़ी जगह बना ली है। यह ऐसा समय है जब शब्द सहमे हुए हैं, क्योंकि उनके दुरूपयोग की घटनाएं लगातार जारी हैं।

जब देश पहलगाम की त्रासद घटना एवं उसके बाद पाकिस्तान से बदला लेने की शौर्य की महत्वपूर्ण घटना के मोड़ पर खड़ा है, तब कुछ नेताओं के बिगड़े बोल बहुत दुखद और निंदनीय हैं। मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार के एक मंत्री विजय शाह एवं समाजवादी पार्टी के रामगोपाल यादव के खिलाफ गुस्सा बढ़ता जा रहा है। विजय शाह को राज्य मंत्रिमंडल से हटाने की मांग तेज हो गई है। कर्नल सोफिया कुरैशी के खिलाफ विजय शाह की विवादास्पद टिप्पणी एक ऐसा दाग है, जिसे आसानी से नजरंदाज नहीं किया जा सकता। यह मामला सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचा और मामला भी दर्ज हो गया, तो आश्चर्य नहीं। देश के नेताओं व मंत्रियों को ऐसी हल्की और स्तरहीन बातों से परहेज करना चाहिए। नफरती सोच एवं हेट स्पीच का बाजार बहुत गर्म है। राजनीति की सोच ही दूषित एवं घृणित हो गयी है। नियंत्रण और अनुशासन के बिना राजनीतिक शुचिता एवं आदर्श राजनीतिक मूल्यों की कल्पना नहीं की जा सकती। नीतिगत नियंत्रण या अनुशासन लाने के लिए आवश्यक है सर्वोपरि राजनीतिक स्तर पर आदर्श स्थिति हो, अनुशासन एवं संयम हो, तो नियंत्रण सभी स्तर पर स्वयं रहेगा और इसी से देश एक आदर्श लोकतंत्र को स्थापित करने में सक्षम हो सकेगा। युद्ध जैसे माहौल में सेना एवं उसके नायकों का मनोबल बढ़ाने की बजाय

उनके साहस एवं पराक्रम पर छींटाकशी करना दुर्भाग्यपूर्ण है। चर्चा में बने रहने के लिए ही सही, राजनेताओं के विवादित बयान गाहे-बगाहे सामने आ ही जाते हैं, लेकिन ऐसे बयान एक ऐसा परिवेश निर्मित करते हैं जिससे राजनेताओं एवं राजनीति के लिये घृणा पनपती है। यह सही है कि शब्द आवाज नहीं करते, पर इनके घाव बहुत गहरे होते हैं और इनका असर भी दूर तक पहुंचता है और देर तक रहता है। इस बात को राजनेता भी अच्छी तरह जानते हैं इसके बावजूद जुबान से जहरीले बोल सामने आते ही रहते हैं।

यह चिंताजनक है कि इधर के वर्षों में कुछ भी बयान दे देने की बुरी आदत बढ़ रही है। बिगड़े बोल वाले नेता बेलगाम हो रहे हैं। कोई दो राय नहीं कि पहले राजनीतिक दलों और उसके बाद सरकारों को इस मोर्चे पर अनुशासन एवं वाणी संयम का बांध बांधना चाहिए। विजय शाह करीब आठ बार चुनाव जीत चुके हैं, मतलब, अनुभवी नेता हैं, तो क्या वह चर्चा में रहने के लिए बिगड़े बोल का सहारा लेते हैं? सर्वोच्च न्यायालय में खिंचाई के बाद अब वह सफाई देने में लगे हैं। उन्होंने स्पष्टीकरण जारी करते हुए कहा है कि उनकी टिप्पणियों को संदर्भ से बाहर ले जाया गया और उनका मकसद कर्नल कुरैशी की बहादुरी की प्रशंसा करना था। उन्होंने यह भी कहा कि कर्नल सोफिया कुरैशी मेरी सगी बहन से भी बढ़कर हैं। वह माफी भी मांग रहे हैं, तो साफ है कि उनका पद खतरे में है। अगर वह पहले ही सावधानी बरतते या गलती होते ही माफी मांग लेते, तो मामला इतना नहीं बढ़ता। विजय शाह का मामला थमा भी नहीं है कि मध्य प्रदेश के ही उप- मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने भी बिगड़े बोल को अंजाम दे दिया है। उनका मानना है कि देश की सेना प्रधानमंत्री के सामने नतमस्तक है। वास्तव में, ऐसी गलतबयानी से किसी के भी सम्मान में वृद्धि नहीं होती है। देश अभी-अभी एक संघर्ष से निकला है। यह एकजुटता और परस्पर समन्वय बढ़ाने के लिए संभलकर बोलने का समय है। राष्ट्रीय एकता एवं राजनीतिक ताने-बाने को ध्वस्त कर रहे जहरीले बोल की समस्या दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है।

संकीर्णता एवं राजनीति का उन्माद एवं 'हेट स्पीच' के कारण न केवल विकास बाधित हो रहा है, सेना का मनोबल प्रभावित हो रहा है, बल्कि देश की एकता एवं अखण्डता भी खण्ड-खण्ड होने के कगार पर पहुंच गयी है। राजनेताओं के नफरती, उन्मादी, द्वेषमूलक और भड़काऊ बोलों को लेकर सर्वोच्च न्यायालय ने भी कड़ी टिप्पणियां की है। भाषा की मयार्दा सभी स्तर पर होनी चाहिए। कई बार आवेश में या अपनी बात कहने के चक्कर में शब्दों के चयन के स्तर पर कमी हो जाती है और इसका घातक परिणाम होता है। मुद्दों, मामलों और समस्याओं पर बात करने की बजाय जब नेता एक-दूसरे पर निजी हमले करने लगें तो यह उनकी हताशा, निराशा और कुंठा का ही परिचायक होता है। यह आज के अनेक नेताओं की आदत सी बन गई है कि एक गलती या झूठ छिपाने के लिए वे गलतियों और झूठ का अंबार लगा देते हैं। क्या यह सत्ता का अहंकार एवं नशा है? संसद में गलती एक बार अटल बिहारी वाजपेयी से भी हुई थी, उन्होंने तत्काल सुधार करते हुए कहा था कि चमड़े की जुबान है, फिसल जाती है। बेशक, अच्छा नेता वही होता है, जो गलतियां नहीं करता और अगर गलती हो जाए, तो तत्काल सुधारता है।

जिम्मेदार पदों पर बैठे नेताओं को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि उनके अच्छे-बुरे बोल व गलत-सही कारनामे इतिहास में दर्ज हो रहे हैं। ध्यान रखना होगा, पहले केवल शब्द वायरल होते हैं, पर अब शब्द के साथ वीडियो भी वायरल होता है। ध्यान रहे, समय के साथ मीडिया का बहुत विस्तार हुआ है और उसका एक बड़ा हिस्सा ऐसी ही गलतबयानी का भूखा है। उसे ऐसे ही बिगड़े बोल वाले कंटेंट की तलाश है। अतः कम से कम देश के जिम्मेदार दलों के नेताओं को कोई भी राष्ट्र-विरोधी अप्रिय या प्रतिकूल ध्वनि नहीं पैदा करनी चाहिए। अनेक राजनीतिक दलों के नेता ऐसे वक्तव्य देते हैं और विवाद बढ़ता देख बाद में सफाई देने से भी नहीं चूकते। वोट के लिए धर्म, सम्प्रदाय, जाति, समाज किसी को भी नहीं छोड़ा जा रहा। पार्टी कोई सी भी हो, नेता अपने विरोधियों के खिलाफ जहर उगलने से नहीं चूकते लेकिन सेना नायकों पर टिप्पणियां बहुत ही घातक है।

नेता चाहे सत्ता पक्ष से जुड़े हों या प्रतिपक्ष से, अक्सर वाणी असंयम एवं बिगड़े बोल में हदें पार कर देते हैं। सुप्रीम कोर्ट के समय-समय पर दिए गए निदेर्शों की भी इन्हें परवाह नहीं है। पूरे विश्व में आज जब हिंदुस्तान का डंका बज रहा है, तो देश के भीतर और देश के बाहर बैठी 'भारत विरोधी शक्तियां' एकजुट होकर राष्ट्रीय एकता एवं लोकतांत्रित मूल्यों के ताने-बाने को क्षत-विक्षित करना चाहती है। ऐसी शक्तियां किसी भी तरह भारत से विकास का एक कालखंड छीन लेना चाहती हैं। उन्हें नेताओं के बिगड़े बोलों से ऊर्जा मिलती है। सोचने की बात तो यह है कि राजनीतिक भावनाओं एवं नफरती सोच को प्रश्रय देने वाले नेताओं का भविष्य भी खतरे से खाली नहीं हैं। उनका भविष्य कालिमापूर्ण है। उनकी नफरती कोशिशों पर देश एवं दुनिया की नजरे टिकी हैं। वे क्या बोलते हैं, क्या सोचते हैं, इसी से भारतीय लोकतंत्र की गरिमा दुनिया में बढ़ सकती है। जरूरत है कि हमारे राजनीति दल अपनी सोच को परिपक्व बनाये, मतभेदों को स्वीकारते हुए मनभेद को न पनपने दे।

'राजनीतिक सिस्टम' की रोग मुक्ति, स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का आधार होगा। राष्ट्रीय चरित्र एवं राजनीतिक चरित्र निर्माण के लिए नेताओं एवं उनके दलों को आचार संहिता से बांधना ही होगा। अब तो ऐसा भी महसूस होने लगा है कि देश की दंड व्यवस्था के तहत जहां 'हेट स्पीच' या बिगडे. बोल को नये सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है वहीं इस समस्या से निपटने के लिए 'हेट स्पीच' एवं बिगडे.बोल को अलग अपराध की श्रेणी में रखने के लिए कानून में संशोधन का भी वक्त आ गया है?

भारत की वॉटर स्ट्राइक से बिलबिलाने लगा पाक

अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा पोषित और प्रेषित आतंकियों ने निर्दोष नागरिकों का धर्म पूछकर नृशंस हत्या की। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने जहां पाकिस्तान को सैन्य मोर्चे पर तबाह कर दिया वहीं, उससे पहले सिंधु जल समझौते को स्थगित करने के फैसले से पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसा दिया है। भारत ने सिंधु जल संधि को ऐसे समय में निलंबित किया है जब पाकिस्तान पहले से ही जल संकट का सामना कर रहा है। पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांत में छह नई नहरें बनाने की योजना भी विवादों में फंसी है।

इतिहास के आलोक में अगर बात की जाए तो सिंधु जल समझौते के अंतर्गत भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु घाटी को 6 नदियों में विभाजित करने को लेकर नौ साल तक वार्ता चली और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री रहे जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति अयूब खान के मध्य 19 सितंबर 1960 में सिंधु जल संधि विश्व बैंक की मध्यस्थता से कराची में समझौता हुआ। इस संधि के तहत सिंधु बेसिन की तीन पूर्वी नदियों रावी, ब्यास और सतलुज का पानी भारत को आवंटित किया गया।

वहीं तीन पश्चिमी नदियों सिंधु, झेलम और चिनाब के जल का 80 फीसदी हिस्सा पाकिस्तान को आवंटित किया गया। समझौते में जिस तरह से जल का बंटवारा किया गया उससे तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री और सरकार की रीति–नीति का समझा जा सकता है। पीएम नेहरू ने देशहित की बजाय पाकिस्तान के हितों का अधिक ध्यान रखा। यह संधि पाकिस्तान में कृषि और हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट के लिए बहुत अहम है और पाकिस्तान में 80 प्रतिशत सिंचाई के पानी की आपूर्ति इन्हीं नदियों के पानी से होती है। कई शहरों के लिए पेयजल की आपूर्ति भी इस नदी से की जाती है।

भारत और पाकिस्तान के बीच 65 साल पहले हुई इस जल संधि के तहत दोनों देशों के बीच नदियों के जल प्रबंधन को लेकर समझौता हुआ था। नदियों को बांटने का ये समझौता कई युद्धों, मतभेदों और झगड़ों के बावजूद 65 वर्षों से अपने स्थान पर यथावत रहा।

लेकिन जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए हमले में 26 लोगों के मारे जाने के बाद भारत ने जिन कड़े कदमों की घोषणा की उनमें यह सबसे बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है। भारत द्वारा संधि को निलंबित करना इसकी स्थापना के बाद से

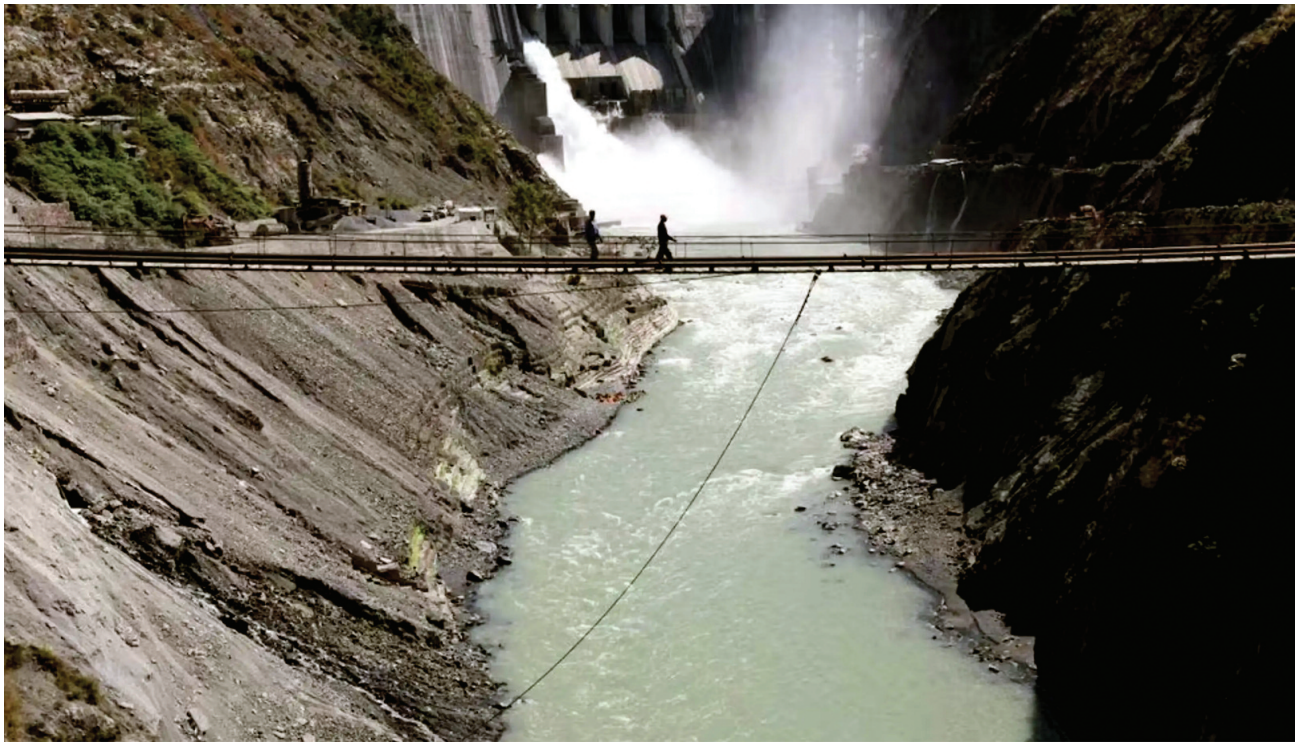

पहली बार है, जो सीमा पार आतंकवाद से जुड़ी जल कूटनीति में बदलाव का संकेत है। यह भारत के दृष्टिकोण में बदलाव को दशार्ता है। 2016 में उरी में भारतीय सेना के एक शिविर पर हमले के बाद डेढ़ सप्ताह बाद हुई एक समीक्षा बैठक में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, "खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते हैं।" प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान का इशारा सिंधु जल समझौते की ही ओर था। 2019 में पुलवामा में सुरक्षाबलों पर हमले के बाद केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बयान देते हुए कहा था, 'सरकार ने पाकिस्तान को पानी के वितरण को रोकने का फैसला किया है।' अगस्त 2019 में भारत के तत्कालीन जल संसाधन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा था, 'सिंधु जल संधि का उल्लंघन किए बिना पाकिस्तान को जाने वाले पानी को रोकने के लिए काम शुरू हो गया है।

भारतीय सेना से करारी शिकस्त के बाद पाकिस्तान अब पानी को लेकर भारत के सामने गिड़गिड़ाने लगा है। पाकिस्तान की सरकार ने 14 मई को भारत के जल शक्ति मंत्रालय को चिट्ठी लिखकर सिंधु जल समझौते को स्थगित करने को लेकर दोबारा विचार करने की अपील की है। वहीं, एक महत्वपूर्ण बात और भी है कि पाकिस्तान की ये अपील तब की गई जब भारत चिनाब नदी पर बगलिहार और सलाल जलविद्युत परियोजनाओं में फ्लशिंग और डिसिल्टिंग का काम शुरू कर दिया है।

पाकिस्तान के जल संसाधन सचिव सय्यद अली मुर्तजा ने भारत को लिखी चिट्ठी में कहा, 'सिंधु जल समझौता स्थगित होने की वजह से पाकिस्तान में खरीफ की फसल के लिए पानी का बड़ा संकट खड़ा हो गया है।' पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने 13 मई को कहा कि अगर भारत सिंधु जल संधि को फिर से शुरू नहीं करता है और हमारी तरफ आने वाले पानी को मोड़ने की कोशिश करता है तो दोनों देशों के बीच लागू हुआ संघर्ष विराम खतरे में पड़ सकता है। सिंधु जल संधि पर चर्चा के लिए पाकिस्तान की ये पेशकश उसकी छटपटाहट को साफ दिखा रही है। यह पहली बार नहीं था जब भारत सरकार ने 1960 में दोनों देशों के बीच हुई इस संधि में बदलाव की मांग की थी। दो साल पहले भारत ने पाकिस्तान को इस संबंध में नोटिस भेजा था लेकिन इस नोटिस में सिर्फ 'बदलावों'

के बारे में बात की गई थी। हालांकि अगस्त 2024 में भेजे नोटिस में भारत ने बदलावों के साथ-साथ समझौते की 'समीक्षा' करने की भी बात की थी। इसमें 'सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों' का भी उल्लेख किया गया था। इसमें भी भारत की ओर से कहा गया था कि 'सीमा पार से आतंकवाद' इस समझौते के सुचारू रूप से संचालन में बाधा है। लेकिन पाकिस्तान ने इस पर कोई उत्तर नहीं दिया, अब जबकि भारत ने समझौते को स्थगित कर दिया है तो पाकिस्तान घुटनों पर आ गया है।

15 मई को एक कार्यक्रम में संवाददाताओं ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर से जब सिंधु जल समझौते को लेकर प्रश्न किया, तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि यह समझौता अभी निरस्त ही रहेगा। भारत सरकार इस पर पुनर्विचार करने के लिए तैयार नहीं है और इस मामले में पाकिस्तान के साथ बातचीत नहीं होगी। विदेश मंत्री के ताजा बयान से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्र के नाम संबोधन में स्पष्ट कर चुके हैं कि खून और पानी साथ नहीं बह सकते हैं। सिंधु जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान की जल सुरक्षा को खतरा है, क्योंकि इसकी 80 प्रतिशत कृषि भूमि इन नदियों पर निर्भर है।

इस व्यवधान से खाद्य सुरक्षा, नगरीय जल आपूर्ति और विद्युत उत्पादन पर प्रभाव पड़ेगा साथ ही पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद में सिंधु नदी तंत्र के 25 प्रतिशत योगदान के कारण आर्थिक अस्थिरता भी उत्पन्न होगी। नदी प्रवाह डेटा को रोकने की भारत की क्षमता से पाकिस्तान की सुभेद्यता और बढ़ जाएगी तथा बाढ़ तत्परता और जल संसाधन प्रबंधन में बाधा उत्पन्न होगी। भावार्थ यह है कि आने वाले समय में पाकिस्तान में जल संकट से सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याएं बढ़ना तय है। पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांत में जल बंटवारे को लेकर पुराना विवाद है। वर्तमान जल संकट ये विवाद और गहराएगा।

भारत अब अपने हिस्से की तीनों नदियों रावी, ब्यास और सतलुज के जल को अपने लिए प्रयोग करने की योजना बना रहा है। इस पर तुरंत काम शुरू कर दिया गया है। इसके अलावा, मध्यकालिक और दीर्घकालिक योजनाओं को भी अंतिम रूप दिया जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत के इन कदमों से पाकिस्तान को लंबे समय में नुकसान पहुंचना अवश्यम्भावी है।

राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट तौर पर कहा कि पाकिस्तान से बात होगी.. तो टेरेरिज्म पर होगी... पाकिस्तान से बात होगी..तो पीओके पर होगी। अब पाकिस्तान को यह तय करना है कि वो आतंकवादियों का साथ देगा या फिर अपने प्यासे खेतों और नागरिकों की प्यास बुझाने के लिये शांति और शालीनता के मार्ग का चुनाव करेगा।

'ऑपरेशन सिंदूर' छेड़ोगे

ललित कुमार

तो छोड़ेंगे नहीं

पहलगाम में हुए बर्बर हमले के बाद भारतीय सेना की यह एयर स्ट्राइक आतंकियों पर जवाबी कार्रवाई है जिसके चलते ही लगता है कि इस 'ऑपरेशन' का नाम 'सिंदूर' रखा गया है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से भारत के जांबाजों ने दुनिया को स्पष्ट संदेश दे दिया है कि भारत को छेड़ोगे तो हम छोड़ेंगे नहीं बल्कि घर में घुसकर मारेंगे।

भारतीय वीरों की पाक को दो टूक 'छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं, घर में घुसकर मारेंगे'

प्रेस ब्रीफिंग में विदेश सचिव विक्रम मिस्री, कर्नल सोफिया कुरैशी व विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने यह साफ कर दिया कि भारत के जांबाजों ने पीओके में की गयी 9 ठिकानों एयर स्ट्राइक में पहलगाम आतंकी हमले के साथ-साथ मुंबई हमले से लेकर के अन्य तमाम हमलों का हिसाब बराबर करने का कार्य किया है।

7 मई की सुबह जब देशवासियों की आंखें नींद से खुली, तो देश व दुनिया की मीडिया व सोशल मीडिया के प्लेटफार्म भारत की शौर्य गाथा को बयान कर रहे थे, मीडिया के माध्यम से दुनिया को पता चला कि मां भारती के वीर सपूतों ने एक बार फिर से पाक व पीओके में एयर स्ट्राइक कर दी है, भारत के वीरों ने पाकिस्तान में आतंकवादियों के ठिकानों पर जमकर के कहर बरपाने का कार्य कर दिखाया है। सूर्य उदय के साथ दिन ही देश व दुनिया में भारत की आतंकियों के खिलाफ की गयी बड़ी कार्रवाई ₹ऑपरेशन सिंदूर₹ की गूंज जमकर सुनाई दे रही है। मां भारती के वीर सपूतों की टोली ने 22 अप्रैल 2025 को कश्मीर के पहलगाम की ₹बैसरन घाटी₹ में पाकिस्तान के पिट्ठुओं आतंकियों के द्वारा पर्यटकों पर हमला करके की गयी कायराना हरकत का मूंह तोड़ जवाब देने का कार्य वीरता के साथ किया है। लेकिन भारत के वीर सपूतों की पाक परस्त आतंकवादियों के खिलाफ की गयी इस बहुत बड़ी कार्रवाई पर भारत सरकार की अधिकारिक मौहर लगना अभी भी बाकी था, इस ज्वलंत मसले पर पूरी दुनिया भारत सरकार के आधिकारिक रुख को देखना चाहती थी।

पल-पल इंतजार के बाद आखिर वह घड़ी आ ही गयी, जब भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की ऑफीशियल प्रेस ब्रीफिंग होने की सूचना आयी। प्रेस ब्रीफिंग में भारत सरकार के विदेश सचिव विक्रम मिस्री, भारतीय सेना की तरफ से कर्नल सोफिया कुरैशी व वायुसेना की तरफ से विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने सुबह 10.30 बजे

पीएम मोदी ने साफ किया कोई न्यूक्लियर धमकी नहीं चलेगी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम देने के बाद 12 मई को देश को संबोधित किया। पीएम मोदी ने अपने संबोधन में पाकिस्तान को यह साफ संदेश दे दिया है कि भारत पाकिस्तान की किसी गीदड़ भभकी से डरने वाला नहीं है। भारत कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल सहन नहीं करेगा। पीएम मोदी ने कहा कि भारत के ड्रोन, मिसाइलों ने पाकिस्तान में इतनी सटीकता से हमला किया, पाकिस्तानी वायुसेना के एयरबेस को नुकसान पहुंचाया, जिस पर पाकिस्तान को बहुत घमंड था। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत जवाबी कार्रवाई के पहले 3 दिनों में ही पाकिस्तान को इतना नुकसान पहुंचाया, जिसका उसे अंदाजा भी नहीं था। उन्होंने कहा कि भारत की आक्रामक कार्रवाई के बाद पाकिस्तान बचने के रास्ते तलाशने लगा। पाकिस्तान दुनियाभर में तनाव कम करने के लिए गुहार लगा रहा था और बुरी तरह से पीटने के बाद इसी मजबूरी में 10 मई की दोपहर को पाकिस्तानी सेना ने हमारे डीजीएमओ को संपर्क किया, लेकिन तब तक हम बड़े पैमाने पर आतंकी इंफ्रास्ट्रक्चर को तबाह कर चुके थे, आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया गया था। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के सीने में बसाए गए आतंकी अड्डों को हमने खंडहर बना दिया था इसलिए जब पाकिस्तान की तरफ से गुहार लगाई गई और जब पाकिस्तान की तरफ से यह कहा गया कि उसकी ओर से आगे कोई आतंकी गतिविधि और सैन्य दुस्साहस नहीं दिखाया जाएगा तो भारत ने भी उसपर विचार किया।

हमने ऑपरेशन सिंदूर को अभी सिर्फ स्थगित किया है: पीएम मोदी

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में पाकिस्तान की यह चेतावनी भी दी कि अभी भारत ने अपनी कार्रवाई को खत्म नहीं किया है। उन्होंने कहा कि हम पाकिस्तान के आतंकी और सैन्य ठिकानों पर अपनी जवाबी कार्रवाई को अभी सिर्फ स्थगित किया है। आने वाले दिनों में हम पाकिस्तान के हर कदम को इस कसौटी पर मापेंगे कि वो क्या रवैया अपनाता है।

भारत के जांबाजों के द्वारा पाक व पीओके में चुनिंदा आतंकवादियों के लक्षित एयर स्ट्राइक 'ऑपरेशन सिंदूर' के वारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रेस ब्रीफिंग में सर्वप्रथम दशकों से चली आ रही पाकिस्तानी के द्वारा भारत में प्रायोजित आतंकवाद पर शार्ट फिल्म दिखाई गयी। उसके बाद विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने ब्रिफिंग में एयर स्ट्राइक के वारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

'प्रेस ब्रीफिंग में विदेश सचिव विक्रम मिस्री के द्वारा कही गई बातों का मूल सार यह है कि 'पहलगाम में हमला अत्यंत बर्बरतापूर्ण था, जिसमें पीड़ितों को बहुत नजदीक से सिर में गोली मारकर और उनके परिवार के सामने मारा गया, इस आतंकी घटना के पीड़ितों के माध्यम से आतंकियों के द्वारा मोदी सरकार को संदेश देने को कहा गया, यह हमला स्पष्ट रूप से कश्मीर में सामान्य स्थिति को कमजोर करने के उद्देश्य से व देश में दंगा फसाद करवाने के उद्देश्य से किया गया था।'

विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने बताया कि भारत सरकार ने यह जरूरी समझा कि पहलगाम हमले के साजिशकताओं और साजिशकताओं को न्याय के कटघरे में लाया जाए। लेकिन एक पखवाड़ा बीत जाने के बाद भी पाकिस्तान की ओर से अपने क्षेत्र में चल रहे आतंकवादी ढांचे के खिलाफ कोई भी ठोस कदम धरातल पर नहीं उठाया गया। जिसके चलते ही भारत सरकार ने पाकिस्तान व पीओके में छिपकर बैठे आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए ₹ऑपरेशन सिंदूर₹ के अंतर्गत लक्षित ठिकानों पर एयर स्ट्राइक करने का कार्य करके दुश्मनों के ठिकानों को ध्वस्त कर दिया।

प्रेस ब्रीफिंग में विदेश सचिव विक्रम मिस्री, कर्नल सोफिया कुरैशी व विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने यह साफ कर दिया कि भारत के जांबाजों ने पीओके में की गयी 9 ठिकानों एयर स्ट्राइक में पहलगाम आतंकी हमले के साथ-साथ मुंबई हमले से लेकर के अन्य तमाम हमलों का हिसाब बराबर करने का कार्य किया है।

उन्होंने आगे कहा कि पाकिस्तान आतंकवादियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बना हुआ है। प्रेस ब्रीफिंग के दौरान भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी व विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने एयर स्ट्राइक के वारे में विस्तार से बताते हुए देश व दुनिया को यह भी बताया कि आखिर भारतीय सेना ने पाकिस्तान व पीओके के 9 ठिकानों को ही निशाना क्यों बनाया है। उन्होंने बताया कि 'ऑपरेशन सिंदूर' पहलगाम हमले के पीड़ितों को न्याय देने के लिए चलाया गया, यह ऑपरेशन 6-7 मई 2025 की रात 1.05 से 1.30 बजे तक कुल 25 मिनट तक चला, जिसके माध्यम से आतंकियों के ट्रेनिंग सेंटर, लॉन्च पैड को भारतीय जांबाजों ने हमला करके तबाह करने का कार्य किया। उन्होंने बताया कि हमने उन आतंकी ठिकानों पर भी हमला किया है, जहां

कसाब, हेडली ने ट्रेनिंग ली थी। उन्होंने दुनिया को यह भी बताया की हमने पाकिस्तान ने किसी भी सैन्य या नागरिक ठिकानों को निशाना नहीं बनाया है। हमने एयर स्ट्राइक के माध्यम से पाक व पीओके में फल-फूल रहे आतंकवादी शिविरों को निशाना बनाकर नष्ट किया है। यहां आपको बता दें कि आतंकवादियों की सुरक्षित पनाहगाह पीओके व पाकिस्तान में पाक हुक्मरानों की कृपा से आतंकवादियों की ट्रेनिंग के लिए पिछले कई दशकों में बड़े पैमाने पर इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया है, जो निर्माण कार्य अब भी बेखौफ निरंतर जारी है।

'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सशस्त्र बलों के द्वारा पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) व पाकिस्तान में बने बेहद अहम आतंकवादी ठिकानों का ध्वस्त किया गया है, भारत ने सबसे पहले सवाई नाला कैंप मुजफ्फराबाद जोकि एलओसी से लगभग 30 किमी दूर है और लश्कर तैयबा को ट्रेनिंग सेंटर है, उसको तबाह करने का कार्य किया, इस कैंप में ही 20 अक्तूबर 2024 सोनमर्ग, 24 अक्तूबर 2024 गुलमर्ग, 22 अप्रैल 2025 पहलगाम हमले के आतंकियों ने ट्रेनिंग ली थी।

मुजफ्फराबाद स्थित सैयदना बिलाल कैंप, जैश ए मोहम्मद का स्टेजिंग एरिया है, यहां से आतंकियों को जंगल ट्रेनिंग और हथियार आदि मुहैया कराये जाते थे।

गुलपुर कैंप, कोटली में लश्कर का बेस कैंप था, जो राजौरी और पुंछ में सक्रिय था, यही पर 20 अप्रैल 2023 पुंछ और 9 जून 2024 तीर्थयात्रियों को बस हमले के आतंकियों को ट्रेनिंग दी गयी थी।

अब्बास कैंप कोटली में लश्कर की फिदायीन टीम तैयार होती थी, जिसको तबाह कर दिया गया है।

बरनाला कैंप, यह एलओसी के निकट स्थित आतंकियों का एक महत्वपूर्ण लॉन्च पैड है, यहां से अकसर आतंकियों को भारत में घुसपैठ कराई जाती है। देश में कई आतंकी हमलों में शामिल आतंकी यही से निकले हैं।

भारतीय जांबाजों ने पाकिस्तान के सियालकोट में स्थित सरजल कैंप पर भी एयर स्ट्राइक की है, इस कैंप से ट्रैंड किये गये आतंकियों ने ही मार्च

पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार की गीदड़ भभकी

भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर को लेकर समझौता हुआ है, लेकिन वह सुधरने का नाम नहीं ले रहा है। पाक विदेश मंत्री इशाक डार ने एक बार फिर से गीदड़ भभकी दी है। उन्होंने कहा कि अगर सिंधु जल संधि का मसला हल नहीं हुआ तो इसका मतलब नहीं रह जाएगा। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने हाल ही में सीएनएन को एक इंटरव्यू दिया। उन्होंने इसमें कहा कि अगर भारत और पाकिस्तान के सिंधु जल संधि को लेकर मसला नहीं सुलझा तो सीजफायर खतरे में पड़ सकता है। अगर यह मामला हल नहीं हुआ तो इसे 'एक्ट ऑफ वॉर' माना जाएगा। पाकिस्तान इससे पहले भी जल संधि को लेकर गीदड़ भभकी दे चुका है। यहां तक की पाकिस्तान के कई नेता भारत को परमाणु बम की धमकी दे चुके हैं। भारत ने पहलगाम आतंकी हमले का बदला ऑपरेशन सिंदूर के जरिए लिया। इससे पाकिस्तान को काफी नुकसान हो गया। पाक ने खुद यह बात मानी है। उसने कहा कि भारत की जवाबी कार्रवाई में उसके 11 जवान मारे गए हैं और 70 से ज्यादा जवान घायल भी हुए हैं। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाक और पीओके में स्थित 9 आतंकी ठिकानों को तबाह किया था।

2025 में जम्मू और कश्मीर पुलिस के चार जवानों की हत्या की थी।

महमूना जोया कैंप, सियालकोट

यहां पर हिजबुल मुजाहिदीन का बहुत बड़ा कैंप था, जो कठुआ व जम्मू आदि क्षेत्र में आतंक फैलाने का एक महत्वपूर्ण कंट्रोल रूम था, पंजाब स्थित पठानकोट एयरबेस पर हमला का यहीं प्लान किया गया था।

मरकज तैयबा, मुरीदके में 2008 के मुंबई हमले के आतंकियों ने ट्रेनिंग ली थी, अजमल कसाब और डेविड हेडली जैसे आतंकी यहीं ट्रैंड किये गये थे।

मरकज सुभान अल्लाह, बहावलपुर, जैश-ए-मोहम्मद का हैडक्वार्टर था, इस कैंप में आतंकियों की भर्ती करके उन्हें ट्रेनिंग दी जाती थी।

सूत्रों से खबर आ रही हैं कि भारत वीरों की एयर स्ट्राइक से पीओके व पाकिस्तान के आतंकी कैंपों में भयंकर तबाही हुई है, वहां पर बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान हुआ है। आतंकी हाफिज सईद के परिवार के 10 सदस्य मारे गये है। जिस वीरता के साथ आधी रात को भारतीय सेना के वीरों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (PoK) की 9 जगह पर स्थित 21 ठिकानों को एयर स्ट्राइक करके ध्वस्त करते हुए शौर्य गाथा लिखने का कार्य किया है वह काबिले-तारीफ है। 'ऑपरेशन सिंदूर' का उद्देश्य भारत के खिलाफ पीओके व पाकिस्तान में चल रही आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने वाले आतंकवादी ठिकानों का नष्ट कर करते हुए आतंकियों के आका पाकिस्तान को कड़ा सबक सिखाना था।

यहां हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिस तरह 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम की 'बैसरन घाटी' में धर्म पूछ करके 26 निर्दोष पर्यटकों की निर्ममता से हत्या की गयी थी, उसमें 25 पुरुष पर्यटकों की उनकी पत्नियों के सामने ही जघन्य हत्या कर दी गई थी। पहलगाम में हुए बर्बर हमले के बाद भारतीय सेना की यह एयर स्ट्राइक आतंकियों पर जवाबी कार्रवाई है जिसके चलते ही लगता है कि इस 'ऑपरेशन' का नाम 'सिंदूर' रखा गया है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से भारत के जांबाजों ने दुनिया को स्पष्ट संदेश दे दिया है कि भारत को छेड़ोगे तो हम छोड़ेंगे नहीं बल्कि घर में घुसकर मारेंगे।

भारत के स्वनिर्मित हथियार बेहतर निकले: रिटा. जन. पीके सहगल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई 2025 को रात आठ बजे देश के नाम संबोधन में कई बातों का जिक्र किया। उन्होंने पाकिस्तान पोषित आतंकवाद के खिलाफ चलाए गए भारत की सैन्य कार्रवाई 'ऑपरेशन सिंदूर' की तारीफ की। उन्होंने पाकिस्तान को सख्त लहजे में चेतावनी भी दी कि भारत के खिलाफ किसी भी आतंकवादी गतिविधि का माकूल जवाब दिया जाएगा। रक्षा मामलों के विशेषज्ञ और रिटायर्ड मेजर जनरल पी के सहगल ने मंगलवार 13 मई को पीएम मोदी के संबोधन की सराहना की। जनरल सहगल ने न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बात करते हुए कहा कि इस समय स्थिति सामान्य है। हिंदुस्तान ने पाकिस्तान को साफ तौर पर चेतावनी दी है कि अगर आपकी तरफ से गोली चलेगी, तो इधर से गोला चलेगा। यह भी बताया गया है कि ऑपरेशन सिंदूर अभी अस्थायी रूप से रोका गया है और यह अभी जारी है। पाकिस्तान अगर हमारे नागरिकों, स्कूल, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों को निशाना बनाएगा, तो ऐसी सजा मिलेगी, जिसकी उन्हें अपेक्षा भी नहीं है। उन्होंने बताया कि पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि जिन्होंने पहलगाम में गलती की। हमारी बहनों और बेटियों के माथे का सिंदूर हटाया, उन्हें उम्मीद भी नहीं थी कि हमारी तरफ से क्या कार्रवाई होगी। पाकिस्तान की तरफ से जब भी आतंकी गतिविधि होगी, तो उसका जवाब इसी तरह से दिया जाएगा। पीएम मोदी ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी बताया है कि भारत किसी भी तरह के न्यूक्लियर ब्लैकमेल को नहीं सहेगा। जनरल सहगल ने आगे कहा कि ब्रह्मोस और आकाश मिसाइल इंडिया की बनी हुई हैं। आर्टिलरी हथियार हमारे अपने थे, जिसने पाकिस्तान को बहुत नुकसान पहुंचाया। खासतौर पर हमारा इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस सिस्टम भी लाजवाब था। हमारे सारे हमले टारगेट को लगे, जबकि पाकिस्तान के ड्रोन और मिसाइल को हमारे एयर डिफेंस सिस्टम ने बर्बाद किया। पूरी दुनिया ने देखा कि भारत के हथियार बेहतर हैं, जबकि पाकिस्तान जो चीन के हथियार का उपयोग कर रहा था, वो बेकार निकले। अब दुनिया में हमारे हथियारों की मांग बढ़ेगी।

सेना के जवानों से बोले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

निर्दोष लोगों का खून बहाने का एक ही अंजाम होगा-तबाही और महाविनाश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जालंधर में आदमपुर एयर बेस का दौरा किया। यहां उन्होंने सेना के जवानों और वायु योद्धाओं का हौसला बढ़ाया। पीएम मोदी ने यहां सिर्फ जवानों के साथ तस्वीरें ही नहीं खिंचवाईं, बल्कि इससे पाकिस्तान झूठ को दुनिया के सामने बेनकाब कर दिया। उन्होंने जवानों से बात की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

हरेन्द्र शर्मा

ने कहा कि भारत माता की जय यह सिर्फ उद्घोष नहीं है, यह देश के हर उस सैनिक की शपथ है, जो मां भारती की मान मयार्दा के लिए जान की बाजी लगा देता है। यह देश के हर उस नागरिक की आवाज है जो देश के लिए जीना चाहता है। यह मैदान में भी गूंजती है और मिशन में भी।

पीएम मोदी ने कहा कि जब भारत के सैनिक मां भारत की जय बोलते हैं तो दुश्मन के कलेजे कांप जाते हैं। जब हमारी मिसाइलें सनसनाती हुईं

धरती धन्य हो जाती है। आज से अनेक दशक बाद भी जब भारत के पराक्रम की चर्चा होगी तो उसके सबसे प्रमुख अध्याय आप और आपके साथी होंगे। आप सभी वर्तमान के साथ ही देश की आने वाली पीढ़ियों के लिए भी नई प्रेरणा बन गए हैं। मैं वीरों की इस धरती से वायुसेना, थलसेना, नौसेना के सभी जांबाजों और देश के शूरवीरों को सैल्यूट करता हूं।

उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की गूंज सुनाई दे रही है। हर भारतीय की प्रार्थना आपके साथ है। हर देशवासी अपने सैनिकों और उनके परिवारों के प्रति कृतज्ञ है। ऑपरेशन सिंदूर सामान्य सैन्य अभियान नहीं, यह भारत की नीति, नीयत और निर्णायक क्षमता की त्रिवेणी है। भारत गौतम बुद्ध की धरती है और गुरु गोविंद सिंह की भी धरती है। अधर्म के खिलाफ धर्म की स्थापना के शस्त्र उठाना हमारी परंपरा है। जब हमारी बहनों, बेटियों का सिंदूर छीना गया तो आतंक के फण को उसके घर में घुसकर कुचल दिया गया।

पीएम मोदी ने कहा कि वो कायरना की तरह छिपते रहे, वो भूल गए कि उन्होंने जिसे ललकारा है, वह हिंद की सेना है। आपने उन्हें सामने से हमला करके मारा। आपने आतंक के तमाम बड़े अड्डों को मिट्टी में मिला दिया। नौ आतंकी ठिकाने बर्बाद कर दिए। सौ से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई। आतंक के आकाओं को अब समझ आ गया है कि भारत की ओर नजर उठाने का एक ही अंजाम होगा- तबाही। भारत में निर्दोष लोगों का खून बहाने का एक ही अंजाम होगा- विनाश और महाविनाश।

पीएम मोदी ने कहा कि जिस पाकिस्तानी सेना के भरोसे ये आतंकी बैठे थे, भारत की थलेसना, वायुसेना और नौसेना ने उस पाकिस्तानी सेना को भी धूल चटा दी है। आपने पाकिस्तानी फौज को भी बता दिया कि पाकिस्तान में ऐसा कोई ठिकाना नहीं, जहां बैठकर आतंकवादी चैन की सांस ले सकें। हम घर में घुसकर मारेंगे और बचने का एक मौका तक नहीं देंगे। हमारे ड्रोन्स, हमारी मिसाइलों के बारे में सोचकर तो पाकिस्तान को कई दिन तक नींद नहीं आएगी। कौशल दिखलाया चालों मेंम् उड़ गया भयानक भालों में निर्भीक गया वह ढालों मेंम् सरपट दौड़ा करवालों में... यह पंक्तियां महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक पर लिखी गई हैं। ये आज के आधुनिक भारत के हथियारों पर भी फिट बैठती हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर से आपने देश का आत्मबल बढ़ाया है। देश को एकता के सूत्र में बांधा और भारत की सीमाओं की रक्षा की। भारत के स्वाभिमान को नई ऊंचाई दी। आपने वो किया, जो अभूतपूर्व है, अकल्पनीय है, अद्भुत है। हमारी एयरफोर्स ने पाकिस्तान में अंदर तक जाकर 20-25 मिनट तक सीमा पार लक्ष्यों को भेदा, आतंक के ठिकानों को टारगेट किया। यह सब एक आधुनिक प्रौद्योगिकी से लैस प्रोफेशनल फोर्स ही कर सकती है। आपकी रफ्तार और आपकी सटीकता इस स्तर की थी कि दुश्मन हक्का-बक्का रह गया। उसे पता ही नहीं चला कि कब उसका सीना छलनी हो गया है।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के अंदर आतंक के मुख्यालय, आतंकियों पर निशाना साधने का था, लेकिन पाकिस्तान ने अपने यात्री विमानों को सामने करके जो साजिश रची थी, मैं कल्पना कर सकता हूं कि निशाने पर पहुंचती हैं, तब दुश्मनों को सुनाई देता है- भारत माता की जय। जब रात के अंधेरे में भी हम सूरज उगा देते हैं तो दुश्मन को दिखाई देता है- भारत माता की जय। जब हमारी फौज परमाणु बम की धमकी हवा निकाल देती है तो आकाश से पाताल तक एक ही आवाज गूंजती है भारत माता की जयकार। आप सभी ने कोटि-कोटि भारतीयों का सीना चौड़ा कर दिया। हर भारतीय का माथा ऊंचा कर दिया। आपने इतिहास रच दिया। मैं आपके दर्शन करने आया हूं। उन्होंने कहा कि जब वीरों के पैर जमीन पर पड़ते हैं तो

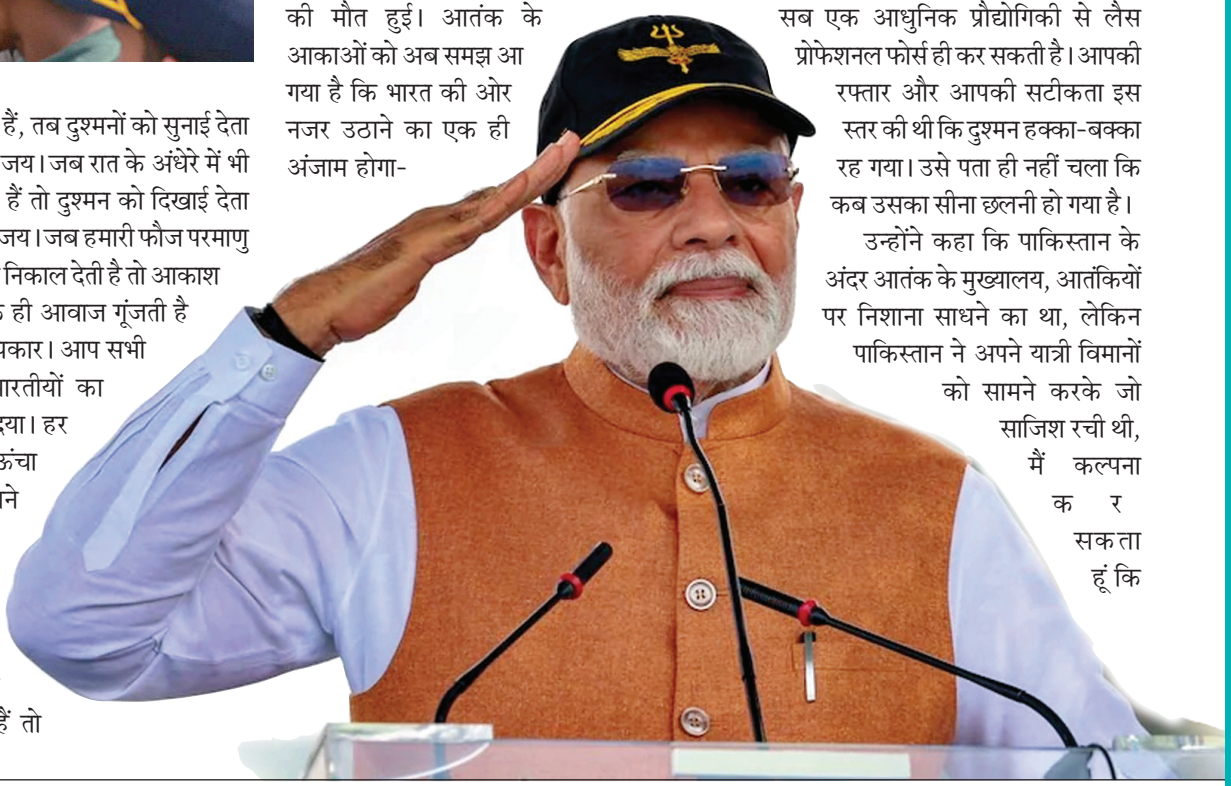

वो पल कितना कठिन होगा, जब नागरिक विमान दिख रहा होगा। मुझे गर्व है कि आपने बहुत सावधानी और सतर्कता से नागरिक विमान को नुकसान पहुंचाए बिना कमाल करके दिखाया और जवाब दे दिया।

पीएम मोदी ने कहा कि मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि आप सभी अपने लक्ष्यों पर बिल्कुल खरे उतरे हैं। पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों और उनके एयरबेस ही तबाह नहीं हुए, बल्कि उनके नापाक इरादे और उनके दुस्साहस, दोनों ही हार हुई। साथियो ! ऑपरेशन सिंदूर से बौखलाए दुश्मन ने इस एयरबेस के साथ-साथ हमारे अनेक एयरबेस पर हमला करने की कई बार कोशिश की, बार-बार हमें टारगेट किया, लेकिन पाकिस्तान के नापाक इरादे हर बार नाकाम हो गए।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के ड्रोन, उसके एयरक्राफ्ट, मिसाइल हमारे सशक्त एयर डिफेंस के सामने ढेर हो गए। मैं भारतीय वायु सेना के हर वायु योद्धा की सराहना करता हूं। देश के सभी एयरबेस से जुड़ी लीडरशिप, एयर वॉरियर की हृदय से सराहना करता हूं। आपने वाकई बहुत शानदार काम किया। साथियो ! आतंक के विरुद्ध भारत की लक्ष्मण रेखा अब एकदम स्पष्ट है। अब फिर कोई आतंकी हमला हुआ तो भारत जवाब देगा और पक्का जवाब देगा। यह हमने सर्जिकल स्ट्राइक के समय देखा, एयर स्ट्राइक के समय देखा और अब ऑपरेशन सिंदूर भारत का न्यू नॉर्मल है।

पीएम मोदी ने कहा कि जैसा मैंने कल भी कहा था कि भारत ने अब तीन सूत्र तय कर दिए हैं। पहला- भारत पर आतंकी हमला हुआ तो हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर, अपने समय पर जवाब देंगे। दूसरा- कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा। तीसरा- हम आतंक के सरपरस्तों की सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखेंगे। दुनिया भी भारत के इस नए रूप को, इस नई व्यवस्था को समझते हुए ही आगे बढ़ रही है।

उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर का एक-एक क्षण, भारत की सेनाओं की बहादुरी की गवाही देता है। हमारी सेनाओं का समन्वय कमाल का था। सेना, वायुसेना, नौसैनिक सबका तालमेल बहुत जबर्दस्त था। समेकित एयर एंड लैंड कॉम्बैट सिस्टम ने शानदार काम किया। यह अब भारतीय सेनाओं के सामर्थ्य की मजबूत पहचान बन चुकी है। भारत के पारंपरिक एयर डिफेंस सिस्टम ने अनेक लड़ाइयां देखी हैं या फिर आकाश जैसे मेड इन इंडिया प्लेटफॉर्म हो या एस-400 जैसे आधुनिक और सशक्त एयर डिफेंस ने मजबूत सुरक्षा कवच दिया है।

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज हमारे पास नई और सटीक एयर टेक्नोलॉजी का ऐसा सामर्थ्य है, जिसका पाकिस्तान मुकाबला नहीं कर सकता। बीते दशक में वायुसेना सहित हमारी सभी सेनाओं के पास दुनिया की श्रेष्ठ प्रौद्योगिकी पहुंची है। हम सब जानते हैं कि नई टेक्नोलॉजी के साथ चुनौतियां भी उतनी ही बड़ी होती हैं।

जटिल और आधुनिक प्रणालियों का रखरखाव करना, उन्हें प्रभावी तौर पर उपयोग में लाना बहुत बड़ा कौशल है। आपने सिद्ध कर दिया है कि आप इस गेम में दुनिया में बेहतरीन हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने सिर्फ सैन्य कार्रवाई को स्थगित किया है। अगर पाकिस्तान ने फिर से अगर आतंकी गतिविधि या सैन्य दुस्साहस दिखाया तो हम उसका मुंहतोड़ जवाब देंगे।

यह जवाब अपनी शर्तों, अपने तरीके से देंगे और इस निर्णय की आधारशिला और इसके पीछे छिपा है विश्वास, आप सबका धैर्य, शौर्य, साहस और सजगता। यह जुनून और जज्बा ऐसे ही बरकरार रखना है। हमें लगातार मुस्तैद रहना है, हमें तैयार रहना है। हमें दुश्मन को याद दिलाते रहना है कि यह नया भारत है। यह भारत शांति चाहता है, लेकिन अगर मानवता पर हमला होता तो यह भारत दुश्मन को मिट्टी में मिलाना भी अच्छी तरह जानता है।

सीजफायर से नाराजगी

कुछ लोगों ने इस युद्धविराम की आलोचना भी की है। विदेश मामलों के जानकार ब्रह्मा चेल्लान्नी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि क्या इसका मतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को पूरा नहीं करने का फैसला किया है? क्या वे पाकिस्तानी सेना के जनरलों की 'हजार घावों की रणनीति' को हमेशा के लिए खत्म नहीं करेंगे, जिसमें वे आतंकवादियों के जरिए भारत पर हमला करते हैं?' उन्होंने आगे लिखा कि जीत के मुंह से हार छीनना भारत की पुरानी राजनीतिक परंपरा रही है। उन्होंने चीन और पाकिस्तान के खिलाफ भी इसी तरह की गलतियां करने के उदाहरण दिए। चेल्लान्नी ने कहा कि भारत ने 1948 में पाकिस्तान के साथ युद्ध विराम किया था, जबकि सेना जीत की ओर बढ़ रही थी। फिर, 1972 में शिमला में, भारत ने 1971 के युद्ध में मिली जीत को बिना कुछ लिए ही पाकिस्तान को दे दिया। ब्रह्मा चेल्लान्नी जैसे विदेश मामलों के जानकारों का मानना है कि भारत को इस मौके का फायदा उठाना चाहिए था। उनके अनुसार, पाकिस्तान आतंकवादियों का इस्तेमाल करके भारत को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता रहता है। भारत को इस समस्या को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए था। चेल्लान्नी ने यह भी कहा कि भारत पहले भी कई बार ऐसे मौके गंवा चुका है। 1948 में जब भारतीय सेना पाकिस्तान को हराने वाली थी, तब भारत ने युद्ध रोक दिया था। इसी तरह, 1972 में शिमला समझौते के दौरान भारत ने पाकिस्तान से कुछ भी लिए बिना अपनी जीती हुई जमीन वापस कर दी थी।

क्या भारत ने सही फैसला लिया?

सरकार के सूत्रों का कहना है कि भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ जो फैसले लिए हैं, उन्हें वापस नहीं लिया जाएगा। इसका मतलब है कि सिंधु नदी के पानी को लेकर जो समझौता है, उस पर भी दोबारा विचार किया जा सकता है। भारत हमेशा से कहता रहा है कि वह पाकिस्तान के साथ बातचीत तभी करेगा, जब पाकिस्तान आतंकवाद को समर्थन देना बंद कर देगा। पाकिस्तान की वजह से दोनों देशों के बीच पिछले दस सालों से कोई बातचीत नहीं हुई है। इस पूरे मामले में कई सवाल उठ रहे हैं। क्या भारत ने सही फैसला लिया? क्या पाकिस्तान पर भरोसा किया जा सकता है? क्या यह युद्धविराम स्थायी होगा? इन सवालों का जवाब तो आने वाला वक्त ही देगा। लेकिन एक बात तो तय है कि भारत और पाकिस्तान के बीच रिश्ते हमेशा से ही तनावपूर्ण रहे हैं।

भारत और पाकिस्तान में कितनी बार हुआ है युद्ध

ब्रिटिश भारत को वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त हुई। हालांकि, इस स्वतंत्रता के साथ खुशी के स्थान पर दुख भी आया, क्योंकि देश का भारत और पाकिस्तान में विभाजन हो गया, जिससे व्यापक हिंसा हुई और लाखों लोग विस्थापित हो गए। वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के बीच चार बार युद्ध हो चुका है - 1948, 1965, 1971 और 1999 में और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से कई बार टकराव हो चुका है, सबसे प्रमुख कश्मीर क्षेत्र को लेकर,

जिस पर दोनों ही अपना दावा करते हैं। 1947-48 का पहला युद्ध किसी स्पष्ट विजेता के बिना ही समाप्त हो गया। 1965 के युद्ध पर अभी भी बहस जारी है। भारत ने 1971 के युद्ध में महत्त्वपूर्ण जीत हासिल की, जो बांग्लादेश स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरित था। 1999 में भारत ने कारगिल युद्ध के दौरान सफलतापूर्वक क्षेत्रों पर पुनः कब्जा कर लिया था। इन प्रमुख संघर्षों के अलावा, सियाचिन संघर्ष (1984-2003) और 2001-2002 के सैन्य गतिरोधों ने दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक तनाव को और बढ़ा दिया है।

भारत-पाकिस्तान युद्ध 1947-1948

पहला भारत बनाम पाकिस्तान युद्ध 22 अक्टूबर 1947 को हुआ था। इस युद्ध के पीछे कारण यह था कि स्वतंत्रता के बाद सभी रियासतों के सामने तीन विकल्प दिए गए थेः भारत में शामिल हो जाओ, पाकिस्तान में शामिल हो जाओ या स्वतंत्र रहो।

भारत-पाकिस्तान युद्ध 1965

युद्ध मुख्यतः जम्मू और कश्मीर क्षेत्र पर विवाद के कारण शुरू हुआ। भारत और पाकिस्तान दोनों ने इस क्षेत्र पर अपना दावा किया तथा सीमा पर झड़पों के बाद तनाव बढ़ गया।

भारत-पाकिस्तान युद्ध 1971

1971 का युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच एक बड़ा संघर्ष था। इसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ। यह युद्ध मुख्यतः पूर्वी पाकिस्तान (जो अब बांग्लादेश है) में राजनीतिक और जातीय तनाव के कारण हुआ था।

भारत-पाकिस्तान युद्ध 1999ः कारगिल युद्ध

कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई से जुलाई 1999 तक जम्मू और कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में लड़ा गया संघर्ष था। ऐसा विवादित क्षेत्र में बढ़ते तनाव के कारण हुआ। पाकिस्तानी सैनिक भारतीय क्षेत्र में घुस आए और महत्त्वपूर्ण पर्वतीय ठिकानों पर नियंत्रण कर लिया।

ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने लिया पहलगाम हमले का बदला

पाकिस्तान में 100 किमी तक घुसकर भारतीय वायुसेना ने उड़ाए आतंक के ठिकाने

पहलगाम आतंकी हमले के 16वें दिन भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए इस हमले का एयर स्ट्राइक के जरिए धमाकेदार अंदाज में जवाब दे दिया। साथ ही भारत ने अपने ऑपरेशन को लेकर बुधवार आधी रात अमेरिका, रूस और ब्रिटेन समेत सहित कई प्रमुख देशों को जानकारी भी दे दी। भारत ने अपने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लिए पाकिस्तान के 100 किलोमीटर के दायरे में आतंकियों के 9 ठिकानों पर हमला कर उन्हें तबाह कर दिया। भारत ने इन ठिकानों को ही क्यों चुना।

भारत के एक्शन को लेकर सूत्रों को कहना है कि भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) और पाकिस्तान में 9 अलग-

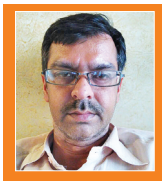

संजीव कुमार

अलग स्थानों पर स्थित करीब एक दर्जन आतंकी ठिकानों पर हमला किया। यह लक्ष्य पाकिस्तान की सीमा से 100 किमी के अंदर तक थे। सूत्रों का कहना है कि हमले से पहले एक दर्जन आतंकी ठिकानों की पहचान की गई, उन्हें ट्रैक किया गया फिर उन पर हमला कर नष्ट कर दिया गया।

भारतीय वायुसेना ने आज बुधवार तड़के पाक अधिकृत कश्मीर और पाकिस्तान में कई आतंकी ठिकानों पर हमला किया। भारतीय सशस्त्र बलों ने इन आतंकी कैंपों को चिन्हित कर निशाना बनाया जो भारत पर कई हमलों के पीछे के दोषी थे। सूत्रों ने बताया कि खुफिया जानकारी के आधार पर वायुसेना के हमलों में जैश-ए-मोहम्मद के 4, लश्कर-ए-तैयबा के 3 और हिजबुल मुजाहिदीन के 2 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया गया।

पाकिस्तान-पीओके में आंतकी ठिकानों को ध्वस्त करने के बाद बोले पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ऑपरेशन सिंदूर को लेकर लेकर पहला रिएक्शन आया है। उन्होंने

जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय तबाह

भारत की ओर से जिन आतंकी ठिकाने को निशाना बनाया गया है, उसमें जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय भी शामिल है। इसके अलावा लश्कर-ए-तैयबा और हिज्बुल मुजाहिदीन के कैंप को भी तबाह कर दिया गया है। सबसे बड़ा हमला बहावलपुर में किया गया जो अंतरराष्ट्रीय सीमा से करीब 100 किमी अंदर स्थित है और यहां पर जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय है। अब इसे ध्वस्त कर दिया गया है। इसी तरह सांबा सेक्टर की सीमा से 30 किमी अंदर मुरीदके नाम की जगह पर लश्कर-ए-तैयबा का कैंप था। उसे भी जमीन में मिला दिया गया है। मुंबई में 26/11 आतंकी हमलों के आतंकवादी यहीं से थे। यहां 26/11 मुंबई हमलों से जुड़े लश्कर-ए-तैयबा का ट्रेनिंग सेंटर था, अजमल कसाब ने यहीं पर ट्रेनिंग ली थी। यहां संगठन का मुख्यालय भी शामिल है, जहां डेविड हेडली और तहव्वुर राणा ने दौरा किया था। 2001 में मारे गए अलकायदा आतंकवादी ओसामा बिन लादेन ने गेस्ट हाउस के निर्माण के लिए 10 लाख रुपये का दान दिया था। सेना की ओर से तीसरा हमला गुलपुर में किया गया जो पुंछ-राजौरी के एलओसी से करीब 35 किमी अंदर है। 20 अप्रैल 2023 को पुंछ में आतंकी हमला और जून 2024 में यात्रियों से भरी बस पर हमले की जड़ें यहीं से जुड़ी हुई थीं।

कहा कि हम सभी के लिए गर्व का दिन है। पीएम मोदी ने बुधवार ऑपरेशन सिंदूर के बाद सीसीएस की बैठक में हिस्सा लिया। इसके बाद कैबिनेट की मीटिंग हुई, पीएम इसमें भी शामिल रहे। कैबिनेट ने भी भारतीय सेना की कार्रवाई की तारीफ की है। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर से पहलगाम समेत कई आतंकी हमलों का बदला ले लिया है। पीएम मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट मीटिंग में सेना की इस कार्रवाई की तारीफ की गई। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "हम सभी के लिए गर्व का दिन है"।

तबाह हुआ आतंकी मसूद अजहर का परिवार

भारतीय सेना की कार्रवाई में आतंकवादी मसूद अजहर को गहरा नुकसान पहुंचा है। उसके परिवार के 14 लोग मारे गए हैं और कई घायल हुए हैं। मसूद के 4 गुर्गों के भी ढेर होने की खबर है। पाकिस्तान के बहावलपुर में अजहर का परिवार था। मसूद अजहर की बड़ी बहन और मौलाना कशफ का पूरा परिवार खत्म हो गया है।

ऑपरेशन सिंदूर को लेकर दी गई प्रेस ब्रीफिंग

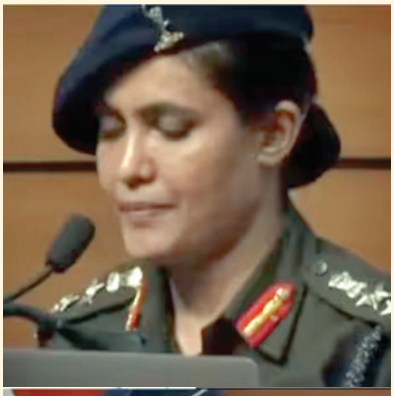

भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर प्रेस ब्रीफिंग भी की। इसमें विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ थलसेना की अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी और वायुसेना की अधिकारी व्योमिका सिंह शामिल हुई। ब्रीफिंग में भारतीय सेना को लेकर पूरी जानकारी दी गई। कर्नल सोफिया कुरैशी ने बताया कि इस कार्रवाई के दौरान किसी भी निर्दोष नागरिक को निशाना नहीं बनाया गया है और न ही पाक सेना पर हमला किया गया। कर्नल सोफिया ने यह भी बताया कि पहलगाम के साथ-साथ मुंबई अटैक और बाकी कई हमलों में शामिल आतंकियों के ठिकानों को बर्बाद किया गया है।

भारतीय सेना ने पेश किए हमले के सबूत

तबाह किए गए ठिकानों के सबूत पेश करते हुए कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि वीडियो में तबाह किए गए आतंकी शिविरों को दिखाया गया है, जिसमें मुरीदके भी शामिल है, जहां 2008 के मुंबई आतंकी हमलों में शामिल अजमल कसाब और डेविड हेडली ने ट्रेनिंग ली थी।

ऑपरेशन के बाद पीएम मोदी ने की थी 9 राज्यों के सीएम संग बैठक

ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपित द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। उन्होंने राष्ट्रपति को इस ऑपरेशन की जानकारी दी। पीएम ने इससे पहले सुबह सीसीएस की बैठक की थी। वे कैबिनेट की मीटिंग में भी शामिल हुए। इसमें गृहमंत्री अमित शाह और रक्षामंत्री राजनाथ सिंह भी शामिल रहे। वहीं दूसरी ओर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह नौ राज्यों के मुख्यमंत्रियों, डीजीपी और मुख्य सचिवों के साथ बैठक की। अमित शाह ने मीटिंग के दौरान जंग के हालात के बीच सुरक्षा का जायजा लिया। केंद्र सरकार ने गुरुवार को सर्वदलीय बैठक भी बुलाई है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नौ राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की। इसमें जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, सिक्किम, पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री और लद्दाख, जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल शामिल रहे।

सेना ने इस कार्रवाई का वीडियो भी बनाया है।

फूट-फूटकर रोया आतंकी अजहर मसूद

पहलगाम आतंकी हमले का बदला लेते हुए भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकी अड्डों को मिट्टी में मिला दिया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत की गई इस कार्रवाई में मोस्ट वॉन्टेड आतंकी मसूद अजहर के परिवार के 14 लोग भी मारे गए हैं।

आतंकी मसूद अजहर ने चिट्ठी जारी करते हुए कहा कि दिल करता है कि काश मैं भी इस हमले में मर जाता। पाकिस्तान के बहावलपुर में भारतीय हवाई हमलों में जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख मसूद अजहर की बहन भी मारी गई है। घोषित आतंकवादी के रिश्तेदार भी हमलों में मारे गए। भारतीय सेना ने पाकिस्तान के पंजाब और पीओके में आतंकवादी शिविरों पर हमला किया। अधिकारियों ने बताया कि पंजाब में 4 और पीओके में 5 ठिकानों पर हमला किया गया।

जैश-ए-मोहम्मद ने बयान जारी करते हुए कहा कि मौलाना मसूद अजहर की बड़ी बहन के साथ मौलाना कशफ का पूरा परिवार मारा गया है। मुफ्ती अब्दुल रऊफ के पोते पोतियां, बाजी सादिया के पति समेत सबसे बड़ी बेटी के 4 बच्चे घायल हुए हैं। ज्यादातर महिलाएं और बच्चे मारे गए हैं। आतंकी अजहर के परिवार के सदस्यों और करीबियों को 7 मई 2025 को ही दफनाया गया। अजहर का एक करीबी सहयोगी, उसकी मां और दो अन्य करीबी सहयोगी भी भारतीय हमलों में मारे गए। ऑपरेशन सिंदूर के तहत बहावलपुर में सुभान अल्लाह परिसर पर भी हमला किया गया था।

पहलगाम हमले के जिम्मेदार सवाई भी निशाने पर, इन स्थानों पर हुई स्ट्राइक

पीओके के तंगधार सेक्टर में 30 किमी के अंदर सवाई जहां लश्कर का कैंप था, उसे भी निशाना बनाया गया है। यह कैंप 20 अक्टूबर 2024 को सोनमर्ग, 24 अक्टूबर 2024 को गुलमर्ग और 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम हमले के लिए जिम्मेदार है। सेना के निशाने पर पांचवां ठिकाना बिलाल कैंप था जिसे जैश-ए-मोहम्मद का लॉन्च पैड कहा जाता था। छठा ठिकाना लश्कर कोटली कैंप रहा जो राजौरी जिले की एलओसी से 15 किमी अंदर है। यहां पर लश्कर का बमबारी प्रशिक्षण केंद्र था और यहां करीब 50 आतंकवादियों के रहने की क्षमता थी। सातवां ठिकाना बरनाला कैंप रहा जो राजौरी जिले के सामने एलओसी से महज 10 किमी अंदर है। आठवें ठिकाने के रूप में सरजाल तेहरा कलां कैंप को निशाना बनाया गया जिसे जैश का कैंप भी कहा जाता था। यह सांबा-कठुआ के सामने अंतरराष्ट्रीय सीमा से बेहद सटा हुआ है।

पाकिस्तान के पंजाब के नरोवाल जिले के सरजाल तेहरा कलां में जैश-ए-मोहम्मद का कैंप आतंकी संगठन का मुख्य लॉन्चिंग पैड था और इसे एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से संचालित किया जाता था। इस कैंप की देखरेख अब्दुल रऊफ असगर करते हैं। जम्मू के सांबा सेक्टर से महज छह किलोमीटर दूर स्थित इस केंद्र का इस्तेमाल आतंकवादियों की घुसपैठ के लिए जगहों की पहचान करने और सीमा पार सुरंग खोदने के लिए किया जाता था।

सेना की ओर से नौवां और आखिरी ठिकाना पाकिस्तान की सीमा में पड़ने वाला महमूना कैंप भी रहा जो अंतरराष्ट्रीय सीमा से 15 किमी अंदर है। यह सियालकोट के पास है और इसे हिज्बुल मुजाहिदीन का प्रशिक्षण केंद्र कहा जाता है। सियालकोट स्थित महमूना जोया आतंकी कैंप भी एक स्वास्थ्य केंद्र के अंदर चल रहा था और इसका इस्तेमाल जम्मू क्षेत्र में हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकवादियों की घुसपैठ के लिए किया जाता था, साथ ही यह एक ऐसा कैंप था जहां हथियारों को संभालने समेत कई तरह की ट्रेनिंग दी जाती थी। इस शिविर में 30 आतंकवादी रहते थे, जिसका नेतृत्व इरफान टांडा कर रहा था, जो जम्मू शहर में हमलों को अंजाम देने के लिए जिम्मेदार है।

भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद घबराया पाकिस्तान का दोस्त

भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत जैसे ही पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों पर हमला किया, अंतरराष्ट्रीय समुदाय की नजरें इस क्षेत्र पर टिक गईं। इन घटनाओं के बीच कतर ने बयान जारी किया है, जिसमें उसने दोनों पक्षों से संयम और संवाद की अपील की है। कतर के विदेश मंत्रालय ने कहा कि हम दोनों देशों से संयम बरतने, विवेक की आवाज को सुनने और कूटनीतिक माध्यमों से मसलों को हल करने का आग्रह करते हैं। यह क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए जरूरी है। इस बयान से साफ है कि कतर टकराव की बजाय सुलह और संवाद को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। यह न केवल एक कूटनीतिक बयान है, बल्कि भारत और पाकिस्तान जैसे दो परमाणु संपन्न देशों के बीच संभावित युद्ध की विभीषिका को टालने का प्रयास भी है। कतर अपने कूटनीतिक संतुलन और वैश्विक मध्यस्थता प्रयासों के लिए जाना जाता है।

अफगान तालिबान और अमेरिका के बीच बातचीत हो या इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष, कतर ने कई बार मध्यस्थ की भूमिका निभाई है। कतर ने अब तक भारत और पाकिस्तान के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे हैं। इसके अलावा दोहा में कई अंतरराष्ट्रीय वार्ताएं हो चुकी हैं, जो इसे एक विश्वसनीय स्थल मानी जाती है। कतर ने बयान में यह भी कहा कि वह सभी क्षेत्रीय और वैश्विक प्रयासों का समर्थन करता है जो शांति और स्थिरता को बढ़ावा दें।

पाकिस्तान के लिए संदेश क्यों जरूरी है?

भारत और पाकिस्तान दोनों परमाणु हथियार संपन्न देश हैं। यदि स्थिति नियंत्रण से बाहर जाती है तो उसके परिणाम केवल उपमहाद्वीप ही नहीं, पूरी दुनिया भुगतेगी। खाड़ी देश कतर और यूएई भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए तेल, गैस और व्यापार के अहम स्रोत हैं। इस क्षेत्र में युद्ध जैसी स्थिति वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर भी असर डाल सकती है।

‘सिंदूर’ के पीछे साजिश, पाकिस्तान के लिए जासूसी करती महिला की गिरफ्तारी से खुला बड़ा नेटवर्क

डीआरडीओ के एक वैज्ञानिक की गिरफ्तारी को लोग आज भी नहीं भूले हैं। तब उसकी राजनीतिक गतिविधियों पर सवाल भी उठा था। जासूसों को वीजा कौन और कैसे दिलवाता है, इसकी जांच भी होनी ही चाहिए।

भारत में पाकिस्तान के लिए जासूसी कर रही एक महिला की गिरफ्तारी चिंता का विषय है। पाकिस्तान की करतूतें किसी से छिपी नहीं हैं। आतंकवादियों को पालने और सीमा पर तनाव बढ़ाने के साथ एक के बाद एक वह साजिशें रचता रहा है। इसमें वह भारतीय नागरिकों को बहला-फुसला या किसी तरह फंसा कर खुफिया जानकारियां जुटाने का प्रयास करता रहा है। बीते कुछ दशक में उसने अपना यह जासूसी संजाल मजबूत कर लिया है।

‘आपरेशन सिंदूर’ के बाद चलाए गए विशेष अभियान के तहत जिस तरह एक के बाद एक पाकिस्तान के लिए जासूसी कर रहे लोग गिरफ्तार हो रहे हैं, उससे स्पष्ट है कि उसका संजाल काफी फैला हुआ है। पर सवाल यह भी उठता है कि

जितेन्द्र कुमार

भारतीय खुफिया एजंसियों की जो सतर्कता अब दिखाई दे रही है, वह पहले क्यों नहीं थी। हरियाणा की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को दुश्मन देश की खुफिया एजंसियां ‘अपने संपर्क’ के तौर पर काफी समय से तैयार कर रही थी। हैरानी है कि इसकी भनक भारतीय एजंसियों को इतनी देर से क्यों लगी? इसके अलावा कई भारतीयों का आइएसआइ के संपर्क में आना गंभीर खतरे की ओर इशारा करता है। एनआइए ने कैथल में एक पाक जासूस को पकड़ा, तो पंजाब पुलिस ने सैन्य जानकारी साझा कर रहे गुरदासपुर के दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। अब तो जासूसी की जांच उत्तर प्रदेश के रामपुर तक जा पहुंची है। ऐसा लगता है कि पहलगाम आतंकी हमले के पहले से पाकिस्तान, भारत में जासूसों का जाल बना रहा था। अगर वह ऐसा कर रहा था, तो इस कड़ी को पकड़ने में चूक कैसे हुई। अगर यह दावा किया जा रहा है कि आतंकी हमले से पहले ज्योति मल्होत्रा पहलगाम गई थी, तो यह निश्चित रूप से गंभीर मामला है और इसकी तह में जाने की जरूरत है। कुछ जासूसों का राजनीतिक संपर्क भी देखा गया है। डीआरडीओ के एक वैज्ञानिक की गिरफ्तारी को लोग आज भी नहीं भूले हैं। तब उसकी राजनीतिक गतिविधियों पर सवाल भी उठा था। जासूसों को वीजा कौन और कैसे दिलवाता है, इसकी जांच भी होनी ही चाहिए।

12वीं के बाद चुनें करियर

व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में लें प्रवेश

आमतौर पर 12वीं कक्षा पास करने के बाद अधिकांश छात्र-छात्राएं एवं उनके अभिभावक एकदम से यह तय नहीं कर पाते हैं कि वे अपने बच्चों को किस विषय की शिक्षा दिलाएं, ताकि आगे जाकर वे उनका करियर सुरक्षित हो सके। हालांकि अब बच्चे इस मामले में काफी समझदार व परिपक्व हो गये हैं। वे अपने माता पिता से पहले ही बता देते हैं कि उन्हें करियर के रुप में किस क्षेत्र को चुनना है। लेकिन आज भी ऐसे छात्रों की कमी नहीं है, जो अपना स्पष्ट मत नहीं रखते। वे खुद निर्णय न लेकर अपने अभिभावकों पर छोड़ देते हैं।

अब वह जमाना गया जब बच्चों को अपने अभिभावकों की बात माननी ही होती थी। लेकिन वर्तमान समय में बच्चों की पसंद व रुचि के अनुसार ही उनको आगे की पढ़ाई करानी चाहिए। किसी भी माता-पिता को अपने बच्चे पर अपनी पसंद का करियर चुनने के लिए बाध्य करना समझदारी नहीं कहा जा सकता। इस संबंध में उन्हें अपने बच्चे की रुचि व उसका बौद्धिक स्तर का समझना होगा। किसी की देखा देखी करना उचित नहीं है।

अधिकांश चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों के बच्चे चिकित्सा के क्षेत्र में ही अपना करियर चुनते हैं, जबकि शिक्षक चाहते हैं कि उनके बच्चे शिक्षा जगत में ही बड़ा ओहदा चुने। ऐसे ही उद्योग व दूसरे क्षेत्रों के जुड़े लोगों के बच्चे का तो पहले से ही तय होता है कि उन्हें जीवन में क्या करना है, लेकिन अधिकांश परिवारों में आज भी बच्चे व अभिभावक आर्थिक अथवा दूसरे कारणों से अपने पसंदीदा करियर को नहीं अपना पाते हैं। ऐसे में उन्हें अन्य विकल्प चुनने पड़ते हैं।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वर्तमान युग में उपयुक्त करियर चुनना किसी चुनौती से कम नहीं। अधिकांश माता पिता अपने आसपास के माहौल व परिचितों के बच्चों को देखकर ही अपने बच्चों को उसी क्षेत्र में भेजना चाहते हैं, लेकिन वे ये भूल जाते हैं कि हमें किसी अनुसरण नहीं करना चाहिए। क्योंकि हर बच्चे की पारिवारिक आर्थिक स्थिति, कार्यक्षमता और बौद्धिक स्तर अलग अलग होता है। इसलिए हमें अपने बच्चे की योग्यता व उनकी रुचि के अनुसार पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलाना चाहिए, ताकि वह व्यावसायिक पाठ्यक्रम पूरा करके अपने भविष्य को करियर की दृष्टि से सुरक्षित कर सकें।

सीनियर सैकेंड्री यानी इंटरमीडिएट की पढ़ाई करने के बाद जो बच्चे विज्ञान के क्षेत्र में आना चाहते हैं वे इंजीनियरिंग की विभिन्न स्ट्रीम में भाग ले सकते हैं। इसके लिए बीटेक में अपने पसंद के कोर्स में प्रवेश लेना चाहिए। स्वयं की निजी व्यवसाय करने अथवा स्व उद्योग लगाने के इच्छुक छात्रों को बी. कॉम. सीए आदि में भी प्रवेश ले सकते हैं। इसके अलावा

जिन बच्चों की रुचि मीडिया के क्षेत्र में हैं, वे वीडियो एडिटिंग, पत्रकारिता को कोर्स, फोटोग्राफी, डिजाइनिंग आदि क्षेत्रों को चुन सकते हैं।

इनके अलावा आप अपने बच्चों को उनकी रुचि को देखते हुए फैशन डिजाइनिंग, इंटीरियर,इंटीरियर मैनेजमेंट, होटल मैनेजमेंट टूरिज्म एवं ट्रेवल मैनेजमेंट आदि पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलाकर उनका करियर निश्चित कर सकते हैं। इनके अलावा तमाम व्यवसायिक पाठ्यक्रम हैं, जिनमें प्रवेश लेकर छात्र अपना व्यवसाय चुन सकते हैं। आप अपने बच्चों को उसकी रुचि के अनुसार विभिन्न क्षेत्र के पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलवाकर उनकी आगे की पढ़ाई जारी रख सकते हैं। आपकी सुविधा के लिए हम यहां आपको कुछ आवश्यक जानकारी दे रहे हैं।

व्यवसायिक पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक योग्यता न्यूनतम 50% अंको के साथ 12वीं कक्षा उत्तीर्ण है। इनमें कुछ पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षा होती है, जबकि कुछ में केवल साक्षात्कार के आधार पर भी प्रवेश की सुविधा होती है।

12वीं करने के बाद छात्र अपनी रुचि के अनुसार इन व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले सकते हैं:

बीबीए (बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन): यह पाठ्यक्रम व्यवसायिक प्रबंधन, वित्त, विपणन और मानव संसाधन में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

बीकॉम (बैचलर ऑफ कॉमर्स): यह पाठ्यक्रम व्यवसायिक लेखांकन, वित्त, विपणन और प्रबंधन में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

होटल मैनेजमेंट: यह पाठ्यक्रम होटल प्रबंधन, आतिथ्य और पर्यटन में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

फैशन डिजाइनिंग: यह पाठ्यक्रम फैशन डिजाइनिंग, फैशन प्रबंधन और फैशन मार्केटिंग में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

इंटीरियर डिजाइनिंग: यह पाठ्यक्रम इंटीरियर डिजाइनिंग, आर्किटेक्चर और डिजाइन में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

ग्राफिक डिजाइनिंग: यह पाठ्यक्रम ग्राफिक डिजाइनिंग, विजुअल कम्युनिकेशन और डिजिटल मीडिया में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

फोटोग्राफी: यह पाठ्यक्रम फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी और विजुअल स्टोरीटेलिंग में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

इवेंट मैनेजमेंट: यह पाठ्यक्रम इवेंट मैनेजमेंट, कॉर्पोरेट इवेंट्स और वेडिंग प्लानिंग में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

टूरिज्म एंड ट्रैवल मैनेजमेंट: यह पाठ्यक्रम टूरिज्म एंड ट्रैवल मैनेजमेंट, होटल मैनेजमेंट और पर्यटन में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

डिजिटल मार्केटिंग: यह पाठ्यक्रम डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया मार्केटिंग और ऑनलाइन मार्केटिंग में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

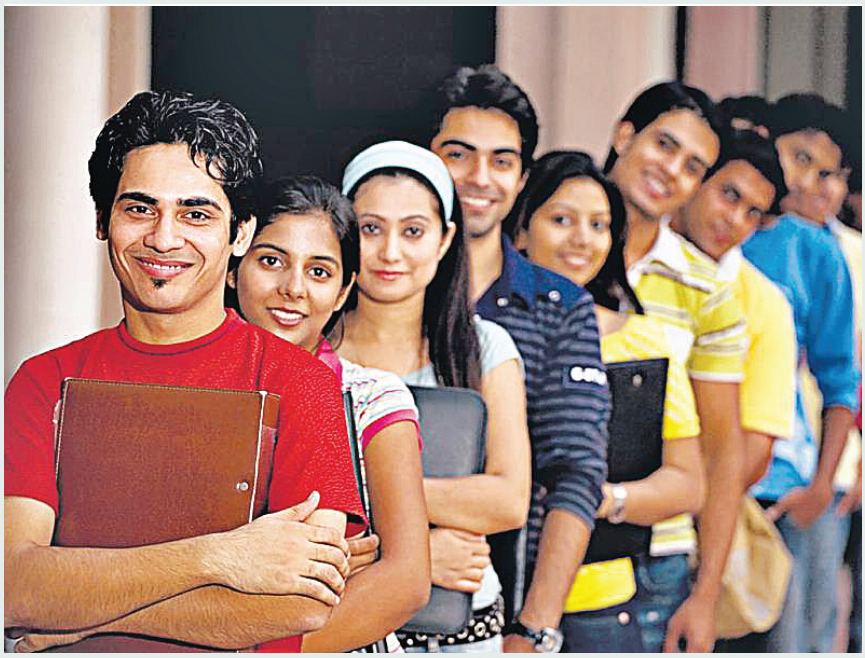

मंदिरों की ऐतिहासिक नगरी पुरी

पुरी, भारत के ओडिशा राज्य में स्थित एक प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थल है। यह स्थान खासकर अपने ऐतिहासिक मंदिरों, खूबसूरत समुद्र तटों और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। पुरी को 'जगन्नाथ की नगरी' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहां स्थित जगन्नाथ मंदिर हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। पूरी न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्ध संस्कृति का भी संगम है।

पुरी का प्रमुख आकर्षण है, जगन्नाथ मंदिर। यह मंदिर भगवान श्री कृष्ण के अवतार, जगन्नाथ जी को समर्पित है। यहाँ हर साल विशाल रथ यात्रा का आयोजन होता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। यह रथ यात्रा पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और हर साल जुलाई महीने में आयोजित होती है। जगन्नाथ मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है, और यह हिंदू धर्म के चार प्रमुख धामों (बद्रीनाथ, द्वारका, ऋषिकेश और पुरी) में से एक माना जाता है।

पूरी के खूबसूरत समुद्र तट

भारत के सबसे सुंदर समुद्र तटों में गिना जाता है। यहां का नीला पानी, सफेद रेत और ठंडी हवा पर्यटकों की अपनी ओर आकर्षित करती है। आप यावं सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत हस्य देख सकते हैं। समुद्र में तैरने के ग्राथ-साथ, पर्यटक बीच पर आकर सुखद समय बिता सकते हैं और विभिन्न जल क्रीडाओं का आनंद से सकते हैं।

सुन्दरगढ़ और चिलिका झील पूरी के पास स्थित सुन्दरगाह

और चिलिका झील पर्यटकों के लिए एक और आकर्षण का केंद्र है। चिलिका झील एशिया की सबसे बड़ी ताजे पानी की झीलों में से एक है। यहाँ विभिन्न प्रजातियों के पक्षी रहते हैं और सर्दियों में यह एक प्रमुख पक्षी अभयारण्य बन जाता है। यहां वोटिंग का अनुभव भी बहुत रोमांचक होता है, खासकर जब आप झील के चीचो बीच स्थित छोटे द्वीपों को देख सकते हैं।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर

पूरी के आसपास कई महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल हैं, जैसे कि कोणार्क सूर्य मंदिर, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। यह मौदर अपनी वास्तुकला और इतिहास के लिए प्रसिद्ध

है। पुरी में अन्य मंदिर जैसे कि लिंगराज मंदिर, सुभद्रा मंदिर और गुडिचा मंदिर भी दर्शनीय हैं। इन मंदिरों का अद्भुत स्थापत्य और धार्मिक महत्व पर्यटकों को आकर्षित करता है।

स्वादिष्ट भोजन

पुरी का भोजन भी खास है। यहां के लोकल व्यंजन, खासकर समुद्री भोजन, पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हैं। पुरी के खास पकवानों में 'चूड़ा-घांटी', 'पानी पूरी', 'पिठा' और 'भाजी' शामिल हैं। इसके अलावा, 'जगन्नाथ महाप्रसाद' (प्रसाद) भी यहां का प्रमुख आकर्षण है, जिसे श्रद्धालु बड़े श्रद्धा भाव से ग्रहण करते हैं।

शॉपिंग और हस्तशिल्प

पुरी में शॉपिंग भी एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। यहां के हस्तशिल्प, खासकर कटक की साड़ी, पीतल के वर्तन, और चांदी के आभूषण पर्यटकों द्वारा खरीदी जाती है। इसके अलावा, पुरी के बाजारों में लकड़ी के भगवान के छोटे छोटे मूर्तियां और हस्तनिर्मित शिल्प कला के अन्य सामान भी मिलते हैं।

यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय

पुरी जाने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है, जब मौसम ठंडा और आरामदायक होता है। गर्मी में यहां का तापमान काफी बढ़ सकता है। जिससे यात्रा में असुविधा हो सकती है। पूरी न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह एक पर्यटन स्थल भी है, जो अपनी प्राचीन धरोहर, सांस्कृतिक महत्व, समुद्र तट, झीलों और स्वादिष्ट भोजन के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान हर किसी के लिए कुछ न कुछ खास पेश करता है. चाहे वह धार्मिक तीर्थ यात्री हो या एक साहसी यात्री जो प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना चाहता हो। पूरी की यात्रा निश्चित रूप से हर पर्यटक के दिल में एक अमिट छाप छोड़ जाती है।

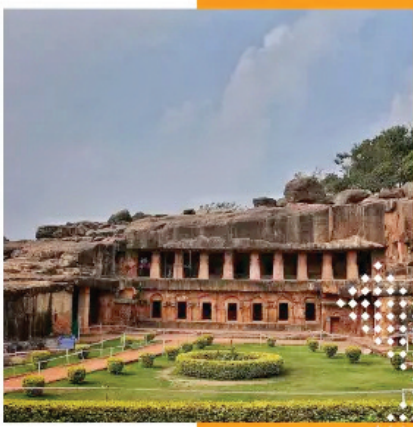

वनतारा वन्यजीव संरक्षण की एक अनूठी मिसाल

अरुण मिश्रा

वनतारा, गुजरात में स्थित एक अनोखा वन्यजीव अभयारण्य है, जिसे 'वनतारा' यानी 'वन का तारा' कहा जाता है। यह अभयारण्य न केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है, बल्कि यह वन्यजीवों के प्रति प्रेम और देखभाल का एक उत्कृष्ट उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। अनंत अंबानी के नेतृत्व में विकसित यह अभयारण्य केवल एक पशु आश्रय केंद्र नहीं है, बल्कि वैश्विक वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में एक नई क्रांति है।

3500 एकड़ में फैले इस विशाल अभयारण्य में अब तक 1.5 लाख से अधिक बेसहारा, घायल और उपेक्षित पशुओं को आश्रय और देखभाल मिली है। यहाँ वन्यजीवों की सुरक्षा और पुनर्वास के लिए अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस अभयारण्य ने पूरी दुनिया को यह सिखाया है कि बेघर, बेसहारा और विलुप्त होने की कगार पर

वनतारा: वन्यजीवों की देखभाल का आश्रय स्थल

- दुनिया की सबसे बड़ी वन्यजीव चिकित्सा सुविधा
- 22 वाइल्डलाइफ हॉस्पिटल और 17 क्लीनिक
- आपातकालीन बचाव के लिए 75 पशु एम्बुलेंस
- 103 पशु चिकित्सक ड्यूटी पर तैनात
- CT स्कैनर्स, MRI, लेजर थेरेपी और हाइड्रोथेरेपी पूल
- दुनिया में पहली बार हाथी के पैर का CT स्कैन किया गया
- 1.5 लाख से अधिक पशुओं और 2000+ प्रजातियों का घर
- 200+ बचाए गए हाथी
- 1,500+ रैप्टाइल्स और 23 प्रजातियाँ संरक्षित
- 1500+ प्रजातियों के उद्भव संरक्षित करने के लिए जीनोम प्रोजेक्ट
- 3,500 एकड़ हरा-भरा वन क्षेत्र
- 900+ वन और जलीय क्षेत्र
- 2.5 करोड़ वृक्षारोपण अभियान
- पूरी तरह से प्लास्टिक मुक्त अभयारण्य
- 3500+ पशु चिकित्सक, वन्यजीव विशेषज्ञ और रखवाले
- 400+ वैज्ञानिक शोध पत्र प्रकाशित

खड़े वन्यजीवों के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए।

वनतारा में वन्यजीवों की चिकित्सा और पुनर्वास के लिए विश्वस्तरीय सुविधाएँ मौजूद हैं। यहाँ 22 अस्पताल और 17 क्लीनिक स्थापित किए गए हैं, जहाँ 103 से अधिक अनुभवी वेटरनरी डॉक्टर कार्यरत हैं। इसके अलावा, आपातकालीन स्थिति में शीघ्र सहायता के लिए 75 एंबुलेंस तैनात हैं। यह अभयारण्य अपनी चिकित्सा सुविधाओं के लिए भी जाना जाता है, और दुनिया में पहली बार हाथी के पैर का सीटी स्कैन यहीं किया गया था, जो वन्यजीव चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

वनतारा न केवल एक आश्रय स्थल है, बल्कि यह विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों और पक्षियों का प्राकृतिक वास भी है। यहाँ बाघ, तेंदुआ, नीलगाय, चीतल, भालू, सरीसृप और दुर्लभ पक्षियों सहित कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं। घने जंगल, नदी-नाले, पहाड़ियाँ और हरियाली से भरपूर यह क्षेत्र वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित आवास प्रदान करता है। यहाँ साल, पीपल, बरगद, सागौन और बांस जैसे वृक्ष प्रमुख रूप से पाए जाते हैं, जो पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं।

वनतारा केवल वन्यजीव संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन (इको-टूरिज्म) को भी बढ़ावा देता है। यहाँ आने वाले पर्यटकों को वन्यजीवों को उनके प्राकृतिक आवास में देखने का अवसर मिलता है। रोमांच पसंद करने वालों के लिए यहाँ ट्रेकिंग ट्रेल्स मौजूद हैं, जो साहसिक यात्रियों को प्रकृति के करीब ले जाती हैं।

यह स्थान पक्षी प्रेमियों के लिए भी विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यहाँ कई दुर्लभ और प्रवासी पक्षियों को देखा जा सकता है। इसके अलावा,

प्राकृतिक परिदृश्य और वन्यजीवों की अद्भुत छवियाँ लेने के लिए यह फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए भी एक बेहतरीन जगह है।

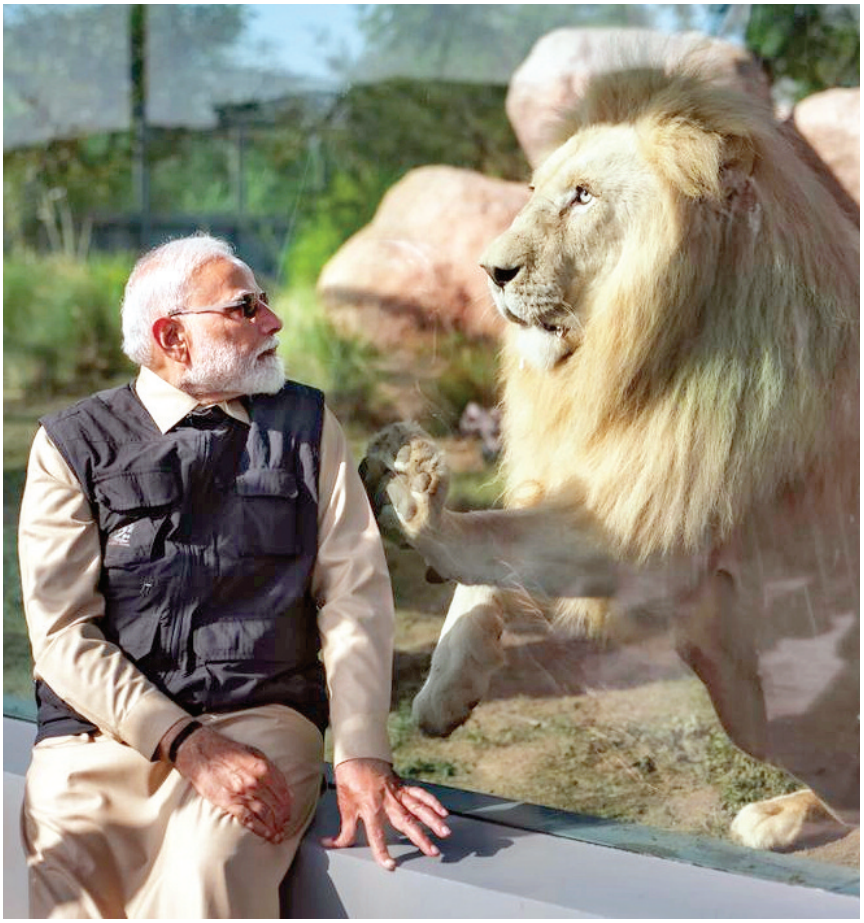

वंथारा अभयारण्य अब तक कई वन्यजीवों को बचाने और पुनर्वासित करने में सफल रहा है। इसके निरंतर प्रयासों के कारण यह वन्यजीव प्रेमियों, शोधकताओं और पर्यावरणविदों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल बन गया है।

भविष्य में, इस अभयारण्य के और विस्तार की योजना बनाई जा रही है, ताकि अधिक वन्यजीवों को संरक्षण और आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान की जा सकें।

वंथारा केवल एक वन्यजीव अभयारण्य नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक पहल है, जो यह संदेश देता है कि यह धरती केवल इंसानों की नहीं, बल्कि सभी जीवों की है। यहाँ किया जा रहा संरक्षण कार्य न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण है।

यंग लोगों को क्यों बढ़ रही है किडनी स्टोन की समस्या, डॉक्टर से जानें

आज के समय में बहुत से यंग लोगों को किडनी स्टोन की समस्या का सामना करना पड़ता है। इसके कई कारण हो सकते हैं। ऐसे में आइए लेख में जानें...

आज के समय में ज्यादातर यंगस्टर्स में किडनी स्टोन की समस्या का खतरा बढ़ रहा है। कई इसकी समस्या से परेशान रहते हैं। जिसके कारण उनको असहनीय दर्द, उल्टी आने जैसा महसूस होना, सूजन आना और कई अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह समस्या यंगस्टर्स के लाइफस्टाइल के कारण हो सकती है। ऐसे में आइए जानें यंग लोगों में किडनी स्टोन का खतरा क्यों बढ़ रहा है?

एक्सपर्ट के अनुसार, यंग लोगों के अनहेल्दी

डॉ. निमित त्यागी

लाइफस्टाइल और गलत खानपान के कारण ज्यादातर लोग किडनी स्टोन की समस्या से परेशान रहते हैं। ऐसे में किडनी स्टोन की समस्या से राहत के लिए हेल्दी लाइफस्टाइल को फॉलो करना जरूरी है। इसके लिए फलों, सब्जियों और साबुत अनाज जैसी हेल्दी डाइट लें, दिनभर में पर्याप्त पानी पिएं और फिजिकल एक्टिविटीज को बढ़ावा दें। जिससे अन्य बीमारियों से भी बचाव करने और स्वास्थ्य को भी हेल्दी रखने में मदद मिलती है।

अनहेल्दी डाइट लेना

यंग लोग ज्यादातर प्रोसेस्ड फूड का सेवन करना पसंद करते हैं। लेकिन अनहेल्दी और अधिक प्रोसेस्ड फूड का सेलन करने से लोगों को किडनी स्टोन की समस्या हो सकती है। कई बार

प्रोसेस्ड फूड में अधिक मात्रा में नमक या ऑक्सालेट होता है, जिसके कारण लोगों में किडनी स्टोन का खतरा बढ़ सकता है। वहीं, शरीर में पोषक तत्वों की कमी के कारण भी किडनी स्टोन को बढ़ावा मिल सकता है। ऐसे में प्रोसेस्ड फूड्स के अधिक सेवन से बचना चाहिए।

नमक का अधिक सेवन करने के कारण

खाने में नमक का सेवन अधिक करने या प्रोसेस्ड फूड का अधिक सेवन करने से भी लोगों को किडनी स्टोन का खतरा बढ़ता है। बता दें, प्रोसेस्ड फूड में अधिक मात्रा में नमक होता है। अधिक सोडियम युक्त फूड का सेवन करने से किडनी स्टोन को बढ़ावा मिलता है। ऐसे में ऑक्सालेट या नमक के फूड के सेवन से बचना चाहिए।

फिजिकल एक्टिविटी न करना

भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल के कारण ज्यादातर यंगस्टर्स फिजिकल एक्टिविटीज नहीं करते हैं। जिसके के कारण मेटाबॉलिज्म के कमजोर होने और कई बार किडनी स्टोन की समस्या का सामना भी करना पड़ सकता है। ऐसे में शरीर को एक्टिव रखने की कोशिश करें। इससे स्वास्थ्य की कई समस्याओं से बचाव करने में भी मदद मिल सकती है।

डॉक्टर की सलाह के बिना न खाएं सप्लीमेंट्स

कई लोग कैल्शियम, विटामिन-डी, क्रिएटिनिन और प्रोटीन जैसे सप्लीमेंट्स का सेवन डॉक्टर की सलाह के बिना ही करते हैं। इसके अधिक सेवन के कारण भी लोगों क किडनी स्टोन का खतरा बढ़ सकता है। ऐसे में हाई प्रोटीन या कैल्शियम युक्त फूड का अधिक सेवन करने से भी बचना चाहिए।

निष्कर्ष

यंग लोगों को किडनी स्टोन की समस्या प्रोसेस्ड फूड या अनहेल्दी खानपान के कारण हो सकती है। इसके अलावा, डिहाइड्रेशन, फिजिकल एक्टिविटीज की कमी, डॉक्टर की सलाह के बिना सप्लीमेंट्स का अधिक सेवन करने और नमक का अधिक सेवन करने के कारण लोगों को किडनी स्टोन की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में किडनी से जुड़ी कोई भी समस्या महसूस होने पर डॉक्टर से सलाह जरूर लें।

पथरी का सबसे बड़ा लक्षण क्या है?

किडनी में पथरी की समस्या होने पर लोगों को अचानक से तेज दर्द होने, बार-बार पेशाब आने, बुखार आने, उल्टी या मतली आने जैसा महसूस होने, ठंड लगने, यूरिन पास करते समय दर्द होने, जलन होने और यूरिन में ब्लड आने की समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

किडनी स्टोन में क्या नहीं खाना चाहिए?

किडनी स्टोन की समस्या होने पर चाय, कॉफी, चुकंदर, चॉकलेट और पालक जैसे ऑक्सालेट से युक्त फूड्स, हाई प्रोटीन, हाई सोडियम, अल्कोहल, कैफीन, पैकेज्ड फूड और कोल्ड ड्रिंक्स जैसी चीजों के सेवन से बचना चाहिए। इसके कारण स्वास्थ्य को अधिक नुकसान हो सकता है।

किडनी खराब होने के शुरूआती लक्षण क्या हैं?

किडनी के खराब होने पर लोगों को यूरिन में बदलाव आने, थकान होने, सूजन आने, यूरिन में प्रोटीन आने, भूख में बदलाव आने, पीठ में दर्द होने, स्किन में खुजली होने, उल्टी और मतली की समस्या होने, हाई ब्लड प्रेशर की समस्या होने और ड्राई स्किन होने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

शरीर में पानी की कमी होना

भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल के कारण ज्यादातर लोग दिनभर में पर्याप्त पानी नहीं पीते हैं, जिससे लोगों को शरीर में पानी की कमी होने यानी डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है। शरीर में पानी की कमी होना किडनी स्टोन के मुख्य कारणों में से एक है। बता दें, दिनभर में पर्याप्त पानी न पीने, कॉफी या सोडा युक्त ड्रिंक्स का अधिक सेवन करने के कारण मिनरल्स और नमक एक साथ चिपक कर क्रिस्टल का रूप ले लेते हैं, जिसके कारण लोगों को किडनी स्टोन की समस्या हो सकती है।

श्रेया घोषाल ने अपने मुंबई कॉन्सर्ट में सैनिकों को किया नमन

ऑपरेशन सिंदूर के समय पोस्टपोन्ड किया था प्रोग्राम

आकांशा गर्ग

श्रेया घोषाल ने अपने मुंबई के म्यूजिकल कॉन्सर्ट में सैनिकों को नमन किया है। साथ ही ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सेना की बहादुरी के लिए लोगों में देशभक्ति की लहर दौड़ा दी।

बीते दिनों भारतीय जांबाज सेना के जवानों ने पाकिस्तान में आतंकियों के ठिकानों को तबाह करने के लिए ऑपरेशन सिंदूर चलाया था। इस ऑपरेशन के तहत आतंकियों के अड्डों को तबाह करने वाली भारतीय सेना की जमकर तारीफ हुई है और वैश्विक पटल पर बहादुरी के किस्से सुनाए जा रहे हैं। ऐसे में बॉलीवुड सिंगर श्रेया घोषाल ने भी अपने म्यूजिक कॉन्सर्ट में सैनिकों को नमन किया है। श्रेया घोषाल ने अपना कॉन्सर्ट ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पड़ने की वजह से पोस्टपोन्ड कर दिया था। अपने ऑल हार्ट्स टूर के मुंबई चरण के दौरान श्रेया घोषाल ने भारतीय सशस्त्र बलों को एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी, जिसने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया। प्रतिष्ठित मां तुझे सलाम का उनका गायन राष्ट्रीय गौरव का एक शक्तिशाली क्षण बन गया, क्योंकि उन्होंने भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान का सम्मान करने के लिए बीच में ही रुककर प्रस्तुति दी।

हम आज बेफिक्र हैं तो सेना के कारण: श्रेया घोषाल

श्रेया घोषाल ने खचाखच भरी भीड़ से कहा, 'हम हर पल यहां खड़े रहते हैं, हमारे मन में कोई चिंता नहीं होती, क्योंकि सीमा पर कोई हमारी रक्षा कर रहा है। जहां भी आप किसी सेना के जवान, नौसेना या वायु सेना के अधिकारी को देखते हैं, हमें उनके पैर छूने चाहिए। यह गाना उनके पैर छूने का मेरा तरीका है- चरण स्पर्श।' श्रेया की श्रद्धांजलि भारतीय सेना द्वारा हाल ही में किए गए कई वीरतापूर्ण कार्यों के मद्देनजर आई है, जिसमें साहसिक ऑपरेशन सिंदूर और पाकिस्तान द्वारा हाल ही में किए गए हमले के प्रयास का भारत द्वारा कड़ा जवाब देना शामिल है। श्रेया ने अपनी अटूट शक्ति और देश को सुरक्षित रखने के लिए सेना को दिल से धन्यवाद दिया।

कॉन्सर्ट में दौड़ी देशभक्ति की लहर

संगीत के माध्यम से एकता की शक्ति को बढ़ावा देते हुए उन्होंने कहा, 'मैं चाहती हूँ कि हमारे सभी बैंड भी इसमें एकजुट हों। अगर सभी लोग एक साथ मिलकर इसे गाएं, तो मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही खूबसूरत एहसास होगा। मुझे लगता है कि हमें इस पल को इसी तरह याद रखना चाहिए।' कॉन्सर्ट जल्द ही देशभक्ति की लहर में बदल गया, क्योंकि दर्शक खड़े होकर मां तुझे सलाम गाने में उनके साथ शामिल हो गए, उनकी आवाजें श्रद्धांजलि में एकजुट हो गईं। जोश और गर्व के साथ श्रेया ने सभी को भारत के असली नायकों के बेजोड़ समर्पण की याद दिलाई, लोगों से सम्मान और एकजुटता की भावना को कार्यक्रम से कहीं आगे ले जाने का आग्रह किया। मुंबई की शाम सिर्फ.धुनों के बारे में नहीं थी- यह राष्ट्र को एक दिल से सलाम था।

अनुपम खेर

फिल्म इंडस्ट्री में 41 साल हुए पूरे...

बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता अनुपम खेर को इंडस्ट्री में 41 साल पूरे हो गए हैं। चार दशक से लंबे अपने करियर में अनुपम खेर ने कई सुपरहिट फिल्में और यादगार किरदार दिए हैं। 25 मई 1984 को आई महेश भट्ट की फिल्म 'सारांश' से बड़े पर्दे पर अपना डेब्यू करने वाले अनुपम खेर ने इंडस्ट्री में अपने 41 साल पूरे होने पर एक वीडिया संदेश साझा किया। वीडियो में अपने संघर्ष से लेकर अब तक की अपनी सफलता को अनुपम खेर ने बयां किया है।

1984 में 28 साल की उम्र में किया था डेब्यू

अनुपम खेर ने अपनी डेब्यू फिल्म 'सारांश' में सिर्फ 28 साल की उम्र में 65 साल के बुजुर्ग दुखी पिता की भूमिका निभाई थी। अपनी यात्रा को याद करते हुए अनुपम खेर अपने वीडियो में कहते हैं, '25 मई 2025 से 41 साल पहले यानी 25 मई 1984 को मेरी पहली फिल्म 'सारांश' रिलीज हुई थी। मुझे फिल्में बनाते हुए 41 साल हो गए हैं। मैं आपसे बात करना चाहता था, आपको अपने 41 साल के सफर के बारे में बताना चाहता था।'

अनुपम ने साझा की अपनी यात्रा

वीडियो में आगे अपने सफर के बारे में बात करते हुए अनुपम कहते हैं, 'मैं 3 जून 1981 को नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से निकलकर मुंबई आया था। उसके बाद मैं लखनऊ में पढ़ाता रहा। फिर मैंने 3 साल तक काम की तलाश की और फिर मिस्टर भट्ट ने मुझे सारांश दी। अब 41 साल हो गए- पलकें झपकते गुजर गए। सारांश के 41 साल।

यह कितना खूबसूरत सफर रहा है। कितना आभारी सफर रहा है। मेरे सफर में उतार-चढ़ाव आए हैं, लेकिन यह बहुत अच्छा रहा है। मैंने कम से कम 544 या 545 फिल्में की हैं। आज मैं सोच रहा था कि इन 41 सालों में मेरे जीवन में क्या बदलाव आया है?' इस लगभग 26 मिनट लंबे वीडियो में अनुपम खेर ने काफी कुछ अपने बारे में साझा किया है।

28 साल की उम्र में 65 साल के बुजुर्ग की निभाई भूमिका

अनुपम खेर की पहली फिल्म 'सारांश' की बात करें तो 1984 में रिलीज हुई यह फिल्म एक बुजुर्ग दंपति की इमोशनल कहानी पर आधारित थी, जो मुंबई में अपने बेटे की मौत से उबरने की कोशिश कर रहे थे। अनुपम खेर ने फिल्म में बीवी प्रधान की भूमिका निभाई है, जबकि रोहिणी हट्टंगड़ी ने उनकी पत्नी की भूमिका निभाई। अनुपम ने 28 साल की उम्र में फिल्म में 65 साल के पिता की भूमिका निभाई थी। इसके लिए उन्हें काफी तारीफें भी मिली थीं। फिल्म में सोनी राजदान, मदन जैन, नीलू फुले और सुहास भालेकर भी अहम भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म बॉलीवुड की यादगार फिल्मों में से एक है।

'तन्वी द ग्रेट' की रिलीज का इंतजार कर रहे अनुपम

अनुपम खेर के वर्कफ्रंट की बात करें तो इन दिनों वो अपनी फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' को लेकर चचाओं में हैं। अनुपम खेर ने इस फिल्म का निर्देशन भी किया है। हाल ही में फिल्म को कान फिल्म फेस्टिवल में दिखाया गया था। जहां इसे काफी सराहना मिली थी। फिल्म 18 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होनी है।

विराट और रोहित के संन्यास से क्रिकेट का एक युग समाप्त

विराट कोहली से सचिन तेंदुलकर के सौ शतकों के रिकॉर्ड को तोड़ने की उम्मीद की जा रही थी। पर, अब ऐसा नहीं होगा। अपने 14 साल के कॅरियर में कोहली ने 123 टेस्ट खेले और कुल 9,230 रन बनाए। उनके नाम 30 शतक और 31 अर्ध शतक है।

देश के दो प्रमुख क्रिकेटरों ने टेस्ट मैचों से संन्यास का ऐलान कर दिया है। इससे भारतीय क्रिकेट के एक युग का समापन हो गया है। कप्तान रोहित शर्मा के बाद 12 मई को पूर्व कप्तान विराट कोहली ने भी टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया। भारत की ओर से अब ये दोनों केवल वनडे मैच खेलेंगे। अगले महीने भारतीय टीम को इंग्लैंड दौरे पर जाना है। वहां 20 जून से पांच टेस्ट मैचों की सीरीज आरंभ होगी। इस लिहाज से इसे एक झटका कहा जा सकता है। दो अनुभवी खिलाड़ियों की गैर हाजिरी से टीम

समीर मलिक

के जीतने की संभावना क्षीण हो जाएगी। इंग्लैंड की धरती पर उन्हें हराना कठिन चुनौती है। विराट उम्र में रोहित से दो साल छोटे हैं इसलिए उनसे अभी ऐसी उम्मीद नहीं थी। बीसीसीआई ने उनसे अपना फैसला बदलने के लिए भी कहा लेकिन विराट नहीं माने। वह इंग्लैंड दौरे के बाद यह निर्णय करते तो ज्यादा उचित होता। पर, रिटायरमेंट किसी भी खिलाड़ी का निजी फैसला होता है। इन दोनों ने जून 2024 में टी-20 विश्व कप जीतने के बाद एक साथ ही टी-20 फार्मेट से संन्यास लेने की घोषणा की थी। अब टेस्ट मैच को इन्होंने लगभग एकसाथ ही अलविदा कह दिया है।

विराट कोहली से सचिन तेंदुलकर के सौ शतकों के रिकॉर्ड को तोड़ने की उम्मीद की जा रही थी। पर, अब ऐसा नहीं होगा। अपने 14 साल के करियर में कोहली ने 123 टेस्ट खेले और कुल 9,230 रन बनाए। उनके नाम 30 शतक और 31

अर्ध शतक है। टेस्ट में 7 दोहरा शतक जड़ने वाले वे इकलौते भारतीय और दुनिया के एकमात्र कप्तान हैं। 254 नाबाद उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर है। उन्होंने 68 टेस्ट मैचों में भारत की कप्तानी की जिसमें से 40 में जीत हासिल की। पिछले साल जब न्यूजीलैंड से भारत 3-0 से टेस्ट सीरीज हारा तब विराट कोहली और कप्तान रोहित की खूब आलोचना हुई थी।

ऑस्ट्रेलिया दौरे के पहले टेस्ट मैच में विराट ने पर्थ में शतक लगाकर अच्छा संकेत दिया था लेकिन बाद के मैचों में उनकी फार्म फिर गड़बड़ रही। भारत यह सीरीज हार कर स्वदेश लौटा। वनडे में उनके 50 से अधिक शतक हैं। एक शतक टी-20 में है। सौ का आंकड़ा बहुत दूर नहीं था। मैदान पर विराट की आक्रामक मुद्रा टीम में जोश भरने के लिए काफी है। टेस्ट मैचों में पिछले कुछ वर्षों से विराट और रोहित दोनों का प्रदर्शन उतार पर था। विराट ने टेस्ट क्रिकेट में दस हजार रन पूरे करने से पहले ही संन्यास ले लिया।

रोहित का निर्णय अप्रत्याशित नहीं

कप्तान रोहित शर्मा का टेस्ट क्रिकेट से संन्यास का निर्णय अप्रत्याशित नहीं कहा जा सकता लेकिन विराट ने सबको चौंका दिया है। वह मौजूदा आईपीएल में भी उम्दा खेल दिखा रहे हैं। दो माह पहले दुबई में चैम्पियंस ट्राफी में उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध शतक भी लगाया था। उम्मीद थी कि वह अभी दो-तीन साल और खेलेंगे। अब हम इन दोनों को वनडे में ही खेलते देख सकेंगे।

इस खेल के लंबे प्रारूप में रोहित प्रदर्शन उतार-चढ़ाव वाला रहा है। 38 साल के रोहित पर उम्र का असर दिख रहा है। वर्ष 2024 में उनका प्रदर्शन बहुत निराशाजनक रहा। उनकी कप्तानी में भारत ने अपने घर में ही न्यूजीलैंड से तीन टेस्ट मैचों की सीरीज गंवाई। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया में पांच मैचों की बार्डर-गावस्कर टेस्ट सीरीज में भी भारत को पराजय स्वीकार करनी पड़ी। हालत यह थी कि अंतिम टेस्ट मैच में कप्तान रोहित को खुद बाहर बैठना पड़ा। उनकी जगह जसप्रीत बुमराह ने कप्तानी की। कोच गौतम गंभीर से विवाद की खबरें भी सामने आईं। रोहित के नेतृत्व पर सवाल उठने लगे। उनसे संन्यास लेने की मांग की जाने लगी। खैर, अब जब रोहित ने टेस्ट मैच से हटने का फैसला किया है तो बीसीसीआई को नए कप्तान की तलाश करनी होगी। जून में भारतीय टीम को पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलने इंग्लैंड का दौरा करना है। इसी के साथ विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के अगले सत्र की शुरूआत हो जाएगी।

रोहित शर्मा टी-20 से पहले ही संन्यास ले चुके हैं। अब वह केवल वनडे मैच खेलते नजर आएंगे। जून 2024 में टी-20 विश्व कप जीतने के बाद उन्होंने इस प्रारूप से संन्यास लेने का ऐलान किया था। उनके साथ विराट कोहली और रवींद्र जडेजा ने भी देश की ओर से टी-20 नहीं खेलने का निर्णय किया था। रोहित ने 2007 के टी-20 विश्व कप से अपना अंतरराष्ट्रीय करियर आरंभ किया था। मगर, टेस्ट मैचों में उन्हें जगह देर से मिली। 2013 में जब वेस्ट इंडीज की टीम भारत आई तब रोहित को टेस्ट टीम में शामिल किया गया। पहले वह मध्य क्रम में खेलते थे। बाद में सलामी बल्लेबाज की भूमिका में आ गए। रोहित ने कुल 67 टेस्ट खेले जिसमें 12 शतक और 18 अर्ध शतक के साथ 4301 रन बनाए। पांच दिन के मैचों में 212 उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। यह आश्चर्य की बात है कि रोहित जैसा बड़ा खिलाड़ी सौ टेस्ट भी नहीं खेल पाया। ये आंकड़े उनके कद के अनुरूप नहीं हैं।

विराट कोहली ने जब 2021 में कप्तानी छोड़ी तो रोहित शर्मा को यह जिम्मेदारी दी गई। वह सभी फार्मेट में कप्तान बने। बतौर कप्तान रोहित ने 24 टेस्ट मैच खेले जिसमें 12 जीते और 9 में पराजय मिली। इस दौरान उनका औसत 30.58 का रहा।

हिटमैन के रूप में हुए चर्चित

रोहित शर्मा पर सीमित ओवरों के मैच के बढ़िया खिलाड़ी का ठप्पा लग चुका था। उन्होंने वनडे मैचों में दनादन पारियां खेलीं। 50 ओवर के मैच में दो दोहरे शतक बनाकर सुर्खियां बटोरी। वर्ष 2019 के वनडे विश्व कप में वह जबर्दस्त फार्म में थे। चार शतक उनके बल्ले से निकले। उनके शानदार प्रदर्शन के दम पर भारतीय टीम अंक तालिका में टॉप पर थी। दुर्भाग्य से सेमी फाइनल में न्यूजीलैंड से हार कर भारत खिताबी दौड़ से बाहर हो गया। टी-20 और वनडे में रोहित की धुंआधार बल्लेबाजी से उनका नाम 'हिटमैन' पड़ गया। उन्होंने 273 वनडे मैचों में 11,186 रन बनाए। इसमें 264 उनका सर्वोच्च स्कोर है। 2023 के वनडे विश्व कप में रोहित कप्तान थे। हमारी टीम ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन फाइनल में कंगारू टीम से हार गए। अब लगता है कि वह अगला वनडे विश्व कप 2027 खेल कर इस फार्मेट से भी संन्यास ले लेंगे। तब तक वह 40 साल के हो जाएंगे।

HET

Once You
Buy The

Solar

The Power is Free

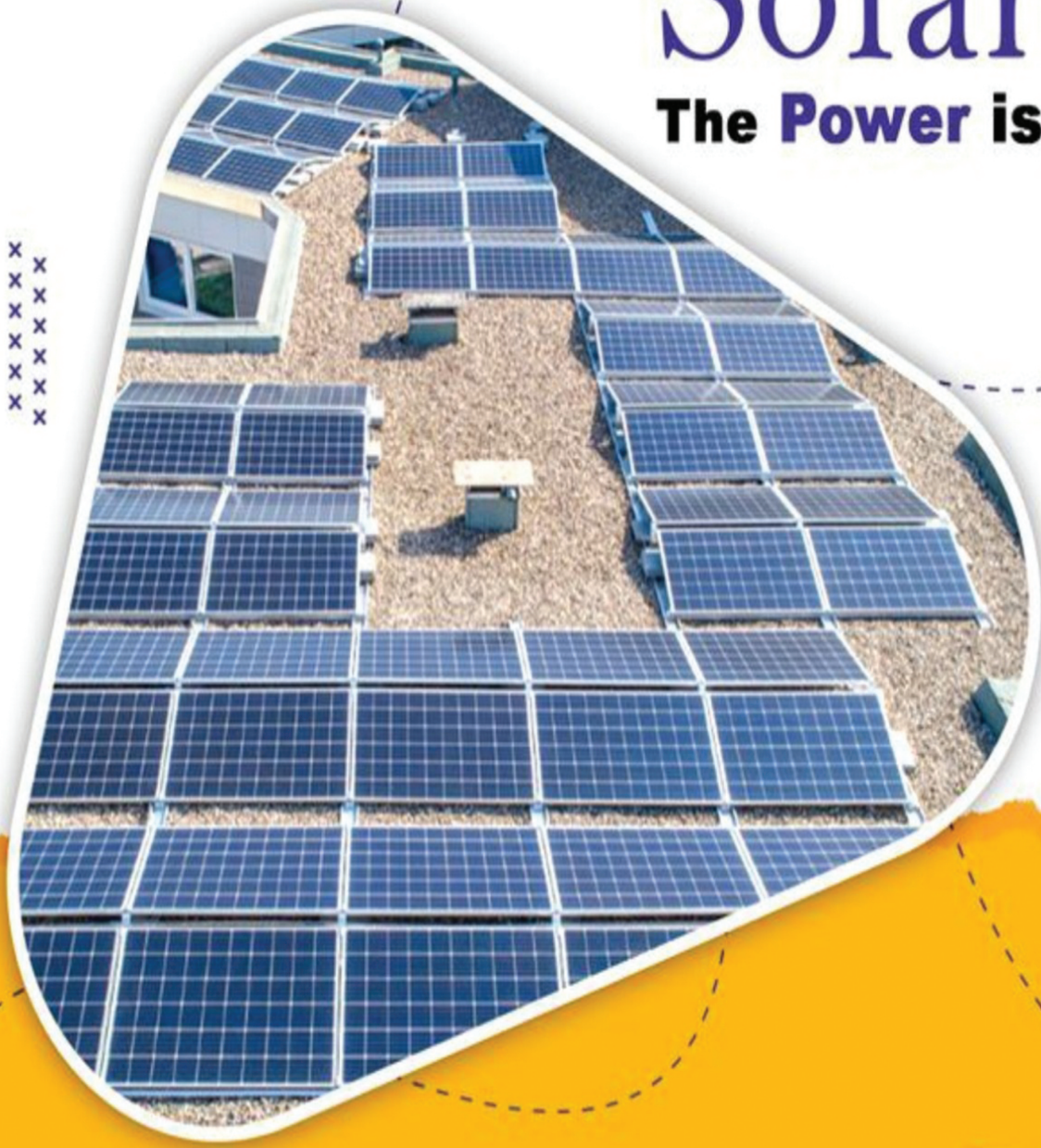

Harshita Electro & Telecom Pvt. Ltd.

SOLAR ON-GRID ROOFTOP SOLUTIONS | OFF GRID SOLAR SYSTEM
HYBRID SOLAR SYSTEM

Office : GF-135, Durga Tower, RDC, Raj Nagar, Ghaziabad.
Phone : 9891116568, 9891116569, 9899562233

SHANTI NATH MANUFACTURERS
A-2/14, Sector-17, Kavi Nagar, Industrial Area, Ghaziabad-201002 (U.P.)
Website: www.shantinathsupreme.com; E-mail: snmsupreme@gmail.com
Toll Free No.: 18001035266; Mob.: 8860638266

मुफ्त इलाज-मुफ्त दवाएं
बेहतर हुई स्वास्थ्य सुविधाएं

आयुष्मान भारत योजना के 9 करोड़ लाभार्थियों को प्रति परिवार ₹5 लाख का चिकित्सा बीमा, देश में सर्वाधिक 5.21 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड वितरित

- हर गरीब परिवार को ₹5 लाख तक निःशुल्क चिकित्सा सुरक्षा कवच
- 49 लाख परिवार मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना से आच्छादित
- 80 मेडिकल कॉलेज का निर्माण, 44 सरकारी, 36 निजी क्षेत्र में
- मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से 2,37,125 जरूरतमंदों को ₹3,280.95 करोड़ की धनराशि इलाज के लिए दी गई
- अंत्योदय कार्ड धारक 40.79 लाख परिवार मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत सम्मिलित
- आयुष्मान भारत योजना में प्रदेश में 5,834 अस्पताल (2,949 सरकारी, 2,885 निजी) सूचीबद्ध। अब तक 53.93 लाख लोग लाभान्वित
- प्रदेश के सभी पीएचसी में हेल्थ एटीएम की स्थापना
- एडवांस लाइफ सपोर्ट सेवा की 250, नेशनल एम्बुलेंस सेवा की 2,270 एवं 108 सेवा के तहत 2,200 एम्बुलेंस संचालित
- मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेलों में अब तक 13.50 करोड़ मरीजों का उपचार
- राज्य कर्मचारियों एवं पेंशनर्स हेतु पंडित दीनदयाल उपाध्याय कैशलेस चिकित्सा योजना प्रारम्भ
- प्रदेश के दूरदराज के मरीजों को विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा टेली कल्सल्टेशन की व्यवस्था। 3.64 करोड़ लोग लाभान्वित
- 75 जनपदों में डायलिसिस की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध। 30 हजार से अधिक लोग लाभान्वित
- 22,681 आयुष्मान भारत हेल्थ एवं वेलनेस सेण्टर क्रियाशील

काम असरदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP